December 2019

@NewsRotary /RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

Rotary

Vol.19, Issue 2 | Annual Subscription ₹420

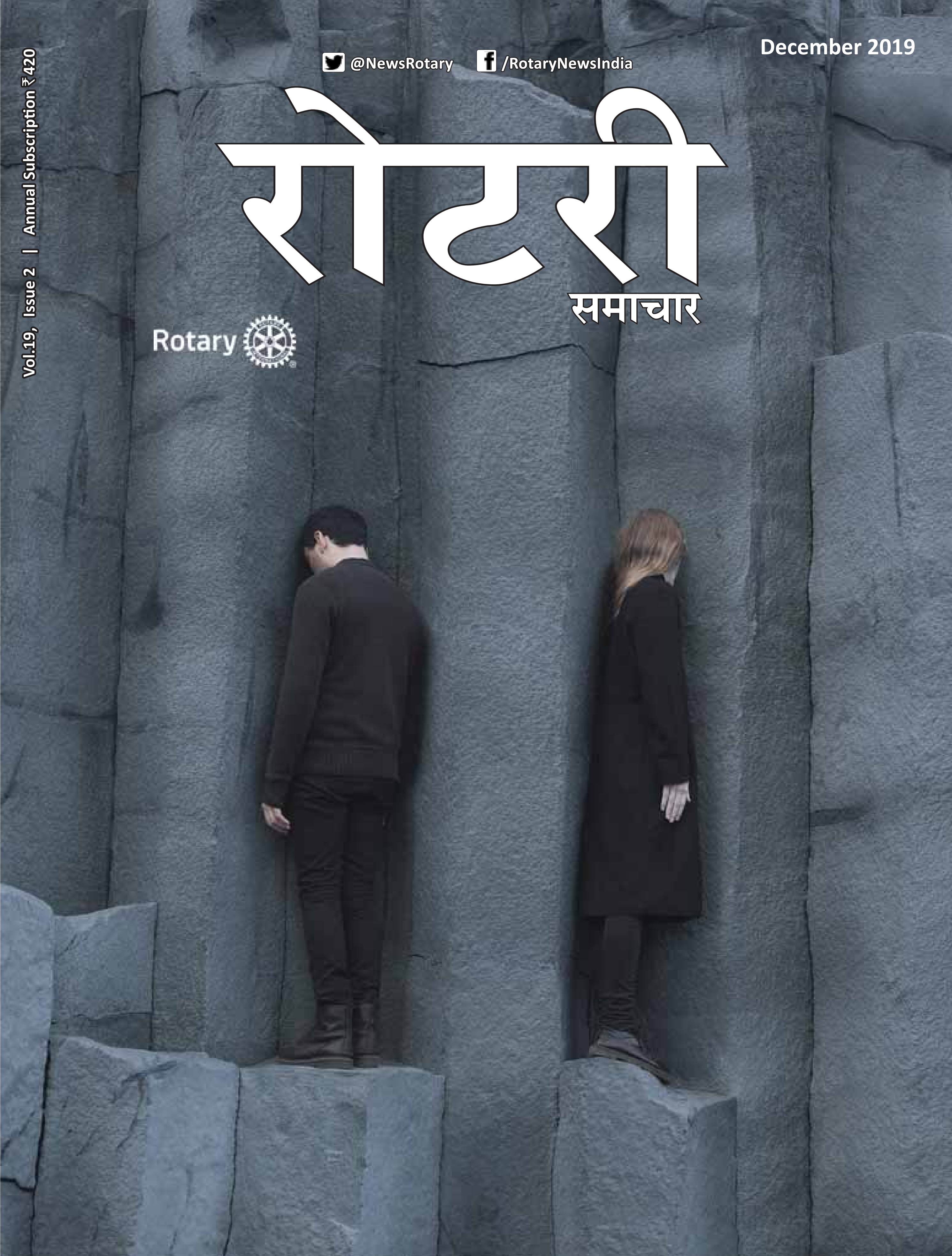

RIPN शेखर मेहता और राशी त्रावणकोर पैलेस में

RIPN शेखर मेहता और राशी, त्रावणकोर शाही परिवार की गौरी असवती और गौरी पूयम के साथ। चित्र में PDG जॉन डैनियल (दाएं से दूसरे), उनकी पत्नी मीरा (बाएं से दूसरी) और रोटेरियन विजयलक्ष्मी नायर भी शामिल हैं।

बाएं से: *गौरी पूयम, राशी, RIPN शेखर मेहता और गौरी असवती।*

चित्र: रशीद भगत

विषयसूची

12 आत्महत्या मदद के लिए एक पुकार है
समय आ गया है कि हम युद्ध स्तर पर इस साइलेंट किलर को संबोधित करें।

22 रोटरी में समूह गतिशीलता सबसे अच्छी तरह कार्य करती है: शेखर मेहता
RIPN शेखर मेहता के लिए एक बहू-मंडलीय अभिनंदन।

28 पोलियो के अंतिम मील के लिए विश्व नेताओं ने 2.6 बिलियन डॉलर का वचन दिया
आबु धाबी में, विश्व नेतृत्वकर्ता पोलियो उन्मूलन की उनकी प्रतिज्ञा को नवीनीकृत करते है।

32 ब्रिटेन के लिये कंटेनर में प्रवासीयों की तस्करी: फ्लैशबैक 25 वर्ष पूर्व
दो पत्रकारों ने अवैध प्रवासियों और उनके दलालों का साक्षात्कार लेने के लिए शरण तलाशने वालों का रूप धारण किया।

50 कोलकाता में कल्याणकारी कार्यों को करते हुए 100 वर्ष
क्लब का शताब्दी वर्ष मनाने के दौरान रोटरी क्लब कलकत्ता के सदस्य यादों के गलियारे में चले गए।

60 मासिक धर्म पर परिचर्चा की शुरूआत
एक बहु-मंडलीय संगोष्ठी बेहतर मासिक धर्म स्वास्थ्य प्रबंधन पर लड़कियों को शिक्षित करती है।

64 एक रोटरेक्ट क्लब 19वें वर्ष विशेष बच्चों के लिए एक वार्षिक कार्यक्रम को जारी रखता है
नि:शक्त बच्चों को उनकी प्रतिभा का प्रदर्शन करने के लिए रोटरेक्टर लगातार उन्हें एक मंच प्रदान करते है।

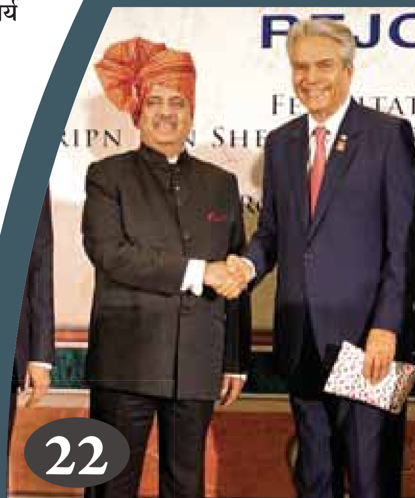

कवर पर: प्यार और दिलासे की खोज।

चित्र: गेब्रियल आइज़ेक

उत्कृष्ट कवर स्टोरी, बढ़िया लेख

RIPN शेखर मेहता पर कवर स्टोरी को पढ़कर बहुत अच्छा लगा। साथ ही, कवर तस्वीर एवं अन्य पृष्ठ भी प्रभावी है। आपकी सम्पादकीय सही ढंग से हमारे समाज में अपंग व्यक्तियों द्वारा सामना की जाने वाली परेशानियों पर रोशनी डालती है।

कुल मिलाकर, नवम्बर अंक में पढ़ने के लिए उत्कृष्ट सामग्री थी। आपके सम्पादन के तहत उत्कृष्ट टीम वर्क द्वारा *रोटरी न्यूज़* का स्तर बढ़ाने के लिए बधाईयाँ।

आर. के. बुबना

रोटरी क्लब बेलूर - रो ई मंडल 3291

मुझे यह जानकर ख़ुशी हुई कि *रोटरी न्यूज़* ने हाल ही के वर्षों में पढ़ने हेतु रोचक सामग्री, एक बेहतर लेआउट और डिज़ाइन के माध्यम से बेहतर रूपांतरण किया है। नवम्बर अंक में ऐसे लेख है जो रोटरी के ध्यानाकर्षण क्षेत्र और महान सेवा परियोजनाओं द्वारा समुदाय तक पहुँचने के इसके उद्देश्य पर प्रकाश डालते है। यह धारणा विचारणीय है कि जब चयन समिति रोई के नए अध्यक्ष का चुनाव करने हेतु मिलती है, तो वर्तमान रो ई अध्यक्ष को इवेंसटन स्थित रो ई मुख्यालय में नहीं होना चाहिए। RIPN शेखर मेहता का विस्तृत साक्षात्कार, रोटरी के लिए उनके विचार और योजनाएं, बस रोटरी के एक महान नेता के रूप में उनके गुणों का बखान करते है। न्यासी प्रमुख गैरी हांग का सन्देश, लेख चिकित्सा देखभाल के बदलते परिप्रेक्ष्य और अन्य लेख पढ़ने और आनंद लेने के लिए दिलचस्प है। कुल मिलाकर, यह अंक सूचनाप्रद लेखों का एक संकलन है। संपादक और उनके दल को धन्यवाद।

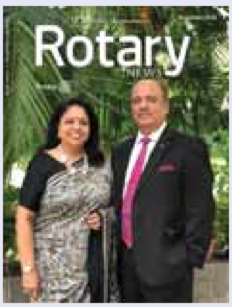

आर तायुमानवन

रोटरी क्लब कडुलोर मिडटाउन - रो ई मंडल 2981

देश के विभिन्न हिस्सों में क्लबों द्वारा की जा रही कुछ अभिनव परियोजनाओं को प्रकाशित करने के लिए रोटरी न्यूज़ को सलाम। ऐसे कवरेज रोटेरियनों के लिए आँखें खोल देने वाले होते है। उदाहरण के लिए, लेख डिनर इन द डार्क रोटरी क्लब चंडीगढ़ शिवालिक, रोई मंडल 3080, की परियोजना के बारे में बताता है, जिसका उद्देश्य रोटेरियनों और बड़े समुदायों को दृष्टिबाधित लोगों की जरूरतों और उनके द्वारा सामना की जाने वाली कठिनाइयों के बारे में संवेदनशील बनाने का है। इस क्लब को सलाम। हमने हाल ही में एक स्थानीय कॉलेज में इसी तरह का एक कार्यक्रम आयोजित किया था। यह पियानोवादक अनिल श्रीनिवासन और उनके ऑर्केस्ट्रा द्वारा प्रस्तुत किया गया एक अलग प्रकार का संगीत-समारोह था; दर्शकों को दृष्टिबाधित लोगों की दुनिया को महसूस करवाने के लिए एक घंटे तक पूरी तरह अंधियारे एक खचाकच भरे सभागार में बैठाया गया। लेकिन इसके साथ ही, उन्होंने शास्त्रीय गीतों के मधुर स्वर का भी अनुभव किया। इस परियोजना ने 60 दृष्टिबाधित लड़कियों को आश्रय देने हेतु चेन्नई में एक घर स्थापित करने के लिए धन एकत्रित किया। यह एक यादगार अवसर था जिसने हमें अंधेरों में रहने वालों की ज़िन्दियों के बारे में सोचने पर मजबूर कर दिया।

आर श्रीनिवासन

रोटरी क्लब मदुरई मिडटाउन - रो ई मंडल 3000

आइए TRF को उदारतापूर्वक दें

नवम्बर अंक में सम्पादक का सन्देश *उनकी अक्षमता अशक्तता से अविचलित* एकदम उचित है, यदि जीवन में बड़ी चीज़ों को हासिल करने के लिए दिल में आग है तो ऐसे व्यक्तियों की शारीरिक अक्षमताओं के बावजूद भी उनके रास्ते में कुछ नहीं आ सकता।

रो ई निदेशक डॉ भारत पंड्या और कमल संघवी ने टीआरएफ योगदानों पर ज़ोर दिया जिससे क्लबों को सेवा परियोजनाओं को करने में बहुत मदद मिलेगी। टीआरएफ एकमात्र तरीका है जिसके माध्यम से हमारे योगदान दुनिया भर में गरीबों एवं बीमारों तक पहुँचते है।

हमें अपनी क्षमता के अनुसार टीआरएफ में सर्वश्रेष्ठ योगदान देना चाहिए क्योंकि यह बड़े पैमाने पर भूख से लड़ने, स्वास्थ्य सेवा, साक्षरता प्रदान करने, और पोलियो एवं गरीबी को उन्मूलित करने में मदद करेगा।

राज कुमार कपूर

रोटरी क्लब रूपनगर - रो ई मंडल 3080

मॉडल परियोजना

CSR गतिविधि के लिए रोटरी एक अच्छा मंच है। यह मॉडल परियोजना कॉर्पोरेटों से प्राप्त CSR राशी का सर्वोत्तम तरीके से उपयोग करना दिखाती है। क्लब के नेतृत्वकर्ता और बी एल एग्रो ऑयल्स के प्रबंध निदेशक को समाज के लिए एक जरूरत-आधारित परियोजना को निष्पादित करने के लिए बधाइयाँ।

चिन्मय महापात्र

रोटरी क्लब भुवनेश्वर हेरिटेज - रो ई मंडल 3262

उत्कृष्ट संपादकीय

रोई अध्यक्ष मार्क मलोनी ने हमसे विश्व पोलियो दिवस को चिन्हित करने हेतु धन जुटाने के लिए कहा है। शिक्षा की महत्ता पर हमारे विचार संपादक रशीदा भगत के समान है। उन्होंने उचित रूप से कहा कि ऐसे लाखों बच्चे है जिनके लिए बुनियादी शिक्षा केवल एक स्वप्न है जो उनकी पहुँच से बाहर है।

केवल 74 प्रतिशत की हमारी साक्षरता दर के साथ, यह मुद्दा तर्कनीय है कि क्या हम हमारे बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर रहे है। एक 85-वर्षीय-बूढ़े नागरिक के रूप में, मैंने एक रोटेरियन की तरह मेरे जीवन के 20 वर्ष बिताए है और मुझे लगता है कि अक्टूबर अंक का संपादकीय

RIPN शेखर मेहता और राशी मेहता की एक आकर्षक कवर फोटो वाले नवम्बर अंक को पढ़कर हम खुश है। हम हमारे नेता मेहता की कवर स्टोरी से प्रेरित हुये है क्योंकि यह रोटरी में अब तक की उनकी यात्रा और भविष्य की उनकी योजनाओं के बारे में विवरण देती है।

स्वाति सिंह और रणजीत सिंह ठाकुर
रोटरी क्लब जेम्स निज़ामाबाद
रो ई मंडल 3150

PRID शेखर मेहता को 2021-22 के लिए रो ई अध्यक्ष चुने जाने पर हार्दिक बधाई। उत्कृष्ट कवर फोटो, *Undaunted by their disability* नामक अच्छी तरह से लिखे संपादकीय और ट्रस्टी चेयर इन्स्पेक्ट सर्विस प्रोजेक्ट्स इन रो ई मंडल 3201 *Trustee Chair inspects service projects in RID 3201* के उनके लेख के लिए राशिदा भगत को मेरी विशेष प्रशंसा। आप आगे भी ऐसा करती रहें।

डैनियल चिट्टिलाप्पिली
रोटरी क्लब कल्लोर
रो ई मंडल 3201

मैं दो असाधारण लोगों से मिला हूँ जो अच्छे नेता है और बड़े सपने देखते है। पहले है, हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, और दूसरे है RIPN शेखर मेहता।

नवंबर अंक वाकई में संग्रह करने लायक है। RIPN के विचारों, काम, कैरियर, चुनौतियों, विश्वास एवं उद्देश्यों पर ध्यान केन्द्रित करते हुये उनका कवरेज अद्भुत है। मेहता ने उचित कहा है कि भारत रोटरी के ताज में कोहिनूर है और रो ई के लिए नोबल शांति पुरस्कार हासिल करने का उनका सपना वाकई में प्रशंसनीय है।

कुछ हफ्तों पहले, मैं उनसे भोवानीपुर जैन मंदिर में मिला। आरती के बाद, उन्होनें व्यक्ति के धर्म या क्षेत्र पर ध्यान ना देने की रोटरी की विचारधारा का पालन करते हुये स्थानीय व्यक्तियों की जात या धर्म का खयाल किए बिना उनसे बात की। यदि आप एक रोटेरियन है, तो आपका स्वागत है ही हमारा सिद्धान्त है जिसपर रशीदा भगत ने उनके लेख पर प्रकाश डाला है।

पीयूष दोषी
रोटरी क्लब बेलूर - रो ई मंडल 3291

आपके सम्पादकीय में शिक्षा पर आपके विचारों से मैं प्रभावित हूँ और किस तरह एक आम आदमी ज्ञान का भूखा होता है जो केवल शिक्षा से ही आ सकता है। हमारे पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने शिक्षा पर बहुत ज़ोर दिया और इसलिए ही उन्होंने पूरे भारत में ऐसे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा संस्थानों को स्थापित किया। आज शिक्षा एक व्यापार है और लोग तब तक चिंतित नहीं होते जब तक यह उन्हें परेशान नहीं करता।

भाग्य से, दिल्ली में, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल के नेतृत्व में सभी के लिए शिक्षा पर उचित रूप से ज़ोर दिया गया है। मैं आपको उनका और उनके सहायक मनीष सिसोदिया का अबतक की उनकी उपलब्धियों पर एक पूर्ण साक्षात्कार लेने और उसे *रोटरी न्यूज़* में प्रकाशित करने का सुझाव देता हूँ।

रोबर्ट फ्रैंकलिन रिगो
रोटरी क्लब बाजपे
रो ई मंडल 3181

संपादक द्वारा लिखा गया अब तक का सर्वोत्तम सम्पादकीय था।

बच्चों का बहरापन दूर करने के लिए *रोटरी क्लब मैसूर वेस्ट का अग्रणी प्रयास* पर कवर स्टोरी पिछले 30 वर्षों में इन विशेष बच्चों तक पहुँचने में क्लब द्वारा किये गए प्रयासों का विस्तृत विवरण देती है।

एस मुनियांदी
रोटरी क्लब डिंडीगुल फोर्ट - रो ई मंडल 3000

भारत को साक्षर बनाना

लेख आइए भारत को 2025 तक साक्षर बनाएं रोचक है। यह वाकई में राष्ट्र को रोटरी का एक तोहफा होगा यदि हम इस विशाल मिशन को पूरा कर सकें। क्योंकि, साक्षरता समाज में विभिन्न लक्ष्यों को प्राप्त करने का एक साधन है। मैं RIPN शेखर मेहता को उनके अथक प्रयासों के लिए बधाई देता हूँ।

डॉ प्रसनजीत घोष
रोटरी क्लब ग्रीन लैंड सिलचर - रोई मंडल 3240

मैं सम्पादकीय के इस विचार से पूरी तरह सहमत हूँ कि केवल शिक्षा ही विभिन्न क्षेत्रों में बदलाव ला सकती है और भारत को विश्व का सबसे शक्तिशाली राष्ट्र बना सकती है। इस संदर्भ में, केवल रोटरी ही भारत के गरीब लोगों की आकांक्षाओं को पूरा कर सकती है क्योंकि रोटरी नेता 2025 तक पूर्ण साक्षरता का सपना देखते है।

अरुण कुमार दास
रोटरी क्लब बारीपदा - रो ई मंडल 3262

सुधार

लेख *मेहता का सपना रोटरी को मिले नोबेल पुरस्कार* (नवम्बर 2019) में गलती से यह बताया गया कि पीडीजी विनय कुलकर्णी ने पोलियो कोष में ₹50,000 का योगदान दिया था। यह RILM के लिए ₹500,000 थे। इस गलती के लिए खेद है।

अपने विचार संपादक को भेजें:
rotarynews@rosaonline.org;
rushbhagat@gmail.com
पर ई-मेल करें।

Click on
Rotary News Plus in our website
www.rotarynewsonline.org
to read about more
Rotary projects.

अलोहा, रोटरी!

ROTARY CONNECTS THE WORLD

प्रिय साथी रोटेरियनों और रोटरी परिवार के सदस्यों,

रोटरी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में शामिल होने जैसा कोई अनुभव नहीं है। होनोलूलू में 6 से 10 जून तक अपने परिवार, मित्रों, और साथी रोटेरियनों के साथ *अलोहा* एवं रोटरी की सच्ची भावना का अनुभव कीजिए। यह पूरे रोटरी परिवार के लिए उत्सव मनाने, एक साथ काम करने और मिलने का एक उपयुक्त स्थान है। दो प्रकार के लोग होते है जिन्हें हवाई जाना पसंद होता है - पहले वे जो वहाँ कभी नहीं गए और जिन्हें अनोखे एवं अद्भुत अनुभव मिलने वाले होते है, और दूसरे वे जिनकी यादों में पहले से ही हवाई की झलकियाँ बसी हुई है और जो कुछ नई यादें बनाने के लिए और प्रतीक्षा नहीं कर सकते है।

अपने *अलोहा,* जो आपको जल्द ही पता चलेगा कि एक अभिवादन से अधिक बढ़कर है, को खोजने और उसे साझा करने के लिए सम्मेलन सबसे अच्छी जगह है। जिस प्रकार रोटेरियनों के लिए रोटरी जीने का एक तरीका है, उसी प्रकार हवाई वासियों के लिए *अलोहा* जीने का एक तरीका है - जिसके अंतर्गत हवाई वासी सद्भाव में रहने, धैर्य रखने, सबका आदर करने, और आपके परिवार या *ओहाना* के साथ खुशी बांटनें पर ध्यान केन्द्रित करते है।

हमारी मेजबान समिति ने आपके और आपके परिवार के लिए कुछ शानदार कार्यक्रमों का आयोजन किया है। इसमें हवाई कल्चर एंड लंच बोट क्रूज शामिल है, जो दो घंटे की एक सैर है जिसमें आप डायमंड हैड, वाइकीकी, और काहाला गोल्ड कोस्ट के शानदार नज़ारों को देख सकेंगे। क्रूज पर, आप उकुलेले खेलना सीख सकते है, हूला नृत्य कर सकते है, और स्वयं हवाई फूलों का हार बना सकते है।

छोटे आँगन वाले पिकनिक से लेकर बहुरंगी पारिवारिक भोजनों तक, आपके पास द्वीप आतिथ्य कार्यक्रमों की एक पूरी श्रंखला का आनंद उठाने का अवसर होगा। देखने के लिए वहाँ शानदार सेवा परियोजनाएं होंगी, जिनमें दो प्राचीन हवाई मछली पालने के तालाब शामिल है। और आला मोआना बीच पार्क में सूर्योदय के साथ वॉक फॉर पीस होगी, एक 3-मील की सैर जो प्रतिष्ठित डायमंड हैड क्रेटर के पास होगी।

सम्मेलन कक्षों के भीतर और बाहर, हम रोटरी इतिहास का सबसे परिवार-अनुकूल सम्मेलन आयोजित करने जा रहे है, जिसमें एक परिवार केन्द्रित उद्घाटन समारोह और हाउस ऑफ फ्रेंडशिप में परिवार-केन्द्रित कार्यक्रम शामिल है। बेशक, उद्घाटन सत्र में हमारा पारंपरिक ध्वजारोहण शामिल होगा।

2020 का हमारा सम्मेलन संयुक्त राष्ट्र के साथ रोटरी के ऐतिहासिक सम्बन्धों का जश्न मनाने का भी समय होगा। जैसा कि मैंने नवम्बर के मेरे संदेश में कहा था, जून 2020 संयुक्त राष्ट्र के संविधान की 75वीं वर्षगांठ का प्रतीक होगा। सम्मेलन के शुरू होने से एक दिन पूर्व, रोटरी और संयुक्त राष्ट्र 2019-20 के हमारे पाँचवें संयुक्त कार्यक्रम की मेजबानी करेंगे, जो पर्यावरणीय संवहनीयता पर केन्द्रित होगा।

इसके साथ ही, हम रोटरी इतिहास का सबसे हरित सम्मेलन आयोजित करने की योजना बना रहे है - और आगामी महीनों में मैं इसके बारे में अधिक जानकारी साझा करूंगा। लेकिन अभी, *riconvention.org* पर जाकर होनोलूलू हवाई 2020 के लोगो के ठीक नीचे मौजूद *REGISTER* बटन पर क्लिक कीजिये। प्रारम्भिक पंजीकरण की रियायती दरें 15 दिसंबर को खत्म हो जाएंगी, इसलिए देर ना करें।

रोटरी सम्मेलन से बेहतर किसी अन्य तरीके से *रोटरी दुनिया को जोड़ती* है। अपने परिवार को हमारे परिवार से मिलवाने के लिए लाइये। होनोलूलू में मिलते है!

मार्क डेनियल मलोनी

अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

संपादक
का संदेश

सुंदरता के मायने बदल रहे हैं ...

उत्कृष्ट साहित्य पढ़ना और बार बार पढ़ना मेरे लिए आनन्द प्राप्ति का एक स्थायी साधन है। साल दो साल में जब-जब भी मैं अपनी पसंदीदा किताबों के पन्ने पलटती हूँ, थॉमस हार्डी के *द मेयर ऑफ कॉस्टरब्रिज* या जेन ऑस्टिन की *प्राइड एंड प्रेजुडिस* ; जॉर्ज एलियट की *द मिल ऑन द फ्लॉस* ; हार्पर ली की *टू किल ए मॉकिंग बर्ड;* खालिद हुसैनी की *द काइट रनर* और हाँ, एमिली ब्रोंटे का दिलचस्प उपन्यास *वुदरिंग हाइट्स* जिसे आप ख़त्म किये बिना नहीं रख सकते, इन सब की कहानी हर बार मेरे लिए परिप्रेक्ष्य, आश्चर्य, विस्मय और प्रशंसा की एक नई परत खोलती है।

इन दिनों मैं एक अश्वेत लेखिका का प्रसिद्ध उपन्यास पढ़ रही हूं ... चिमामंदा गोज़ी अदीचे की दिल छू लेने वाली एक पुरुस्कृत कृति *हाफ ऑफ़ ए येलो सन* ; ऐलिस वाकर की महान कृति द *कलर पर्पल* और नोबेल पुरस्कार विजेता टोनी मॉरिसन की अविस्मरणीय *द ब्लूएस्ट आई,* जिसके बारे में द *न्यूयॉर्क टाइम्स* की समीक्षा में लिखा था: ''इसमें इतनी अधिक यंत्रणा, व्यथा और उत्सुकता हैं, लगता है कि ये उपन्यास कविता बन गया है।'' *द ब्लूएस्ट आई* के एक हालिया संस्करण में (अपनी पसंदीदा किताबों के कई संस्करण जमा करना मेरी कमजोरी है!) लेखक का कहना है कि उनकी किताब की शुरुआत बचपन में प्राथमिक विद्यालय में उनकी दोस्त से होती है जिसने एक बार कहा था काश, उसकी भी आँखें नीली होतीं। नीली आँखों वाली काली लड़की के विचार और उसकी कल्पना से ही मॉरिसन को ज़बरदस्त झटका लगा , और उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि इस लड़की के पास जो कुछ भी है वो उससे खुश क्यों नहीं थी और जिस तरह अपने बाहरी स्वरुप को बदलने की कामना करती थी, वास्तव में वो उसे और कुरूप बना देगा।

मॉरिसन द्वारा ''नस्लीय सुंदरता'' का उल्लेख और अमेरिकी मानकों के अनुसार सौंदर्य को ''गोरेपन'' सके प्रिज्म से ही देखते हैं ... ''गोरी त्वचा'' और नीली आँखें ... आज की अपेक्षा यह धारणा 1900 की शताब्दी में ज़्यादा मज़बूत थी, यह हमें गहराई से सोचने को मजबूर करती है। क्योंकि भारत के कई हिस्सों में, आज भी, एक महिला की ख़ूबसूरती का आकलन उसकी गोरी त्वचा के आधार पर किया जाता है। पिछले कुछ दशकों में भारतीय बाजारों में गोरेपन की क्रीम की आई बाढ़ को जो समर्थन मिला है, और यहां तक कि पुरुषों ने भी जिस तरह से उसे अपनाया है, यह गोरी चमड़ी के लिए भारतीय मानसिकता का प्रमाण है। एक बार फिर से प्रमाण की पुष्टि करने के लिए हमें वैवाहिक विज्ञापनों पर सिर्फ नज़र डालने की ज़रुरत है, जहां भारतीय पुरुष या उसका सम्पूर्ण परिवार एक ''गोरी दुल्हन'' की लालसा रखता है। नारीवादियों ने ही नहीं बल्कि बुद्धिमान व प्रबुद्ध वर्ग ने भी, भारतीय लड़कियों पर पीढ़ियों से चले आ रहे इस दबाव का पुरज़ोर विरोध किया है लेकिन स्वस्थ और दमकती, भूरी त्वचा से समृद्ध होने के बावजूद उन्हें अपनी 'ख़ूबसूरती' में इस की कमी खलती है। धीरे-धीरे ही सही लेकिन निश्चित रूप से यह सौंदर्य मिथक उनके इर्दगिर्द अपना जाल फैलाता है और उन्हें असुरक्षा की भावना जकड लेती है, जिसके परिणामस्वरूप गोरी त्वचा नहीं होने के कारण एक अनाड़ी की तरह मूर्खतापूर्ण तरीके से खुद का ही तिरस्कार करने लगती है ! लाखों महिलाओं के दिल और दिमाग में आत्म-सम्मान को ठेस पहुँचने के बाद जो क्षति हो सकती है, उसके परिणाम इतने भयावह हो सकते हैं कि उन्हें अंदर तक तोड़ सकते हैं।

इस अंक की कवर स्टोरी नैराश्य और अवसाद पर है। बाहरी रूप-रंग के कारण खुद का तिरस्कार और वह भी सौंदर्य की गलत और विकृत अवधारणाओं के आधार पर, संभव है, बल्कि, मुझे यकीन है कि इसका परिणाम अवसाद और नैराश्य में परिणीत होता है।

महिलाओं के रूप में ... माताएं,पत्नी, बेटियां, बहने, मौसी, आदि, आइये हम सब मिल कर अपने परिवारों की ज़िंदगी से इस अनर्गल रूढ़िवादी धारणा को पूरी दृढ़ता से निकाल बाहर करने का बीड़ा उठायें ... कि जो गोरा है सुंदर है। आइए हम इस बात को फिर से साबित करें और बार बार दोहराएं कि एक भूरी या सांवली त्वचा भी अप्रत्याशित रूप से सुंदर हो सकती है और किसी महिला का व्यक्तित्व केवल उसके रूप रंग में नहीं है बल्कि उसकी बुद्धिमत्ता, चातुर्य, उसकी आँखों की चमक, उसके दिल में भरी करुणा ... सैंकड़ों ख़ूबियां और भी हैं जो किसी महिला को इतना खास बनाते हैं!

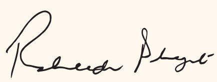

रशीदा भगत

Governors Council

RI Dist 2981	DG N Manimaran
RI Dist 2982	DG Natesan A K
RI Dist 3000	DG Dr A Zameer Pasha
RI Dist 3011	DG Suresh Bhasin
RI Dist 3012	DG Deepak Gupta
RI Dist 3020	DG M Veerabhadra Reddy
RI Dist 3030	DG Rajendra Madhukar Bhamre
RI Dist 3040	DG Dhiran Datta
RI Dist 3053	DG Harish Kumar Gaur
RI Dist 3054	DG Bina Ashish Desai
RI Dist 3060	DG Anish Shah
RI Dist 3070	DG Sunil Nagpal
RI Dist 3080	DG Jitendra Dhingra
RI Dist 3090	DG Rajeev Garg
RI Dist 3100	DG Hari Gupta
RI Dist 3110	DG Kishor Katru
RI Dist 3120	DG Sanjay Agrawal
RI Dist 3131	DG Ravee Dhotre
RI Dist 3132	DG Suhas Laxmanrao Vaidya
RI Dist 3141	DG Harjit Singh Talwar
RI Dist 3142	DG Dr Mohan Chandavarkar
RI Dist 3150	DG Pandi Sivannarayana Rao
RI Dist 3160	DG Nayan S Patil
RI Dist 3170	DG Dr Girish R Masurkar
RI Dist 3181	DG Joseph Mathew
RI Dist 3182	DG Ramesh B N
RI Dist 3190	DG Dr Sameer Hariani
RI Dist 3201	DG R Madhav Chandran
RI Dist 3202	DG A Karthikeyan
RI Dist 3211	DG Shirish Kesavan
RI Dist 3212	DG S Sheik Saleem
RI Dist 3231	DG Sridar Balaraman
RI Dist 3232	DG G Chandramohan
RI Dist 3240	DG Dr Debasish Das
RI Dist 3250	DG Gopal Khemka
RI Dist 3261	DG Ranjeet S Saini
RI Dist 3262	DG Debasish Mishra
RI Dist 3291	DG Ajay Agarwal

Printed by PT Prabhakar at Rasi Graphics Pvt Ltd, 40, Peters Road, Royapettah, Chennai - 600 014, India, and published by PT Prabhakar on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust (RNT) or Rotary International (RI). No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions – original content – is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced, but with permission from RNT.

रो ई निदेशकों

सीधी बात

अच्छा स्वास्थ्य और अच्छे विचार हमारे लिए सबसे बहुमूल्य संपत्ति है, जिसमें अच्छा स्वास्थ्य सबसे महत्वपूर्ण है। लेकिन, जब तक हम बीमार नहीं पड़ते तब तक हम अपने व्यस्त जीवन में अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं देते और फिर हम डॉक्टरों तथा अस्पतालों का चक्कर लगाते रहते हैं। यह जीवन शैली की बीमारियों का बोझ है, जिसे एनसीडी - गैर-संचारी रोग कहा जाता है। 60 प्रतिशत मौतों के लिए भारत में एनसीडी संक्रमण जिम्मेदार है। भारतीय होना ही एक जोखिम भरा कारक है। सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि भारतीय जल्द और समय से पहले मर रहे हैं। आज इसका सबसे बड़ा कारण खराब भोजन है। ऐसा भोजन जो कैलोरी में समृद्ध है, और नमक, तेल तथा चीनी सामग्री में उच्च है! इसका एक अन्य कारक व्यायाम की कमी और तनावपूर्ण जीवन शैली भी है।

जैसा कि हम दिसंबर - रोग निवारण और उपचार माह में पहुंच रहे हैं, आइए, परियोजना सकारात्मक स्वास्थ्य- एनसीडीएस परियोजना की हमारी रोटरी इंडिया पहल को आगे बढ़ाने हेतु कमर कस लें। इसके लिए तीन-आयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है:

1. एनसीडी का शुरुआत में ही पता लगाना - नो योर नंबर्स कैंपेन।
2. जीवन शैली में परिवर्तन के लिए प्रेरित करना - एक चमच कम, चार कदम आगे अभियान।
3. एनसीडी के खतरों के बारे में जागरूकता पैदा करना - एक सोशल मीडिया अभियान शुरू करना। स्कूलों और कॉलेजों में जागरूकता।

29 सितंबर को - विश्व हृदय दिवस और 14 नवंबर - विश्व मधुमेह दिवस के अवसर पर रोटरी क्लब और रोटेरियन पूरे भारत में सैकड़ों जागरूकता कैंप, रैलियां, नुक्कड़ नाटक, साइकिल रैलियां और कार्यशालाएं आयोजित की और जागरूकता पैदा करके और कार्रवाई करते हुए हजारों नागरिकों तक पहुंचे। सभी क्लब और रोटेरियन और राष्ट्रीय समिति के सदस्यों की प्रशंसा की जानी चाहिए।

उपचार के मोर्चे पर, महाराष्ट्र के रोटरी मंडलों ने डायलिसिस मशीनों की आपूर्ति करके डायलिसिस केंद्रों की स्थापना हेतु फेयरफैक्स इंडिया चैरिटेबल फाउंडेशन (FICF) के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। मेरा दृढ़ विश्वास है कि रोटरी के लिए भविष्य की भागीदारी है हमें अपनी क्षमता का लाभ उठाने और अधिक प्रभावशाली, बेहतर काम करने की सुविधा देता है। FICF के साथ साझेदारी इसका एक अच्छा उदाहरण है। रोटरी क्लब ₹4.15 लाख (लागत का 75 प्रतिशत, 25 प्रतिशत FICF द्वारा वहन किया जायेगा) की डायलिसिस मशीन दान कर सकते हैं, जिसमें 4 साल का व्यापक रखरखाव भी शामिल है। महाराष्ट्र में एक पायलट के रूप में शुरू करके हम उम्मीद कर रहे हैं कि आने वाले महीनों में इसे अन्य भागों में भी शुरु किया जाएगा।

आइए हम सब हमारी सेवा प्रेम और करुणा के साथ अपना काम करके स्वस्थ समाज की दिशा में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करें, क्योंकि हम सुनिश्चित करते हैं कि *रोटरी दुनिया* को जोड़ती हैं।

डॉ भरत पांड्या
रो ई निदेशक, 2019-21

का संदेश

अच्छा स्वास्थ्य सभी का अधिकार है

हमारा मानना है कि अच्छी स्वास्थ्य देखभाल सभी का अधिकार है। फिर भी दुनिया भर में 400 मिलियन लोग बुनियादी स्वास्थ्य देखभाल को या तो वहन नहीं कर सकते या उनकी उस तक पहुँच नहीं है।

बीमारी दुनिया भर में लाखों लोगों के लिए दुख, दर्द एवं गरीबी लाती है। उच्च चिकित्सीय लागत की वजह से हर साल 100 मिलियन से अधिक लोग गरीबी के चंगुल में फंस जाते है, इसलिए बीमारी का इलाज एवं रोकथाम करना हमारे लिए इतना महत्वपूर्ण है। बड़े एवं छोटे दोनों तरह के प्रयासों से। रोटेरियनों का लक्ष्य दुनिया के सुविधाओं से वंचित इलाकों में कम-लागत वाली एवं मुफ्त स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँच को बेहतर बनाने एवं उसे प्रसारित करने का है। पोलियो, एचआईवी/एड्स, और मलेरिया जैसी बड़ी बीमारियों के प्रसार को रोकने में मदद करने हेतु हम समुदायों को शिक्षित एवं तैयार करते है। हम प्रकोपों एवं स्वास्थ्य देखभाल पहुँच से जूझ रहे सुविधाओं से वंचित समुदायों में अस्थायी क्लीनिकों, रक्त दान केन्द्रों एवं प्रशिक्षण सुविधाओं की स्थापना करते है। हम ऐसी आधारभूत संरचना का निर्माण करते है जो डॉक्टरों, मरीजों, एवं सरकारों को एक साथ काम करने देती है।

रोटरी की शीर्ष प्राथमिकता पोलियो का उन्मूलन है। हमारे सदस्य मलेरिया, एचआईवी/एड्स, डायलिसिस सेवाओं के माध्यम से गुर्दों की विफलता, जन्मजात हृदय रोग, अल्जाइमर, मल्टीपल स्क्लेरोसिस, मधुमेह, आदि जैसी बीमारियों से निपटने के लिए भी अधिक से अधिक जिम्मेदारियां निभाते हैं।

बीमारी की रोकथाम एवं उपचार के कई रूप होते है, अध्ययनों का समर्थन करने से लेकर लोगों का टीकाकरण करने में मदद करने से लेकर पेयजल एवं स्वछता बुनियादी ढांचों को सुधारने तक। इन वैश्विक चुनौतियों का सामना करने, और दूसरों के अनुसरण करने हेतु एक उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए दुनिया रोटरी पर निर्भर है।

पुरानी कहावत रोकथाम इलाज से बेहतर है, अभी भी सही साबित होती है। इसकी महत्ता को समझते हुये, रोई निदेशक भरत पण्ड्या और मैंने एक नई पहल की शुरुआत की है - प्रोजेक्ट पॉज़िटिव हैल्थ। इसके अंतर्गत, हमारा लक्ष्य लोगों को एक चम्मच कम और चार कदम ज्यादा, जिसका अर्थ है अपने दैनिक भोजन में शक्कर, नमक एवं तेल की *एक चम्मच कम और चार कदम ज्यादा,* के सरल सूत्र को अपनाने के लिए संवेदनशील बनाकर गैर-संचारी रोगों को खत्म करने का है। हम हमारे हर एक रोटरी क्लब से स्वास्थ्य जांच शिविरों को संचालित करने एवं युवाओं को शिक्षित करने का अनुरोध करते है।

याद रखिए स्वास्थ्य ही धन-दौलत है।

कमल संघवी
रो ई निदेशक, 2019-21

Board of Permanent Trustees & Executive Committee

PRIP Rajendra K Saboo	RI Dist 3080
PRIP Kalyan Banerjee	RI Dist 3060
RIPN Shekhar Mehta	RI Dist 3291
PRID Panduranga Setty	RI Dist 3190
PRID Sushil Gupta	RI Dist 3011
PRID Ashok Mahajan	RI Dist 3141
PRID Yash Pal Das	RI Dist 3080
PRID P T Prabhakar	RI Dist 3232
PRID Dr Manoj D Desai	RI Dist 3060
PRID C Basker	RI Dist 3000
TRF Trustee Gulam A Vahanvaty	RI Dist 3141
RID Dr Bharat Pandya	RI Dist 3141
RID Kamal Sanghvi	RI Dist 3250

Executive Committee Members (2019–20)

DG Deepak Gupta Chair – Governors Council	RI Dist 3012
DG Nayan Patil Secretary – Governors Council	RI Dist 3160
DG Dhiran Datta Secretary – Executive Committee	RI Dist 3040
DG Ajay Agarwal Treasurer – Executive Committee	RI Dist 3291
DG Rajendra Madhukar Bhamre Member – Advisory Committee	RI Dist 3030

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

Editor
Rasheeda Bhagat

Senior Assistant Editor
Jaishree Padmanabhan

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

ROTARY NEWS TRUST
3rd Floor, Dugar Towers,
34 Marshalls Road, Egmore
Chennai 600 008, India.
Phone : 044 42145666
e-mail: rotarynews@rosaonline.org
Website: www.rotarynewsonline.org

Now share articles from *rotarynewsonline.org* on WhatsApp.

District Wise TRF Contributions as on October 2019

(in US Dollars)

District Number	APF	PolioPlus	Other Restricted	Endowment Fund	Total Contributions	EREY Donors (in numbers)	EREY %
India							
2981	7,975	454	0	29	8,458	23	0.51
2982	16,646	9,829	161,362	0	187,838	61	2.02
3000	16,643	0	3,703	0	20,345	18	0.35
3011	10,683	985	21,684	0	33,351	49	1.38
3012	159,935	5,615	32,452	0	198,002	113	3.05
3020	9,998	13,361	0	12,029	35,388	27	0.72
3030	3,439	7	1,423	0	4,869	5	0.10
3040	5,399	45	5,471	0	10,915	7	0.34
3053	24,960	32	331	0	25,322	60	2.07
3054	1,420	107	35,809	0	37,336	6	0.11
3060	11,165	6,014	8,750	11,578	37,507	172	4.25
3070	18,791	325	6,943	0	26,059	68	2.21
3080	31,006	4,110	12,875	1,013	49,004	69	2.01
3090	5,684	0	0	0	5,684	20	1.01
3100	21,110	0	0	0	21,110	61	3.21
3110	5,351	1,609	0	0	6,960	11	0.28
3120	19,184	141	0	0	19,325	62	1.84
3131	61,125	519	88,829	43,000	193,473	245	4.67
3132	2,930	292	9,253	15,000	27,474	7	0.19
3141	165,363	6,628	195,333	41,392	408,716	446	8.13
3142	61,447	274	0	0	61,721	164	5.07
3150	34,006	6,178	11,667	97,931	149,782	290	8.13
3160	1,946	29	0	0	1,975	11	0.41
3170	17,358	701	(4,006)	0	14,053	88	1.57
3181	86,152	3,249	0	0	89,401	132	3.70
3182	18,712	7,324	1,777	0	27,813	82	2.62
3190	56,933	6,084	29,360	0	92,377	371	7.78
3201	23,332	2,522	72,778	0	98,632	48	0.89
3202	32,341	24,956	2,035	1,000	60,332	29	0.59
3211	1,442	42	46,879	290	48,653	8	0.18
3212	18,888	3,805	1,050	0	23,743	37	0.92
3231	1,547	56	3,083	0	4,686	25	0.68
3232	17,147	24,238	73,542	7,500	122,427	77	1.47
3240	15,395	31,441	33,004	0	79,840	88	2.90
3250	11,892	0	(85)	0	11,807	17	0.44
3261	2,805	0	30,770	0	33,575	2	0.08
3262	14,111	1,514	5,507	0	21,132	29	0.87
3291	25,417	527	27,970	0	53,914	45	1.27
India Total	**1,039,677**	**163,011**	**919,548**	**230,762**	**2,352,998**	**3,073**	**2.11**
3220 **Sri Lanka**	32,937	3,900	7,371	0	44,207	41	2.10
3271 **Pakistan**	2,000	1,019	20	0	3,039	4	0.30
3272 **Pakistan**	2,292	600	300	0	3,192	14	0.85
3281 **Bangladesh**	37,669	1,000	67,500	4,000	110,169	79	1.39
3282 **Bangladesh**	18,413	2,806	0	1,000	22,219	17	0.36
3292 **Nepal**	122,385	12,293	191,013	0	325,691	142	3.05
South Asia Total	**1,255,372**	**184,628**	**1,185,751**	**235,762**	**2,861,514**	**3,370**	**2.03**
World Total	**30,465,995**	**7,865,440**	**5,384,504**	**9,457,851**	**53,173,790**		

Source: RI South Asia Office

NiveshGuru™
SAMPATTI KI UNATTI

GROW YOUR WEALTH

NiveshGuru, a one-stop solution for all your investment needs.

Nivesh Guru Advisors Private Limited
68-B, Nariman Bhavan, Nariman Point, Mumbai - 400021

+91 22 2288 0808 info@niveshguru.in www.niveshguru.in

गेब्रियल आईज़ेक

आत्महत्या मदद के लिए एक पुकार है

जयश्री

रविवार की एक सुबह की शांति, पड़ोस में रहने वाले एक गुस्साए पिता की चीख से भंग हो गई, जो उसकी 10-वर्षीय बेटी को कह रहा था... ''जा और मर जा।'' बिल्डिंग के ऊपर से कूद जा वह ऐसा अक्सर कहता है; लेकिन मेरा दिल तब दहल गया जब उस चुलबुली बच्ची ने धीरे से मुझसे कहा: एक दिन मैं ऐसा ही करूंगी।''

अगली सुबह, एक अखबार की हैडलाइन थी: *कम अंक से उदास IIT मद्रास के 19-वर्षीय छात्र ने की खुदकुशी।*

2015 में WHO द्वारा किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि पाँच में से एक भारतीय उसके जीवनकाल में अवसाद से पीड़ित हो सकता है; और केवल 10-12 प्रतिशत ही चिकित्सीय मदद लेते है। दिल की बीमारियों एवं मधुमेह के बाद, आत्महत्या भारत में मौत का तीसरा कारण है।

आत्महत्या विशेषज्ञ और लंदन के रॉयल कॉलेज ऑफ साइकेट्रिस्ट और एडिनबर्ग से दो मानद शिक्षावृत्ति प्राप्त डॉक्टर लक्ष्मी विजयकुमार कहती है, ''आत्महत्या कई कलात्मक कैरियरों के अंत का एक विराम चिन्ह है।''

इसके कारण अनेक होते है जिनमें ''माता-पिता, दोस्तों, या मित्रों के साथ हुआ अंतर्वैयक्तिक संघर्ष शामिल है जो 15-29 वर्ष के युवाओं को अत्यधिक अवसाद देता है। अकादमिक परेशानियाँ या सम्बन्धों के तनाव भी इसका कारण हो सकते है। पूर्णतावाद भी एक कारण है जो नकारात्मक तरीके से व्यक्ति को प्रभावित करके तनाव देता है और उनके मन में आत्महत्या का विचार लाता है। वृद्धजनों में, यह मुख्यतः आर्थिक परेशानियाँ होती है।''

SCARF के वाइस चेयरमेन और अध्यक्ष डॉक्टर आर. थारा कहते है कि आत्महत्या का एक प्रमुख कारण है अवसाद की तीव्रता को ना झेल पाना। विवशता और निराशा अवसाद के प्रमाण चिन्ह है। ''यदि उन्हें लगता है कि उनका कोई सहारा नहीं है, तो व्यक्ति आत्महत्या करने के लिए आकर्षित होता है। अक्सर यह एक आवेगी कदम होता है जो परीक्षा में असफल होने पर, छात्र को मनपसंद कोर्स ना मिलने पर, और पिता द्वारा बच्चे को आईफोन या महंगी मोटरबाइक ना दिलाने जैसे तुच्छ कारणों पर उठाया जाता है।'' आजकल के युवाओं को तत्काल संतुष्टि चाहिए। उनमें इंतज़ार करने या माता-पिता के दृष्टिकोण को समझने का सब्र नहीं होता है, वह आगे कहती है।

साथी के दबाव को खारिज करते हुये, वह कहती है, ''बल्कि यह उनका स्वयं का दबाव होता है। साथी उन्हें नहीं

कहते कि मेरे पास आईफोन है तो तुम्हें भी लेना चाहिए। यह ऐसा होता है कि उसके पास आईफोन है तो मेरे पास भी एक होना चाहिए।''

घरेलू हिंसा, शराब का अत्यधिक सेवन निम्न वर्ग में आत्महत्या का कारण बन सकते है, विशेषकर वहाँ जहाँ महिलाएं आघात को सहन नहीं कर पाती और इसलिए, अपनी जान ले लेती है। दहेज मृत्यु नरहत्या या आत्महत्या दोनों हो सकती है।

डॉक्टर लक्ष्मी कहती है कि भारत में, महिलाओं से अधिक पुरुष ख़ुदकुशी करते है। जहाँ वृद्ध पुरुष (70 और उससे ऊपर) आत्महत्या करते है, वहीं आम तौर पर 18-29 उम्र वर्ग की महिलाएं आत्महत्या करती है। 30 के बाद, आत्महत्या की दर सीधी आधी हो जाती है।

मनोवृत्ति

अभिभावकों की बड़ी उम्मीदें, शिक्षकों की अपमानजनक आलोचनाएँ, और सम्बन्धों की खटास युवाओं में आत्महत्या के विचार डालते है, विशेषकर तब जब उनकी सहायक प्रणाली कमजोर होती है। जहाँ अधिकांश विवाहित महिलाओं का 30 वर्ष की उम्र तक बच्चा हो जाता है, वह संबंध उन्हें समस्याओं पर विजय प्राप्त करने में मदद करता है। लेकिन बाद में, जब बच्चा चला जाता है, तो उन्हें अकेले स्वास्थ्य एवं वित्त की समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

डॉक्टर थारा कहती है, धारावाहिक और सिनेमा भी युवाओं के मन में आत्महत्या के विचार डालने में अहम भूमिका निभाते है। ''वे सोचते है कि ज़िंदगी खत्म करना आसान होता है जैसा कुछ फिल्मों में

भावेश पटेल

दिखाया जाता है। उन्हें लटकने या छत से या ट्रेन के सामने कूदने, या स्वयं को जलाने के दर्द के बारे में कोई अंदाजा नहीं होता।''

यहाँ तक कि कार्टून फिल्में भी युवाओं में आत्मघाती विचारों को जन्म दे सकती है क्योंकि 7 या 8 साल के बच्चे ङ्मैं मरना चाहता हूँफ जैसे संवाद सुनते है। पहले 14 से कम उम्र में आत्महत्या करने वाले बच्चों की संख्या नगण्य थी। लेकिन अब 10-14 साल के बच्चों में आत्महत्या देखने को मिल रही है, डॉक्टर लक्ष्मी कहती है।

मैंने उनसे पूछा, क्या आपने आत्महत्या का प्रयास करने वाले उस उम्र के बच्चों का इलाज किया है। वह गंभीरता से कहती है, ''हाँ। एक होनहार बच्चा था जिसके माता-पिता उसका अत्यधिक सहयोग करते थे, और उसपर पढ़ाई या किसी अन्य बात के लिए दबाव नहीं डालते थे। लेकिन सभी उससे बेहतर प्रदर्शन करने की उम्मीद करते थे; बच्चा घबरा गया और भयभीत हो गया, यह सोचकर कि यदि वह उनकी उम्मीदों पर खरा नहीं उतरा, तो वह उन्हें निराश कर देगा।''

आजकल के युवाओं को तत्काल संतुष्टि चाहिए। उनमें इंतज़ार करने या माता-पिता के दृष्टिकोण को समझने का सब्र नहीं होता है।

डॉ आर तारा
अध्यक्ष और उपाध्यक्ष SCARF

जब एक परीक्षा के बाद वह कक्षा में प्रथम आया और शिक्षक ने कहा कि निश्चित ही उसकी राज्य स्तर पर रैंक लगेगी, वह तनाव में आ गया और उसने यह कहते हुये एक आत्महत्या लेख लिखा ''मैं भले ही होनहार हूँ, लेकिन मुझे नहीं पता कि मैं आप सभी की उम्मीदों पर खरा उतर पाऊँगा या नहीं।'' उसने 10 वर्ष की उम्र में स्वयं को फांसी लगा ली! स्काउट में होने के कारण, उसे सही तरीके से गठान लगाना आता था। इस मामले में यह असफलता का उसका स्वयं का डर था जिसके परिणामस्वरूप यह आत्महत्या हुई।

एक अन्य बच्ची जिसे टाइफ़ाइड था, वह उसकी परीक्षा के लिए तैयारी नहीं कर सकी और नकल करते पकड़ी गई और अगले दिन उसके माता-पिता को बुलाया गया, उस शाम वह स्कूल बिल्डिंग की छत पर चढ़ी और गिरकर उसकी मौत हो गई। कोई भी चीज़ जो शर्मिंदा या अपमानित करती है वह युवाओं को आत्महत्या करने के लिए प्रेरित करती है। उनमें अभी तक पहचान की समझ विकसित नहीं हुई है या वे तनाव को झेलने हेतु पर्याप्त रूप से परिपक्व

आशीष वार्ष्णेय

ज्वाला कोटेश

> **युवाओं में आत्महत्या एक सहज प्रतिकृया होती है। यदि उन्हें एक मौका दिया जाए तो वे इसके बारे में सोचेंगे भी नहीं।**
>
> **डॉक्टर लक्ष्मी विजयकुमार**

नहीं हुये है। ''युवाओं में आत्महत्या एक सहज प्रतिकृया होती है। यदि उन्हें एक मौका दिया जाए तो वे इसके बारे में सोचेंगे भी नहीं,'' वह आगे कहती है।

डॉक्टर थारा कहती है कि जहाँ पश्चिमी देशों में आत्महत्या बंदूक या ड्रग्स का अत्यधिक सेवन करके की जाती है, भारत में, विशेषकर तमिलनाडू में, महिलाएं स्वयं को फांसी लगाकर या जलाकर अपनी जान लेती है; पश्चिम में स्वयं को जलाकर मारने की खबर नहीं सुनी गई है। कारण मुख्य रूप से समान होते है, सिवाय इसके कि वहाँ अकेलापन अधिक है। ''सामाजिक अलगाव और सामाजिक समर्थन की कमी वहाँ प्रचलित है, जो भारत में बहुत अधिक चिंता का कारण नहीं है परंतु धीरे-धीरे बढ़ रहा है। हम सभी परिवारों के साथ रहते है। यदि हम हमारे सामाजिक तंत्र का लाभ नहीं उठाते है, तो यह एक समस्या बन जाता है, जो अवसाद की ओर ले जाता है।''

वह कहती है कि भारत में ब्लू व्हेल चुनौती ''एक मीडिया प्रचार अधिक था। गेम से जुड़ा कोई भी मामला हमें देखने को नहीं मिला।''

1980 के दशक में IIT मद्रास में सलाहकार होने के नाते, डॉक्टर थारा इस बात पर रोशनी डालती है कि क्यों होनहार छात्र जो आईआईटी मद्रास में दाखिला ले सकते है, वे उनका जीवन इतने दयनीय ढंग से खत्म कर लेते है। सामाजिक और आर्थिक असमानता, विशेषकर उन छात्रों के

गेब्रियल आईज़ेक

हेल्पलाइन स्नेहा

डॉक्टर लक्ष्मी द्वारा स्थापित स्नेहा सूइसाइड प्रिवेंशन हेल्पलाइन स्वयंसेवकों के एक दल के माध्यम से वर्ष 1986 से 24 घंटे फोन पर सेवा प्रदान कर रही है। सबसे शुरुआती हेल्पलाइनों में से एक, यह शहर में आत्महत्या के रोकथाम में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इस हेल्पलाइन की शुरुआत तब हुई ''जब इस मनश्चिकित्सक ने यूके में समेरिटन्स के काम को देखा। वे आत्मघाती व्यक्तियों से बात करने के लिए स्वयंसेवकों का इस्तेमाल करते थे। जब मैं एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में आत्महत्या पर शोध पत्र प्रस्तुत करने के लिए विएना गई, तो मैं लोगों द्वारा आत्महत्या की रोकथाम हेतु किए गए कार्यों को देखकर चकित रह गई। यह 33 वर्ष पहले की बात है; हमारे देश में आत्महत्याओं को रोकने की कोई व्यवस्था नहीं थी।''

इस विचार पर बहुत संशय हुये। ''चेन्नई तब भी मद्रास था और एक बहुत ही रूढ़िवादी समुदाय था। लोगों ने कहा कोई भी आपके पास आकर यह नहीं कहेगा कि मैं आत्महत्या करना चाहता हूँ। या, कैसे आप केवल स्वयंसेवकों की मदद से एक संगठन चला सकती है। मैं बस आगे बढ़ी और 1986 में स्नेहा की स्थापना की।''

तब से लेकर अब तक हेल्पलाइन साल के 365 दिन चल रही है सिवाय उस दिन के जब पूरा शहर बाढ़ की चपेट में था। हेल्पलाइन को चलाने वाले स्वयंसेवक उनके आवागमन का खर्चा भी खुद उठाते है। ''जब राजीव गांधी की हत्या हुई, तो हमारे स्वयंसेवकों में से एक, एक 60-वर्षीय आदमी, ने कार्यालय पहुँचने के लिए पेरंबूर से पूरे दो घंटे तक साइकल चलाई। हमारे पास इस तरह के समर्पित स्वयंसेवक है।'' जहाँ पहले लोग उनकी समस्याओं पर चर्चा करने के लिए उनके कार्यालय में आते थे, यह सुविधा अब टेलीफ़ोन के माध्यम से दी जा रही है। अब बहुत से युवा ईमेल करना पसंद करते है। प्रतिदिन स्नेहा में औसतन 60 फोन आते है, जिनमें से 80 प्रतिशत लोग अत्यधिक आत्मघाती होते है या आत्महत्या करने ही वाले होते है: '' 'मैंने चार गोलियां खा ली है और 10 मेरे हाथ में है। या मैं मेरे अपार्टमेंट की इमारत की छत पर हूँ,' इन दिनों हमें इस प्रकार के फोन आते है,'' डॉक्टर कहते है।

तो ऐसी स्थितियों को वह किस प्रकार से संभालती है? ''किसी भी मनुष्य की बुनियादी आवश्यकता है स्वीकरण, चाहे उसने जो भी किया हो। एक भिखारी स्नेहा में आया और उसने कहा, 'कृपया मुझे कुछ पैसे दे दीजिये। मैं कुछ खाना चाहता हूँ।' उनमें से एक स्वयंसेवक ने उसे बैठाया और हमारा काम समझाया। बात खत्म होने के बाद, उसने खड़े होकर कहा, मुझे पैसे मत दीजिये। यह पहली बार है जब किसी ने मुझे कुर्सी पर बैठाया और मेरे साथ इन्सानों जैसा व्यवहार किया।'' यह व्यक्ति का पूर्ण स्वीकरण है। अगली आवश्यकता उपलब्धता है। हम 24x7 उपलब्ध है, पूरी तरह से गैर-राजनैतिक, गैर-धार्मिक। तीसरी चीज़ है पूर्ण गोपनीयता। चाहे जो हो जाए, जो बातें हमें पूर्ण विश्वास के साथ बताई गई है उसे हम किसी के भी साथ साझा नहीं करेंगे। हमें आईएएस अधिकारियों एवं अन्य व्यक्तियों के फोन आते है जो कहते है, 'मैं नाम नहीं बताना चाहता बस बात करना चाहता हूँ।' सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है सहानुभूति। व्यक्ति जिस मनोस्थिति से गुज़र रहा है उसे समझकर उनके साथ रहना। ''अत्यधिक आत्मघाती व्यक्ति के लिए, उसके फैसला लेने से पहले की हम शायद आखिरी कड़ी हो। वह कड़ी हमारे लिए बहुत कीमती है,'' डॉक्टर लक्ष्मी कहती है।

अत्यधिक आत्मघाती व्यक्ति के लिए, उसके फैसला लेने से पहले की हम शायद आखिरी कड़ी हो। वह कड़ी हमारे लिए बहुत कीमती है।

स्वयंसेवकों को प्रशिक्षित किया जाता है और चयन के मानदंड कठोर होते है। पिछली बार हमारे पास 150 आवेदन आए और उसमें से केवल 15 व्यक्तियों का चयन हुआ। यह कठिन एवं भावनात्मक रूप से नीरस होता है। एक व्यक्ति को बहुत ही स्नेही होना पड़ता है और साथ ही उन्हें अंतर करना भी आना चाहिए। एक उचित संतुलन होना चाहिए। उन्हें 40 घंटों का प्रशिक्षण दिया जाता है और वे छह महीनों तक परिवीक्षा में रहते है। प्रत्येक स्वयंसेवक हफ्ते में चार घंटे देता है। ''इस बात का ध्यान रखा जाता है कि स्वयंसेवक प्रभावित ना हो क्योंकि भावुक कहानियों को सुनना सुखकर नहीं होता है। मरीज लगभग एक घंटे तक बोलते है और कॉल समस्त भारत के अलावा दुबई एवं आबु धाबी जैसे देशों से भी आते है। वे स्काइप या किसी सोशल मीडिया माध्यमों से कॉल करते है। यदि जरूरत पड़ती है तो, स्वयंसेवक फोन करने वाले को किसी पेशेवर मानसिक स्वास्थ्य चिकित्सक के पास परामर्श लेने हेतु भेजते है।'' ■

लिए जो दूरस्थ या ग्रामीण इलाकों से आते है, ''ऐसे छात्रों के लिए इतने अलग परिवेश में समायोजन करना कठिन बनाते है। अँग्रेजी बोली जाती है और उनके लिए परिवेश एवं उनके द्वारा लिए जाने वाले व्यावसायिक पाठ्यक्रम की जरूरतों के हिसाब से समायोजन करना कठिन होता है। उन्हें शायद इस बात का अंदाजा भी नहीं होता कि आईआईटी में पीएचडी में क्या होता है, वे दबाव नहीं झेल पाते है और इन संस्थानों में सलाहकार होने के बावजूद भी, उन्हें नहीं पता होता कि वे मदद के लिए कहाँ जाएं। अक्सर यह उनकी क्षमता और उस पाठ्यक्रम की उम्मीदों के मध्य असमानता होती है।''

''आत्महत्या परामर्श में सबसे पहले आपको व्यक्ति को समझना पड़ता है, हालाँकि आप उनकी समस्याओं को हल नहीं कर सकते। उदाहरण के लिए एक शराबी पति। हम उन्हें मार्गदर्शित कर सकते है कि समस्या का सामना कैसे करें और किसी उग्र कार्यवाही से उन्हें दूर ले जाएँ।''

डॉक्टर थारा एक शिक्षित आईटी-जानकार महिला की काउंसलिंग को याद करती है जो उसके जीवन के तीसरे दशक में थी, जिसकी शादी 18 वर्ष की उम्र में हो गई थी, लेकिन उसे उसके पति एवं परिवार ने काम करने की इजाजत नहीं दी थी। कुंठित होकर उसने अपनी कलाई काट ली, उसे हॉस्पिटल में भर्ती करके उसका इलाज किया गया। लेकिन जब उन्होनें उसे काम करने की इजाजत नहीं दी, तो उसने साड़ी से फांसी लगाने की कोशिश की। ''चमत्कारपूर्ण ढंग से वह बच गई और उसे मेरे पास लाया गया। मैंने उसके परिवार को उसे अंशकालिक काम करने देने के लिए राज़ी किया। बाद में उसने मुझे फोन करके बताया कि उसे जो पसंद है उसे करने के लिए घर से बाहर जाकर वह खुश है, भले ही वह दिन में कुछ ही घंटों के लिए काम करती हो।''

डॉक्टर लक्ष्मी एक बच्ची के बारे में बात करती है जिसकी माँ की मृत्यु कैंसर के कारण हो गई थी और जिसके पिता ने दूसरी शादी कर ली थी। उसकी सौतेली माँ से ना पटने के कारण, उसने मच्छर भगाने की दवाई पी ली। उसे उनके पास लाया गया और तीन महीनों तक माता-पिता एवं बच्ची को परामर्श देने के बाद, अब वह ठीक है, डॉक्टर कहती है।

तो किसी बच्चे के आत्महत्या के प्रयास में जीवित बचने के बाद माता-पिता परामर्श के लिए कितने ग्रहणशील होते है? ''अधिकांश अभिभावकों को पश्चाताप होता है और वे बच्चे द्वारा झेले गए दबाव को महसूस करते है; कुछ अत्यधिक कसूरवार महसूस करते है और वे उनके बच्चे को सुखकर महसूस करवाने के लिए किसी भी हद तक जाते है।

आत्महत्या परामर्श में सबसे पहले आपको व्यक्ति को समझना पड़ता है, हालाँकि आप उनकी समस्याओं को हल नहीं कर सकते। हम उन्हें मार्गदर्शित कर सकते है कि समस्या का सामना कैसे करें और किसी उग्र कार्यवाही से उन्हें दूर ले जाएँ।

अन्य ङ्गनिष्पक्षफ होते है और हकीकत को अपनाते है कि अब क्या किया जाना चाहिए। लेकिन कुछ सोचते है कि बच्चे ने परिवार की बेइज्जती की है, तनाव में आकर वे आत्महत्या करने के लिए बच्चे पर गुस्सा होते है। यह अत्यावश्यक है कि ऐसे माता-पिताओं के साथ अधिक समय बिताया जाएँ और उन्हें अधिक परामर्श के माध्यम से यह समझाया जाएँ कि बच्चा किस परिस्थिति से गुज़रा है।''

परामर्श सत्रों के बावजूद बारंबार किए जाने वाले प्रयासों पर, वह कहती है कि आत्महत्या एक अत्यधिक तनावपूर्ण सिंड्रोम होता है और यह कठिन चरण 2-3 हफ्तों तक चलता है। यदि इस अवधि में उन्हें सहारा मिले, तो आत्महत्या को रोका जा सकता

है। ''हाँ, एक साल बाद, यदि उन्हें उसी प्रकार का तनाव मिलता है, तो व्यक्ति आत्महत्या करने के बारे में सोच सकता है। शोध में सामने आया है कि आत्महत्या के विचार वाले 100 लोगों में से, केवल 10 लोगों की मौत आत्महत्या से हुई है। यह एक आवेगी और उभयभावी घटना है। जीने या मरने की कामना उनके लिए उतार-चढ़ाव की स्थिति होती है। वे कहते है: 'ऐसा नहीं है कि मैं असल में मरना चाहता हूँ; लेकिन में इस तरह जी भी नहीं सकता।' उस समय, यदि आप जीने की इच्छा को बढ़ा दे, तो आत्महत्या को रोका जा सकता है।''

आत्महत्या मदद के लिए एक पुकार है। यह संचार का एक रूप है। आत्महत्या करने वाले बहुत से लोग किसी न किसी को उनके मरने की इच्छा के बारे में बताते है या उन्हें संकेत देते है। ''यह हम होते है जो उन्हें अच्छी तरह नहीं सुनते। हम बस उन्हें सलाह देते है और कहते है, 'चिंता मत करो। सब ठीक हो जाएगा।' अपने से बुरे लोगों को देखो और खुश रहो। या हम कहते है, एक हफ्ते की छुट्टी लो और घूमने जाओ।''

आत्मघाती विचारों से बचने के लिए, डॉक्टर लक्ष्मी कहती है, ''परिवार, मित्रों एवं समाज के साथ अच्छे संबंध बनाए। तब आप अकेला महसूस नहीं करेंगे। यदि आपको मानसिक स्वास्थ्य परेशानियाँ है, तो मदद मांगिए। बहुत से लोग चुपचाप पीड़ा सहते है। कलंक के डर से वे उनकी समस्याओं के बारे में बात नहीं करते है। किसी भी प्रकार की मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से निपटने के लिए पर्याप्त उपचार एवं रणनीतियां उपलब्ध है। साथ ही, याद रखिए कि समस्याएँ अस्थायी होती है। अपनी चुनौतियों का सामने करने के लिए दृढ़ता एवं धीरज रखें।''

तमिलनाडू सरकार द्वारा 2013 में नैदानिक मनोवैज्ञानिकों की मदद से आत्महत्या पर विचार करने वालों को परामर्श देने के लिए 104 की एक अन्य हेल्पलाइन शुरू की गई है। इस हेल्पलाइन को एक निजी कंपनी GVK EMRI द्वारा संचालित किया जाता है।

जीने या मरने की कामना उनके लिए उतार-चढ़ाव की स्थिति होती है। यदि आप जीने की इच्छा को बढ़ा दे, तो आत्महत्या को रोका जा सकता है।

रोटरी क्या कर सकती है?

रोटरी जैसे संगठन इस मुद्दों को बड़े पैमाने पर संबोधित करने में मदद कर सकते है। ''उन्होंने पोलियो एवं साक्षरता के लिए बहुत कुछ किया है। मानसिक स्वास्थ्य एक मौजूदा, आधुनिक संकट है। वास्तव में, हम स्नेहाचैट जैसा कुछ शुरू करना चाहते है, क्योंकि आज के व्यक्तियों के लिए ईमेल भी अप्रचलित हो गया है। इसमें अधिक संसाधनों की आवश्यकता होती है। यदि रोटरी मदद कर सकें तो यह अत्यधिक लाभप्रद होगा। चैट प्रक्रिया का निरीक्षण करने के लिए हमें स्वयंसेवकों की आवश्यकता है। हम स्नेहा के माध्यम से ऐसा नहीं कर सकते, क्योंकि हम पर पहले से ही अत्यधिक भार है,'' डॉक्टर लक्ष्मी कहती है।

रोटरी आत्महत्या के बारे में जागरूकता फैला सकती है और बच्चों में एक सकारात्मक मानसिकता विकसित करने के लिए उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में एक कार्यक्रम शुरू कर सकती है, डॉक्टर थारा सुझाव देती है।

ग्रामीण आत्महत्याएँ

ग्रामीण इलाकों में आत्महत्याएँ रोकने के लिए, जहाँ सबसे सामान्य तरीका कीटनाशक पीना है, लोगों को उनका कीटनाशक रखने के लिए लॉकर प्रदान किए

अबिर गंगोपाध्याय

मृत्यु जीवन का यह कहने का तरीका है कि आपको निकाल दिया गया है; आत्महत्या जीवन से मुक्त होने का आपका तरीका है।

गए है, ताकि आवेग में लिए गए फैसलों के दौरान वे उस तक पहुँच ना सकें। ''हमने कडलोर ज़िले के दो गांवों में ऐसा किया है। पिछले छह वर्षों में इन दो गांवों में आत्महत्या से कोई मौत नहीं हुई है। स्थानीय रोटरी क्लब भी इसे उनकी सामुदायिक परियोजनाओं के रूप में अपना सकते है। WHO ने इस पहल को आत्महत्या रोकने के सबसे किफ़ायती तरीकों में से एक माना है,'' डॉक्टर लक्ष्मी कहती है। अब वह गुजरात के 54 गांवों में इस प्रतिरूप को दोहराने के लिए पूरी तरह तैयार है। ''हम 500 सामुदायिक स्वास्थ्य कर्मियों को प्रशिक्षित करने जा रहे है। वे प्रत्येक गाँव में आत्मघाती व्यक्तियों की पहचान करेंगे और उचित परामर्श प्रदान करेंगे।''

2017 के मेंटल हेल्थकेयर एक्ट ने आत्महत्या को गैर-कानूनी करार दिया है। दो वर्ष पूर्व तक, यह समस्या थी कि आत्महत्या करने वाले को सजा दी जाती थी।

आत्महत्या करने वाले व्यक्तियों को बहुत कम लोग फूल देते है। मृत्यु जीवन का यह कहने का तरीका है कि आपको निकाल दिया गया है; आत्महत्या जीवन से मुक्त होने का आपका तरीका है। इसलिए आगे बढ़िए और बहुत देर होने से पूर्व मदद लीजिये, क्योंकि, हर एक समस्या का हल होता है, डॉक्टर लक्ष्मी कहती है।

गेब्रियल आइज़ेक एक स्वीडिश फ़ोटोग्राफर है , जिन्होने अपनी निराशा पर क़ाबू पाया, और अब वह उनका अनुभव का उपयोग कर, कला और चित्रता के द्वारा मानसिक स्वास्थ्य और बीमारी का प्रचार करते हैं।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

TRF को उपहार दें

नी हाओ, रोटेरियन!

यह साल खत्म होने पर है, और मैं जानता हूँ कि आप योगदान देने और अंतिम क्षणों में दान देने के बारे में सोच रहे है। आप सोच रहे है कि किस तरह आप अपना आभार एवं प्यार दिखा सकते है।

जवाब बेहद आसान है - रोटरी संस्थान में योगदान दीजिये। मैंने कहा केवल इसलिए नहीं: एक स्वतंत्र विश्लेषण में, आपके रोटरी संस्थान को दुनिया के सबसे अच्छे परोपकारी संस्थानों में सर्वश्रेष्ठ चुना गया है। लगातार 12वें वर्ष, रोटरी संस्थान को परोपकारी संगठनों के स्वतंत्र मूल्यांकनकर्ता चैरिटी नेविगेटर से सर्वोच्च रेटिंग - चार सितारे - हासिल हुए है। चैरिटी नेविगेटर की अगस्त माह की रेटिंग में मजबूत आर्थिक स्थिति और जवाबदेही एवं पारदर्शिता के प्रति प्रतिबद्धता दोनों को ही प्रदर्शित करने के लिए संस्थान ने सर्वाधिक 100 अंक अर्जित किए है।

संस्थान को लिखे गए एक पत्र में, चैरिटी नेविगेटर ने कहा कि ''जितने परोपकारी संगठनों का हम मूल्यांकन करते है उनमें से केवल एक प्रतिशत को कम से कम 12 सिलसिलेवार चार-सितारा रेटिंग प्राप्त हुई है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि रोटरी संस्थान अमेरीका के अन्य लोकोपकारी संगठनों के मुक़ाबले बेहतर प्रदर्शन करता है। चैरिटी नेविगेटर से प्राप्त यह असाधारण पदनाम संस्थान को उसके समकक्ष संगठनों से अलग रखता है और लोगों को इसकी विश्वसनीयता प्रदर्शित करता है।''

यह सम्मान पिछले कुछ वर्षों में जीते गए पुरस्कारों में सर्वोपरि है। दुनिया भर में पोलियो उन्मूलन के लिए रोटरी की प्रतिबद्धता ने *वन बिलियन एक्ट्स ऑफ पीस* अभियान, दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों से निपटने का एक अंतर्राष्ट्रीय वैश्विक नागरिक आंदोलन, के हीरो अवार्ड्स में बेस्ट नॉनप्रॉफ़िट एक्ट का खिताब जीता। और असोशिएशन ऑफ फ़ंडरेसिंग प्रोफेशनल्स - पेशेवर रूप से अनुदान संचयन करने वालों का दुनिया का सबसे बड़ा नेटवर्क - ने हमारी दीर्घकालिक उपलब्धियों को सम्मानित करते हुये रोटरी संस्थान को वर्ल्डस आउटस्टैंडिंग फ़ाउंडेशन कहा है।

यह कहना बहुत आसान है कि हम दुनिया के सबसे बड़े परोपकारी संगठनों में से एक से जुड़े हुये है। लेकिन सच यह है कि, आपका रोटरी संस्थान सर्वश्रेष्ठ है। इसलिए दुनिया को सबसे बड़ा उपहार देकर इस वर्ष का अंत करें। मुझे ताली दीजिये और रोटरी संस्थान को अपना समर्थन दीजिये।

क्रिसमस की बधाइयाँ और नव वर्ष की शुभकमनाएँ!

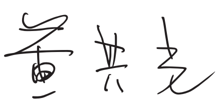

गेरी सी के हुआंग
फाउंडेशन ट्रस्टी अध्यक्ष

हमारे पुराने एवं नए लक्ष्यों की प्राप्ति

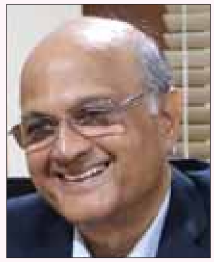

तीन वर्ष पूर्व, रोई महासचिव जॉन हेव्को से *हार्वर्ड बिज़नेस रिव्यू* ने पूछा कि कैसे रोटरी और रोटेरियन तीन दशकों तक पोलियो के खिलाफ लड़ाई को जारी रख पाये। उनका जवाब था:

- 1984 में, जब रोटरी ने पोलियो उन्मूलन पहल को प्रारम्भ किया, तो यह बीमारी बहुत से देशों में स्थानिक थी। इसलिए, रोटरियनों को हर जगह एक सामान्य कारण मिला।
- यह केवल पैसों का योगदान देने के बारे में ही नहीं था। बच्चों के लिए राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस पर दो बूंदों को प्रशासित करने के लिए रोटेरियन सम्मिलित हुये।
- परिणाम मापने योग्य थे। 1984 में 350,000 मामलों से लेकर, केवल पाकिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान, लगभग 100 मामलों के साथ, अब तक पोलियो मुक्त घोषित नहीं हुये है। इसलिए हमारी प्रतिबद्धता है कि हमें उस आखिरी मील को पार करना है।

हाल ही में हुई एक चर्चा में मुझसे पूछा गया कि मैं 2030 में रोटरी को कहाँ देखता हूँ। RIPN शेखर मेहता ने आव्हान कर दिया है कि रोटरी को नोबेल शांति पुरस्कार अवश्य मिलना चाहिए। यह लक्ष्य हर एक रोटेरियन का स्वप्न होना चाहिए, केवल इसलिए ही नहीं कि इससे हमारी छवि में बड़े पैमाने पर वृद्धि होगी, बल्कि इसलिए क्योंकि रोटरी वास्तव में इसकी हकदार है।

मेरे द्वारा बताया गया दूसरा लक्ष्य है कि रोटरी की सही मायनों में वैश्विक उपस्थिति होनी चाहिए। जहाँ यह सुनना खुशी की बात है कि रोटरी अधिकांश देशों में मौजूद है, वहीं चीन और अरब देशों में रोटरी क्लब गंभीर प्रतिबंधों में काम रहे है। इन देशों में रोटरी की स्थिति अनिश्चित है। यदि हम सरकारों को अन्य देशों की तरह ही काम करने की अनुमति देने के लिए राज़ी कर सकें, तो इससे सदस्यता में भारी वृद्धि होगी और टीआरएफ़ को अपार सहायता मिलेगी।

आसानी से प्राप्त होने वाले लक्ष्य? नहीं। हालांकि, रोटरी के शीर्ष स्तरों पर एक संगठित, केन्द्रित प्रयास से हमें इच्छित लाभांश प्राप्त हो सकते है।

यदि आपको लगता है कि कुछ ऐसे लक्ष्य है जिनके लिए हमें प्रयास करने चाहिए, तो कृपया लिखकर बताइये।

गुलाम ए वाहनवती
ट्रस्टी, रोटरी इंटरनेशनल

रोटरी में समूह गतिशीलता सबसे अच्छी तरह कार्य करती है: शेखर मेहता

रशीदा भगत

किसी अन्य संगठन की तुलना में समूह गतिशीलता रोटरी में बेहतर कार्य करती है। आइजैक न्यूटन ने कहा था कि ''अगर मैं दूर तक देख पा रहा हूँ, तो केवल इसलिए क्योंकि मैं विशालकाय मनुष्यों के कन्धों पर खड़ा हूँ। मैं कह सकता हूँ कि मैं यहाँ इस पद पर बहुत से लोगों के समर्थन की वजह से हूँ,'' रो ई अध्यक्ष मनोनीत शेखर मेहता ने कहा।

मुंबई में रोटरी क्लब बॉम्बे और रोई मंडल 3141, 3142 द्वारा आयोजित, एवं मंडल 3030, 3131, 3132 और 3170, एवं बॉम्बे हिल्स साउथ, मुंबई डाउनटाउन सी लैंड और मुंबई मालाबार हिल के रोटरी क्लबों द्वारा सह आयोजित किए गए एक समारोह को संबोधित करते हुए, वह उनकी ऊर्जा, गतिशीलता, कड़ी मेहनत और दृष्टिकोण पर की गई सकारात्मक तारीफ़ों पर प्रतिक्रिया दे रहे थे। ''जो कुछ भी मैं हासिल कर पाया हूँ वह गतिशीलता की वजह से है। जब मैं रोटेरियनों के समूह के साथ

बैठता हूँ तो मेरी स्वयं की क्षमताएं चार गुना बढ़ जाती है। जब मैं दूसरों के साथ कार्य करता हूँ तो मुझे अधिक ऊर्जा मिलती है, मेरा मस्तिष्क बेहतर ढंग से कार्य करता है। मुझे लोगों से मिलना और उनसे बातें करना बहुत पसंद है और मैं केवल तभी बेहतर ढंग से कार्य कर सकता हूँ जब मेरे आसपास लोग मौजूद हो।''

मेहता को दर्शकों की वाहवाही मिली जब उन्होंने कहा कि अधिकांश बैठकें जिनमें वह शामिल होते है एक दिन शुरू होती मगर वे उसी दिन समाप्त नहीं होती। इसलिए नहीं कि हमारे ऊपर काम का किसी प्रकार का दबाव है बल्कि हम इसी प्रकार काम करना पसंद करते है।

जब मैं दूसरों के साथ कार्य करता हूँ तो मुझे अधिक ऊर्जा मिलती है, मेरा मस्तिष्क बेहतर ढंग से कार्य करता है। मुझे लोगों से मिलना और उनसे बातें करना बहुत पसंद है और मैं केवल तभी बेहतर ढंग से कार्य कर सकता हूँ जब मेरे आसपास लोग मौजूद हो।

RIPN शेखर मेहता

बाएं से: RID भरत पांड्या, PDG एशस गंगूली, नयनतारा महाजन, PRIP कल्याण बेनर्जी, TRF ट्रस्टी-निर्वाचित अज़ीज़ मेनन, PRID अशोक महाजन और नंदिता गंगूली चित्र में शामिल हैं।

वह टीआरएफ न्यासी गुलाम वाहनवती की टिप्पणी पर भी प्रतिक्रिया दे रहे थे कि कल्याण बैनर्जी द्वारा रो ई अध्यक्ष के रूप में अपना कार्यकाल पूर्ण करने और दक्षिण एशिया में एक विशाल साक्षरता परियोजना करने का विचार रखने एवं एक ज्ञापन दस्तावेज को अंतिम रूप देने के बाद, जब लम्बे समय तक काम करने के बाद उन्हें मिलाकर कुछ मूलभूत सदस्य ही बचे थे, तब मेहता कुछ रोटेरियनों के साथ डटे रहे और प्रारूप को तैयार करने के लिए रातभर काम किया। ''ऐसा कार्य केवल समर्पित रोटेरियनों के एक दल के साथ ही संभव था,'' RIPN ने आगे कहा।

अपने अध्यक्षीय वर्ष के लिए अपने लक्ष्य और दृष्टिकोण को साझा करते हुए, मेहता ने कहा कि उनके कुछ लक्ष्यों को हासिल करने के लिए वह उनके ज़ोनों के रोटेरियनों के समर्थन पर आश्रित है। जिनमें से एक प्रमुख है पोलियो पर कार्य करने के लिए नोबल शांति पुरस्कार प्राप्त करना, भले ही यह दुनिया से अभी तक पूरी तरह से ना मिटा हो। ''हम अंजाम तक पहुँच चुके है; यह एक विश्व युद्ध को टालने जैसा है। पहले हर साल 3.5 लाख बच्चे पोलियो से ग्रस्त होते थे; आज केवल 100 होते है। यदि आप आंकलन करें तो, रोटरी की वजह से 40 से 50 लाख से अधिक बच्चे इस खतरनाक बीमारी से बच गए है। इसमें हमारे 1,100 शांति निर्माताओं को और जोड़ दीजिये जिन्हें दुनिया में संघर्ष को कम करने/रोकने के लिए प्रशिक्षित किया गया है।''

हमारे जोनों में रोटेरियनों द्वारा की जाने वाली हजारों सेवा परियोजनाओं का उल्लेख करते हुए मेहता ने कहा कि विडंबना यह है कि उस कार्य को परिमाणित करने के लिए कोई आंकड़े मौजूद नहीं है। लेकिन ज्यादा समय तक ऐसा नहीं रहेगा; एक वेबसाइट बनाई गई है जिसका लोकार्पण इंदौर इंस्टिट्यूट में किया जाएगा और यहाँ सभी क्लबों को उनके द्वारा की जाने वाली परियोजनाओं के आधार पर डेटा भरना होगा।

रो ई मंडल 3141 की प्रशंसा करते हुए, उन्होंने कहा कि इस अकेले मंडल ने अद्भुत कार्य किया है; मुझे आपके मंडल में आना पसंद है, क्योंकि जब भी मैं यहाँ आता हूँ कुछ नया सीखता हूँ। (रोई निदेशक भरत पंड्या ने हस्तक्षेप करते हुए कहा कि इस समारोह के प्रमुख आयोजक क्लब - विशिष्ट रोटरी क्लब बॉम्बे जो इस वर्ष 90 वर्ष का हो गया है, ने अकेले पिछले वर्ष 25 करोड़ की लागत की परियोजनाएं की थी, और इसके पास रिकॉर्ड संख्या में 11 एकेएस सदस्य है, जो दुनिया के किसी क्लब में सर्वाधिक है।)

राष्ट्रीय स्तर पर रोटेरियनों को विशाल और संरचित परियोजनाएं करने हेतु प्रेरित करते हुये, उन्होंने कहा साक्षरता कार्यक्रम इसलिए सफल हुआ क्योंकि वह संरचित था। और हम निवारक स्वास्थ्य एवं WinS दोनों के लिए ऐसा ही करने जा रहे है। क्योंकि हमारे पास एक संरचना है, भारत सरकार हमारे साथ साक्षरता में साझेदारी कर रही है और टाटा टेक्नोलॉजीज़ ने हमें उनका सलाहकार बनाने हेतु हमारे साथ एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया है! हम WinS और स्वास्थ्य में भी ऐसा कर सकते है।

इस बात पर कायम रहते हुये कि रोटरी के ताज में भारत कोहिनूर है, RIPN ने कहा कि 2021-22 में रोई के नेतृत्व की तैयारी करते हुये, उन्हें भारतीय रोटेरियनों से बहुत अधिक आशा है कि वे उनके देश को नई ऊँचाईयों तक ले जाएँगे। जैसे कि सदस्यता में नम्बर एक बनना; अभी हम करीब 1.5 लाख है; तीन वर्षों में यदि प्रत्येक रोटेरियन को एक भी सदस्य मिल गया, तो यूएस को पीछे छोड़ते हुए,

जहाँ दुर्भाग्य से शीर्ष पदों पर सदस्यता कम हो रही है, भारत के पास 2.5 लाख सदस्यों के आंकड़े को पार करने की क्षमता होगी। ''और यदि हमारे पास 250,000 रोटेरियन होंगे, तो हमारा टीआरएफ अनुदान 40 मिलियन डॉलर तक जा सकता है; हमारे पास दो की जगह चार निदेशक और दो न्यासी हो सकते है! और विधान परिषद में, सबसे प्रभावी आवाज़ भारतीय रोटेरियनों की होगी!''

महिला सदस्यता को बढ़ाना और रोटरेक्ट आन्दोलन को बढ़ावा देना उनकी अन्य प्राथमिकताएं है, ''लेकिन इन सबके लिए आपको कड़ी मेहनत करनी होगी। केवल बधाई देना काफी नहीं होगा,'' उन्होंने आगे कहा।

अपने विचार को दोहराते हुए कि मेहता और राशी 2021-22 के उनके कार्यकाल के दौरान रोई नेतृत्व पर एक भिन्न छाप छोड़ेंगे, PRIP कल्याण बेनर्जी ने एक किस्सा सुनाकर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया कि कैसे वह 1995 में पहली बार मेहता से एक युवा नौसिखिये के रूप में मिले, ''जिसे लगता था कि उसे सबकुछ आता है!'' वह नेपाल में एक अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन कर रहे थे, जिसमें तत्कालीन रोई अध्यक्ष और नेपाल की रानी शामिल होने वाले थे। उन्होंने स्वर्गीय पीडीजी अलोक मित्रा से उनके मंडल, जिसमें तब नेपाल भी शामिल था, के कुछ युवा स्वयंसेवक देने के लिए कहा। उन्हें शेखर के नेतृत्व वाले ''युवा और कोलाहल पूर्ण रोटेरियनों का एक दल आवंटित किया गया था, जिनमें से प्रत्येक को लगता था कि उसे सबकुछ आता है। यह उनके और मेरे दोनों के लिए एक चुनौती थी, मेरे लिए इसलिए क्योंकि यहाँ मैं उन युवाओं के एक समूह के साथ था जिन्हें लगता था कि एक अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम आयोजित करना एक बहुत ही आसान कार्य है और इसलिए भी क्योंकि मुझे उन ऊर्जावान और सबकुछ जानने की सोच रखने वाले युवाओं के साथ मिलकर उस कार्यक्रम को आयोजित करना था। शेखर ने सख्ती से दल का नेतृत्व किया; ना मुझपर ज्यादा ध्यान दिया और ना मुझे सुना फिर भी आश्चर्यजनक रूप से, हमारा कार्यक्रम उत्कृष्ट हुआ था।''

> **यह एक विश्व युद्ध को टालने जैसा है। पहले हर साल 3.5 लाख बच्चे पोलियो से ग्रस्त होते थे; आज केवल 100 होते है। यदि आप आंकलन करें तो, रोटरी की वजह से 40 से 50 लाख से अधिक बच्चे इस खतरनाक बीमारी से बच गए है।**
>
> **RIPN शेखर मेहता**

तब से, दोनों ने एक आपसी स्वीकृति, ''आदर और सम्मान को विकसित किया जो पच्चीस वर्षों से बना हुआ है।'' इतने वर्षों में, बेनर्जी ने आगे कहा, ''उन्होंने जाना कि यह नौजवान लंबी रेस का घोड़ा है, एक अच्छी नस्ल का अगर मैं ऐसा कहूं तो, जो कोई भी रेस जीत सकता है।'' और उन्होंने पहले रोई निदेशक बनकर, उसके बाद प्रभावी रूप से साक्षरता कार्यक्रम का नेतृत्व करके और अब रोई के शीर्ष स्थान पर पहुँचकर स्वयं को साबित किया है। यह सब करते हुए, उन्होंने लोगों को प्रशिक्षित किया, शानदार दल तैयार किये और नवीन नेतृत्वकर्ताओं का निर्माण किया, ''राशी को खुश रखते हुए उन्हें अधिकतर उनके समय का आनंद उठाने दिया और साथ ही अपने माता-पिता का इस तरह ध्यान

RIPN शेखर मेहता ने (बाएं से) TRF ट्रस्टी गुलाम वाहनवती DG हरजीत सिंह तलवार, RID गण भरत पांड्या और कमल संघवी की उपस्थिति में RID 3141 का GML जारी किया।

प्रार्थना की शक्ति

बाएं से: *TRF ट्रस्टी गुलाम वाहनवती, RIPN शेखर मेहता, PDG और TRF ट्रस्टी निर्वाचित अज़ीज़ मेनन, RID गण भरत पांड्या और कमल संघवी।*

इस बात को स्वीकारते हुए कि वह ''ज्यादा प्रार्थना करने वाले व्यक्ति'' नहीं है, शेखर मेहता ने कहा वह और राशी ''भारत और दक्षिण एशिया के बहुत सारे रोटेरियनों के अकल्पनीय प्यार और स्नेह के लिए आभारी है जिसे वे हमपर पिछले तीन महीनों से बरसा रहे है।''

और वह उनके रोई अध्यक्ष के रूप में नामांकित होने के बाद विभिन्न मंडलों में आयोजित किये गए अनेक सम्मान समारोहों के दौरान उन पर बरसाई गई उच्च प्रशंसा के बारे में बात नहीं कर रहे थे। ''इन में तो कहीं ना कहीं ज्यादती हो जाती है। जब आप मुझे हॉल में इस बैठक के लिए लाए तो आपने मेरे साथ एक शहंशाह की तरह बर्ताव किया।'' कल किसी ने कहा था ''आप योग कीजिए और शेखर का ध्यान कीजिए। अरे, हद भी करो यार,'' उन्होंने कहा, कम गंभीर बात कहते हुए मुस्कराकर उन्होंने आगे कहा, ''और आज आपने मेरी तुलना भगवान राम और कृष्ण से की... भगवान के लिए... लेकिन बेशक ये सब प्यार और स्नेह की वजह से है, मैं जानता हूँ!''

गंभीर बात करते हुए, मेहता ने कहा कि अगस्त में उनके नामांकन से पूर्व रोटेरियनों ने जिस प्रार्थना का सहारा लिया वह उसकी सीमा और अधिकता को देख अभिभूत थे। ''मुझे मेरे चयन से पहले हजारों सन्देश मिले, और प्रत्येक में यही बात थी कि हम आपके लिए प्रार्थना कर रहे है। पीडीजी अज़ीज़ मेनन (टीआरएफ न्यासी मनोनीत) ने एक दिन मुझे फ़ोन किया जब मैं और राशी एक मूवी देख रहे थे। मैंने उनसे कहा मैं आपसे बाद में बात करता हूँ लेकिन उन्होंने कहा कृपया एक मिनट के लिए बाहर आइये।''

जब उन्होंने ऐसा किया, मेनन ने उन्हें बताया कि दो सालों से वह हर दिन पाकिस्तान के पोलियो मुक्त होने की प्रार्थना कर रहे है। ''उन्होंने मुझे बताया कि अब पिछले 15 दिनों से उन्होंने एक नई प्रार्थना करना शुरू किया है! और उन्होंने कहा कि अब आप अपनी फिल्म देखने के लिए लौट सकते है।''

पीडीजी के ए कुरियाचन (रो ई मंडल 3201) ने कहा कि जबकि चयन अगस्त 5 और 6 की रात में था (भारत में), उन्होंने अगस्त 5,6 और 7 को विशेष प्रार्थना का आयोजन किया था; अन्य रोटेरियन ने उनके अध्यक्ष पद हेतु मनोनीत होने पर तिरुपति मंदिर तक पैदल जाने की मन्नत मांगी थी। किसी और ने आभार व्यक्त करने के लिए शिर्डी जाने का संकल्प लिया। ''मैंने एक बार भी प्रार्थना नहीं की कि मुझे यह पद मिलना चाहिए, लेकिन हजारों रोटेरियनों ने ऐसा किया और मुझे यकीन है कि मैं यहाँ पर उनकी दुआओं की वजह से ही पहुँचा हूँ। अब मैंने प्रार्थना की शक्ति में यकीन करना शुरू कर दिया है।''

रोटरी क्लब बाम्बे के दिलीप पिरामल ने 120,000 डॉलर का चेक RIPN शेखर मेहता को दिया।

मेरा मानना है कि उनमें एक बाज़ के नेतृत्व गुण है; तीक्ष्ण और दूरगामी दृष्टि, सबसे छोटे शिकार को बहुत ऊपर से देखकर, एकाएक नीचे आकर उसे उठाके ले जाने की क्षमता।

रो ई निदेशक **भरत पांड्या**

रखा जैसे उनके पास करने के लिए वही एकलौता कार्य हो।''

2021-22 के लिए रोई अध्यक्ष के रूप में मनोनीत होने पर मेहता को बधाई देते हुए, रोई निदेशक भरत पांड्या ने कहा कि 2004 से, जब वह मेहता से पहली बार मिले, और इसके फलस्वरूप उन्हें विशाल कार्यक्रमों को आयोजित करते देखा, मैंने पाया की उनकी संगठनात्मक क्षमताएँ बहुत शानदार है। जब वह किसी चीज़ का आयोजन करते है, तो वह उसमें सबकुछ डाल देते है, और गहन नियोजन, जूनून, उत्साह और विशुद्ध कड़ी मेहनत के माध्यम से सर्वश्रेष्ठ देने का प्रयास करते है।''

कोलकाता इंस्टिट्यूट में, मेहता ने व्हेर ईगल्स डेर... पर बात की और ''मेरा मानना है कि उनमें एक बाज़ के नेतृत्व गुण है; तीक्ष्ण और दूरगामी दृष्टि, सबसे छोटे शिकार को बहुत ऊपर से देखकर, एकाएक नीचे आकर उसे उठाके ले जाने की क्षमता। बाज़ बहुत ऊपर उड़ने वाले होते है, और 10,000 फीट की ऊँचाई पर उड़ते है। बिल्कुल बाज़ की तरह ही, मेहता बड़े सपने देखने, बड़ा हासिल करने की हिम्मत करते है। बाज़ निडर होते है, और जब कोई तूफ़ान आता है, वे उसके ऊपर उड़ते है। उसी प्रकार, शेखर चुनौतियों का डटकर सामना करते है और वह जो भी कार्य हाथ में लेते है उसे सफल बनाते है।''

इस समरूपता को आगे बढ़ाते हुए, पंड्या ने कहा बाज़ स्वयं में नयापन लाते है और अपने बच्चों का पालन-पोषण करते है; ''शेखर ठीक ऐसा ही करते है क्योंकि उनका मानना है कि सच्चे नेता वह होते है जो अधिक नेताओं का निर्माण करते है ना कि अधिक अनुयायियों का।''

कम गंभीर विषय पर बात करते हुए, निदेशक कमल संघवी ने कहा कि वक्ताओं ने अब तक एक ऐसे नेता की छवि को चित्रित कर लिया है जो एक बहुत ही गंभीर व्यक्ति है, जिनमें नेतृत्व के महान गुण है, संगठित करने की क्षमता है, इत्यादि। ''लेकिन उनके साथ अनेक वर्ष बिताने, और उनके साथ बहुत करीब से कार्य करने के बाद, मैं आपको बता सकता हूँ कि इस व्यक्ति का एक भिन्न पहलू भी है... वह एक अच्छे मित्र है।'' उर्दू दोहे को कहने की उनकी प्रवृत्ति में बहते हुए, संघवी ने बहुत से दोहों का जिक्र किया, कुछ उस मौके और मेहता के लिए तत्काल तैयार किये गए थे, यह दिखाने के लिए कि मेहता हमेशा आपकी परम मित्रता, प्रेम और ईमानदारी के पात्र होते हुए आप पर एक अमिट छाप छोड़ते है।

''सुबह से लोग मुझसे पूछ रहे है कि वह कैसे है, क्योंकि मैंने उनके साथ इतने वर्ष बिताए है... मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ कि शेखर यारों का यार है और मेरे लिए सबकुछ है।''

मेहता के नेतृत्व गुणों को पृष्ठांकित करते हुए, टीआरएफ न्यासी गुलाम वाहनवटी ने कहा कि यह उन लोगों को स्पष्ट है जिन्होंने उन अद्भुत परियोजनाओं को देखा जो उनके क्लब रोटरी क्लब महानगर ने की, और जिस तरह से वह उस क्षेत्र के प्राकृतिक आपदाओं से पीड़ित लोगों को राहत पहुँचाने के लिए अपने दल के साथ आगे आए। यह पूरी तरह से मेहता का नेतृत्व ही था जिसने 2025 तक दक्षिण एशिया से निरक्षरता को मिटाने के लिए RILM को शक्तिशाली साधन बना दिया।

रोटरी के लिए नोबेल शांति पुरस्कार के उनके लक्ष्य की प्रशंसा करते हुए, वाहनवती ने मेहता से आग्रह किया कि वह रोटरी को उन क्षेत्रों तक प्रसारित करने का प्रयास करें जहाँ विभिन्न कारणों से इसकी पहुँच सीमित है - चीन और अरब दुनिया के विभिन्न देशों दोनों में। दोनों ही क्षेत्रों में पर्याप्त धन है और इन देशों में बढ़ती सदस्यता से टीआरएफ को भी लाभ होगा और इससे दुनिया में अधिक अच्छा करने में मदद मिलेगी, उन्होंने आगे कहा।

मेहता को इच्छित पद के लिए बधाई देते हुए, PRID अशोक महाजन ने कहा कि उनके नेतृत्व में रो ई नई बुलंदियों को छुएगा। अनेक वर्षों से उन्हें जानने के कारण, वह इस बात की गारंटी दे सकते है कि ''मेहता एक सुपरस्टार और एक निष्पक्ष और शांत नेता है जो कभी भी सत्ता के पीछे नहीं भागे; वह इस बात का बोध करवाते है कि वह हमेशा नियंत्रण में रहते है। दूरदर्शिता और विचारों की स्पष्टता रखने वाले वह व्यक्ति विभिन्न लोगों के साथ काम कर सकते है क्योंकि वह किसी पर भी अपने विचारों को नहीं थोपते है।''

पाकिस्तान से पीडीजी अज़ीज़ मेनन, रो ई मंडल 3271, जिन्हें टीआरएफ न्यासी के रूप में मनोनीत किया गया है, ने कहा कि उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में मेहता के साथ अनेक वर्षों तक काम किया है और उन्होंने पाया कि ''वह महान दूरदर्शिता और बारीकियों पर ध्यान देने वाले एक उत्कृष्ट नेता है। आपके साथ विभिन्न क्षेत्रों में काम करना मेरा सौभाग्य होगा, और उनमें से एक उस वादे को बनाए रखना होगा जो हमने 40 साल पहले किया था कि कोई भी बच्चा पोलियो जैसी अशक्त बनाने वाली बीमारी का सामना नहीं करेगा। आपके नेतृत्व में हम कड़ी मेहनत करेंगे और दुनिया को पोलियो मुक्त बनाना सुनिश्चित करेंगे।''

RIPN के मुंबई दौरे का उत्सव मनाने के लिए, दिलीप पिरामल, रोटरी क्लब बॉम्बे के एक सदस्य, ने मेहता को 120,000 डॉलर का एक चेक प्रदान किया।

डीजी हरजीत सिंह तलवार (मंडल 3141), डीजी मोहन चंदावरकर (मंडल 3142), डीजी सुहास वैद्य (3132), डीजी गिरीश मसूरकर (3170), डीजी राजेन्द्र भामरे (मंडल 3030) और पीडीजी प्रशांत देशमुख (3131) ने मेहता को उनकी पदोन्नति के लिए बधाई दी। मेहता ने डीजी तलवार द्वारा प्रकाशित जीएमएल का लोकार्पण किया।

रोटरी क्लब बॉम्बे की अध्यक्ष प्रीती मेहता और क्लब सदस्य संदीप अग्रवाल ने बैठक को संबोधित किया।

मंडल 3131 में, रोटरी क्लब पुणे स्पोर्ट्स सिटी, जो अपनी रजत जयंती मना रहा है, ने RIPN मेहता और राशी के अभिनन्दन का आयोजन किया; जिसमें से RIPN मेहता मराठी नायक पेशवा बाजीराव के समय की पोशाक पहने हुए थे। इस कार्यक्रम के पहले, रोई निदेशक कमल संघवी, डीजी रवि धोत्रे, पीडीजी महेश कोतबगी, कई अन्य पीडीजीयों और रोटेरियनों के साथ मेहता ने 100 स्कूलों में 100 हाथों की धुलाई के स्टेशनों की स्थापना को चिन्हित करने के एक कार्यक्रम में भाग लिया। इसके बाद 40 कॉर्पोरेट शीर्ष अधिकारीयों के साथ एक बैठक हुई जिन्होंने रोटरी की साझेदारी के माध्यम से पुणे और रायगढ़ मंडलों को 100 हैप्पी स्कूलों को वित्तपोषित करने का संकल्प लिया। एक टीआरएफ सेमीनार में, मंडल 3131 से लगभग 1.6 मिलियन डॉलर इकठ्ठा करने का संकल्प लिया गया।

चित्रः रशीदा भगत

दुर्लभ फ़ोन कॉल

RIPN शेखर मेहता ने कहा कि रोटरी में एक आदमी जिनकी वजह से आज वह इस मुकाम पर पहुंचे वह है पूर्व रोई अध्यक्ष कल्याण बेनर्जी। ''हर बार जब वह बोलते है, मैं कुछ नया सीखता हूँ। उनकी तरह कोई और व्यक्ति शब्दों और मुहावरों का इतनी अच्छी तरह उपयोग नहीं कर सकता, और मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा है।''

बेनर्जी उनके जीवन के हर महत्वपूर्ण अवसर पर मौजूद थे। ''मैं यह कभी नहीं भूलूंगा कि जब मैंने (डीजी के रूप में) मेरा सम्मेलन आयोजित किया, तब उनकी बेटी की शादी हो रही थी। लेकिन दूसरे दिन, सभी मेहमानों को घर पर छोड़कर, वह शाम की फ्लाइट से कोलकाता आए, अपना भाषण दिया और पुनः लौट गए।''

इस बात का उदाहरण देते हुए कि कैसे बेनर्जी का मार्गदर्शन उनके लिए कभी 'रोबीला' नहीं था, मेहता ने कहा कि पिछले कुछ सालों से बेनर्जी और ''वह फ़ोन पर बात करते आ रहे है हर दूसरे या तीसरे दिन। 80 प्रतिशत समय तो वह ही फ़ोन करते थे। लेकिन जिस दिन से मेरा चुनाव हुआ तब से उनका फ़ोन आना बहुत कम हो गया। यह उस इन्सान के बारे में बहुत कुछ बताता है। कोई दूसरा होता तो वह ज्यादा फोन करने लगता, लेकिन उन्होंने कम कर दिया, क्योंकि वह मुझपर उनकी मौजूदगी के होने का रोब नहीं जमाना चाहते, और इसके लिए मैं उन्हें सलाम करता हूँ!''

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

पोलियो के अंतिम मील के लिए विश्व नेताओं ने 2.6 बिलियन डॉलर का वचन दिया

रशीदा भगत

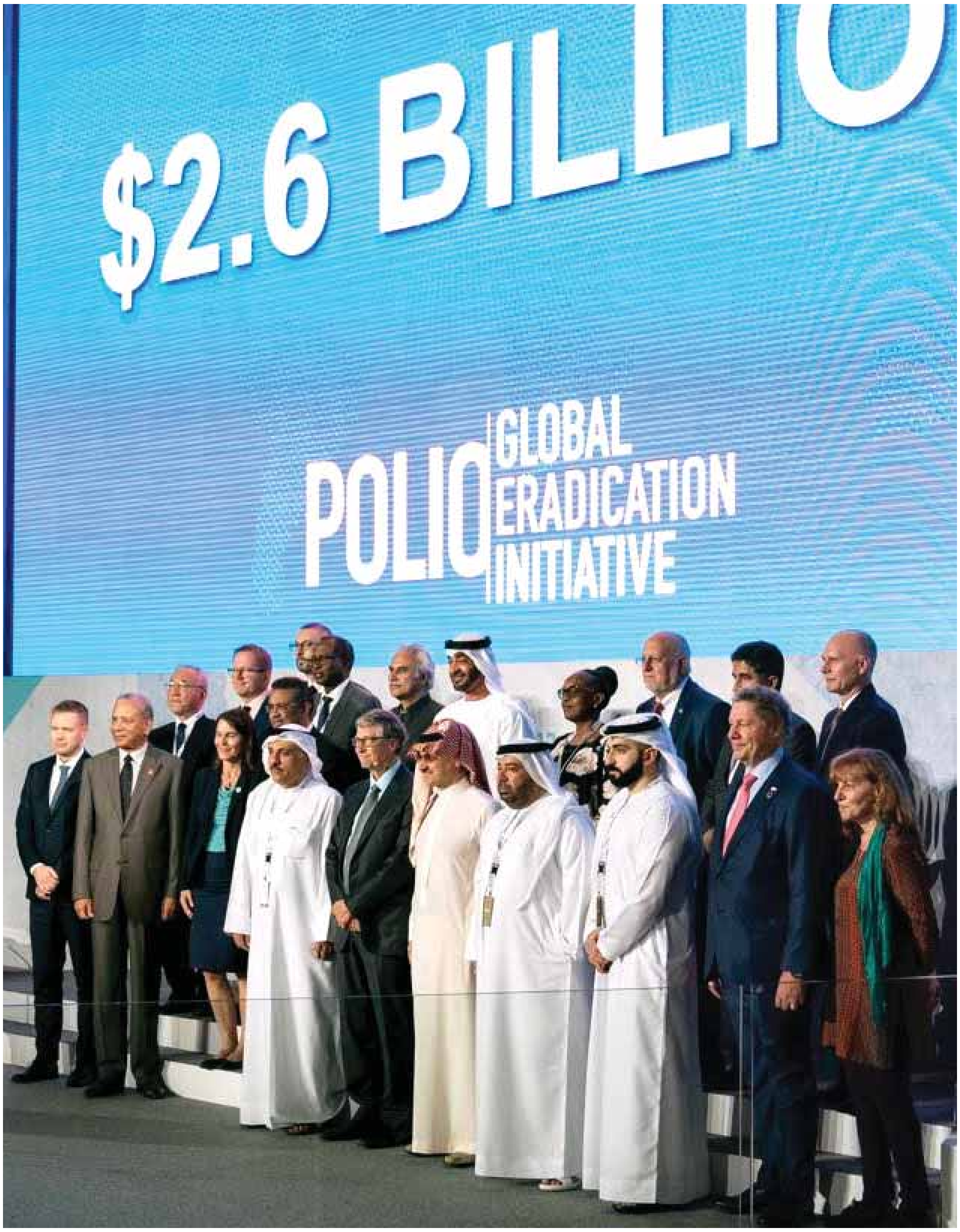

The Last Mile कार्यक्रम में वैश्विक नेताओं के साथ गेट्स फाउंडेशन के अध्यक्ष बिल गेट्स और TRF ट्रस्टी अध्यक्ष निर्वाचित के आर रवींद्रन।

विश्व की अनेक सरकारों और परोपकारी व्यक्तियों ने एक वैश्विक पोलियो उन्मूलन योजना के वित्तपोषण के लिए 2.6 बिलियन डॉलर का वादा किया है, जिसे उस मुकाम तक पहुँचने में दशकों लग गए जहाँ पहुँचकर वैश्विक स्वास्थ्य विशेषज्ञ उसे अब अंतिम पड़ाव कह रहे है।'' पोलियो को खत्म करने की रणनीति का समर्थन करने के लिए कुल 3.27 बिलियन डॉलर की आवश्यकता है।

वित्तपोषण, जिसमें गेट्स फाउंडेशन से प्राप्त 1.08 डॉलर शामिल है, का इस्तेमाल प्रति वर्ष 450 मिलियन बच्चों का टीकाकरण करने के लिए किया जाएगा।

कार्यक्रम, जिसमें वैश्विक नेताओं ने भाग लिया था, का सह-आयोजन आबु धाबी के युवराज शेख मोहम्मद बिन ज़ायेद और बिल एंड मेलिंडा गेट्स फ़ाउंडेशन द्वारा आलीशान लूव्र में किया गया था जो कि अरेबियाई प्रायद्वीप का सबसे बड़ा कला एवं सभ्यता संग्रहालय है जिसे फ्रेंच लूव्र के सहयोग से बनाया गया था। बैठक का आयोजन *रीचिंग द लास्ट माइल* नामक गोष्ठी के माध्यम से पोलियो उन्मूलन के लिए मूर्त रूप में समर्थन व्यक्त करने के लिए किया गया था।

''यह एक शांत एक-दिवसीय कार्यक्रम था जिसमें निमंत्रित किए गए व्यक्ति आ सकते थे और इसे मनोरंजन एवं अन्य विविधताओं जैसे तामझाम के बिना आयोजित किया गया था। स्वास्थ्य देखभाल और पोलियो से संबंधित क्षेत्रों पर वैश्विक विशेषज्ञों द्वारा आधिकारिक प्रस्तुतियों एवं चर्चाओं के साथ पूरे दिन केवल इस विषय पर ध्यान

बिल गेट्स, अबू धाबी क्राउन प्रिंस शेख मोहम्मद बिन ज़ायेद के साथ।

केंद्रित किया गया था,'' PRIP और रोटरी संस्थान के अध्यक्ष-निर्वाचित के आर रविन्द्रन ने कहा। उन्होंने कार्यक्रम में रो ई प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व किया और उनके साथ IPPC प्रमुख माइक मैकगवर्न और सदस्य जूडिथ डिमेंट, और पोलियो निदेशक कैरल पेंडक थे।

''बहु-प्रतीक्षित प्रतिज्ञा क्षण में विश्व नेताओं ने कुल 2.6 बिलियन डॉलर की राशि देने का वचन दिया।'' गेट्स फ़ाउंडेशन द्वारा 1.08 बिलियन डॉलर के वचन के अलावा, शेख ज़ायेद ने 160 मिलियन डॉलर देने का वचन दिया। ''अन्य बड़ी राशियाँ यूके सरकार की 514.8 मिलियन डॉलर की एवं यूएस सरकार की 215.92 मिलियन डॉलर की प्रतिज्ञाओं से आई। रोटरी पक्षसमर्थन ने कई सरकारों को इस कारण का समर्थन करने एवं धन देने के लिए राज़ी करने में अहम भूमिका निभाई है,'' रविन्द्रन ने *रोटरी न्यूज़* को बताया।

बिल गेट्स रोटरी की पोलियो जंग का समर्थन करते है

पोलियो को खत्म करने की पहल में रोटरी द्वारा निभाई गई अहम भूमिका का समर्थन किसी और ने नहीं बल्कि बिल गेट्स ने फोर्ब्स पत्रिका को दिये गए एक साक्षात्कार में किया है जहाँ उन्हें ''पोलियो के लिए प्रमुख धन देने वाले एवं धन एकत्रित करने वाले'' दोनों के रूप में सम्मानित किया गया था। पोलियो उन्मूलन के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनुदान संचयन प्रयासों का नेतृत्व करने का श्रेय रोटरी अंतर्राष्ट्रीय को देते हुये, गेट्स ने कहा, ''लगभग हर देश में, रोटरी के सदस्य है। और यह हमारे लिए बहुत उपयोगी है। उन सदस्यों की यह प्रतिबद्धता 1988 से चली आ रही है, उस समय से काफी पूर्व से जब गेट्स फ़ाउंडेशन की पोलियो की लड़ाई में कोई भी भागीदारी नहीं थी।'' विशेषतौर पर भारत, पाकिस्तान, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, यूनाइटेड स्टेट्स और यूनाइटेड किंगडम के रोटेरियन उनके राजनैतिक नेताओं को लिखकर एवं मिलकर बात करने में प्रभावी रहे है। ''और उन शुरुआती कुछ वर्षों में, बेशक, चीज़ें बहुत अच्छी तरह हुई और लोगों ने सोचा कि हम करीब पहुँच रहे है। इसलिए, यह अच्छी बात है कि वे इसमें लगे रहे, इसके बावजूद भी कि इसमें हमारी अपेक्षा से भी अधिक समय लग रहा है।'' रो ई की तरफ से 150 मिलियन डॉलर की प्रतिज्ञा करते हुये, रविन्द्रन ने कहा, ''वैश्विक पोलियो उन्मूलन पहल के अग्रणी साझेदार के रूप में, रोटरी पोलियो को खत्म करने के लिए लगभग 30 वर्षों से काम कर रही है। दुनियाभर के रोटेरियनों ने 122 देशों के 2.5 बिलियन से अधिक बच्चों का टीकाकरण करने के लिए 2 बिलियन डॉलर से अधिक का योगदान दिया है। सभी रोटेरियनों की तरफ से, मैं हमारे सतत, अविचल सहयोग को घोषित करते हुये अत्यंत उत्तेजित हूँ और पोलियो उन्मूलन प्रयास के

आयोजन को संबोधित करते TRF ट्रस्टी चेयर निर्वाचित के आर रविंद्रन।

लिए अतिरिक्त 150 मिलियन डॉलर देने का वादा करता हूँ।''

इससे पहले, सेंटर फॉर डीसीस कंट्रोल एंड प्रिवेंशन के निदेशक डॉक्टर रोबर्ट रे रेडफ़ील्ड जूनियर ने यूएस सरकार की तरफ से बोलते हुये रोटरी का शुक्रिया किया जब उन्होनें कहा ''1985 में, रोटरी अंतर्राष्ट्रीय दुनिया के हर बच्चे को पोलियो का टीका लगाने एवं एक पोलियो-मुक्त युग का सूत्रपात करने के लिए प्रतिबद्ध हुआ। उसने संभावना तलाशी और पोलियो को खत्म करने हेतु दुनिया का नेतृत्व किया। उन्हें विश्वास था कि वे मानव अवस्था पर एक अर्थपूर्ण प्रभाव डाल सकते है। उनके लिए, यह एक आकांक्षापूर्ण लक्ष्य नहीं था। यह एक विचारधारा थी - एक अटल विश्वास कि ऐसा होकर रहेगा।''

इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में भाग लेने के अलावा, रविन्द्रन और उनके दल ने गेट्स फ़ाउंडेशन, WHO के महानिदेशक, पाकिस्तान (जिसकी सरकार ने *द लास्ट माइल* के लिए 160 मिलियन डॉलर देने का वादा किया है) और अफ़ग़ानिस्तान के स्वास्थ्य मंत्रियों और जर्मनी, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया के प्रतिनिधियों के दलों के साथ आगामी चुनौतियों पर अनेक चर्चाएँ की।

WHO ने पहले घोषणा की थी कि तीन प्रकार के पोलियो वायरसों में से दूसरा दुनिया से खत्म हो चुका है। एक प्रैस नोट में, उसने कहा कि जबकि 1988 से, जब प्रति वर्ष 350,000 मामले सामने आ रहे थे, वैश्विक पोलियो मामलों में 99 प्रतिशत तक की गिरावट आई है, टाइप 1 पोलियो वाइरस अभी भी पाकिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान में स्थानिक बना हुआ है जहाँ इस वर्ष उसने 102 लोगों को संक्रमित किया है। यह 2017 के 22 मामलों के रिकॉर्ड निचले वैश्विक वार्षिक आंकड़े में आई एक बढ़त है।

नाइजीरिया - अफ्रीका का आखिरी देश जहाँ खतरनाक पोलियो का मामला सामने आया था - में 2016 से पोलियो का कोई मामला सामने नहीं आया है और पूरा अफ्रीकी क्षेत्र 2020 में खतरनाक पोलियो से मुक्त प्रमाणित किया जा सकता है।

''दुनिया के सबसे बड़े स्वास्थ्य जनबल की सहायता करने से लेकर, हर एक बच्चे तक टीका लेकर पहुँचने तक, वैश्विक पोलियो उन्मूलन पहल ना केवल हमें एक पोलियो-मुक्त दुनिया के करीब ला रही है, बल्कि यह अन्य स्वास्थ्य जरूरतों को संबोधित करने के लिए आवश्यक स्वास्थ्य आधारिक संरचना का भी निर्माण कर रही है,'' WHO महानिदेशक डॉक्टर टेड्रोस आधानोम घेब्रेयेसूस ने कहा।

अपने देशवासी और इथियोपिया के चैम्पियन मैराथन धावक अबेबे बिकीला का हवाला देते हुये, उन्होंने अबू धाबी कार्यक्रम में कहा कि जैसे मैराथन में आखिरी मील हमेशा सबसे कठिन होता है, उसी तरह पोलियो के मामले में भी ऐसा ही है और ''हम उसी आखिरी मील पर है।''

यूएई के अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता के राज्य मंत्री रीम अल हाशमी ने कहा, ''हमें अबू धाबी में ऋझएख प्रतिज्ञा पल की मेजबानी करने पर गर्व है और हम पोलियो के उन्मूलन हेतु उनकी निरंतर प्रतिबद्धता के लिए सभी उपस्थित लोगों का धन्यवाद करते है। 2014 में शुरू होने के बाद से, एमिरेट्स पोलियो कैम्पेन ने पाकिस्तान के सबसे दूरदराज़ इलाकों में 430 मिलियन से भी अधिक पोलियो के टीके पहुंचाए है। हम हर आखिरी बच्चे तक पहुँचने के अपने मिशन पर दृढ़ है और हमें विश्वास है कि एक साथ मिलकर हम पोलियो को अतीत के पन्नों में पहुंचा सकते है।'' ■

लगभग हर देश में, रोटरी के सदस्य है। और यह हमारे लिए बहुत उपयोगी है। उन सदस्यों की यह प्रतिबद्धता 1988 से चली आ रही है, उस समय से काफी पूर्व से जब गेट्स फ़ाउंडेशन की पोलियो की लड़ाई में कोई भी भागीदारी नहीं थी।

माइक्रोसॉफ्ट के संस्थापक **बिल गेट्स**

SERVICE ABOVE SELF

2020 B2B MEET

ROTARY CONNECTS THE WORLD

First of its Kind...First time in Pune....Soon in other Metros

Indias Biggest Rotary Business to Business Meet

This meet is for facilitating selling to or purchasing from a Rotarian. Assured integrity in business deals within Rotarian Brotherhood

26th & 27th February 2020

at Hotel Four Points By Sheraton
Opp Inorbit Mall, Nagar Road, Pune 411014

Rs. 35,000/-*

RESIDENTIAL PLAN

Cost includes stay for 3 nights (twin sharing) at the 5 star venue + 3 breakfasts + 2 lunches + 2 dinners each for the 2 people representing your organisation

Rs. 18,000/-*

NON RESIDENTIAL PLAN

Cost includes 2 lunches + 2 dinners each at the 5 star venue on the event days for the 2 people representing your organisation

*Plus GST@ 18%
Travel Costs to be borne by participants

Learn about products and Services within the Rotarian Businessmen Community thereby saving huge costs incurred on advertising / marketing / aquiring know-how

Information Technology
Hardware, Software & Systems

Construction
Materials / Interiors / Architects

Energy
Gas / oil / Solar / Electricals

Electronics
Products / Appliances / Gadgetry

Services
Consultants / Marketing / Finance

Medical
Pharma / Instruments / Hospitals

Hospitality
Hotels / Restaurants / Products

Automobiles
Manufacturers / Ancillary / Parts / Services

Manufacturing
Mechanical / Material Handling / Processes

Food
Raw Material / Machinery / Packaging

Industrial Supplies
Uniforms / Safety & Security Equipment

Government Supplies
Miscellaneous

Meet & interact with Rotarians from all over India

Organised by

Rotary Club of Pune Far East
Dist. 3131 Club No. 30952

In Association with :

THE TIMES OF INDIA

RMB

Theta : +91 9823011145

For details Call us on +91 72494 16788 or email us at rotaryb2bpune@gmail.com

ब्रिटेन के लिये कंटेनर में प्रवासीयों की तस्करी:
फ्लैशबैक 25 वर्ष पूर्व

विनय कामथ

मुझे और साथी पत्रकार को छद्म वेश में, दूसरे देश में शरण चाहने वालों की भूमिका में, अवैध प्रवासियों का साक्षात्कार करना था, जो कंटेनर में बेल्जियम से यूके जा रहे थे। सुनने में तो बहुत सरल लग रहा था पर हमें मालूम नहीं था कि हम किस मुसीबत में पड़ने वाले हैं। 23 अक्टूबर को एसेक्स के एक कंटेनर में 39 लोगों के मृत पाए जाने की दुखद खबर याद दिलाती है कि महाद्वीप से ब्रिटेन में अवैध प्रवासियों की तस्करी अभी भी जारी है। इस त्रासदी से 25 साल पहले की घटना याद आ गई, जब मेरी नियुक्ति ब्रिटेन और ब्रुसेल्स में हुई थी, जहां मुझे एक ऐसे अनैतिक गिरोह का पर्दाफाश करने का काम मिला था, जो मानव तस्करी के लिए कंटेनरों का प्रयोग कर रहे थे।

बात 1995 की है। मैंने *कुक रिपोर्ट* के बारे में कभी नहीं सुना था और यह भी मालूम नहीं था कि यह एक जासूसी कार्यक्रम था जिसे यूके में टेलीविजन पर लाखों लोग देखते थे। सेंट्रल टेलीविज़न द्वारा प्रसारित, इंडिपेंडेंट टेलीविज़न नेटवर्क (ITN) का एक अंग, इसे बर्मिंघम स्थित टीवी न्यूज़ चैनल पर, रॉजर कुक द्वारा प्रस्तुत किया जाता था, वो एक हट्टा-कट्टा, दबंग ऑस्ट्रेलियाई था जिसके बेबाक़ और भड़काऊ तरीके से लोग अक्सर आवेशित हो जाते थे, उस आधे घंटे के कैप्सूल ने बहुत सारे दर्शकों को आकर्षित किया था। कुक का जोर, आलोचनात्मक पर प्रभावशाली और सबसे पहले हाथ लगने वाली खबरों पर रहता था, जिसमें अक्सर भेष बदल कर और गुप्त रूप से उन अव्यवस्थाओं का फिल्मांकन शामिल होता था, जिसके अंत में कुक नाटकीय रूप से मसंदिग्धफ को फिल्म में सबूत के साथ पेश करते थे। अप्रत्याशित रूप से, उन्हें अपने कार्यक्रम में निशाना बनाये गए लोगों द्वारा डराया, धमकाया गया और पिटाई भी की गई।

ब्रिटिश विदेश मंत्रालय की छात्रवृत्ति के तहत (शेवेनिंग यंग जर्नलिस्ट फैलोशिप) इस लोकप्रिय टीवी शो के साथ, मुझे और हरिंदर बावेजा को, उस समय *इंडिया टुडे* पत्रिका के साथ, उस कहानी में सहायता करने के लिए हम दोनों को आईटीएन में नियुक्त किया गया था, जिस कहानी पर *कुक रिपोर्ट* महाद्वीप से ब्रिटेन में आव्रजन के अवैध प्रवेश पर काम कर रहा था। इन प्रवासियों में अधिकांश एशियाई थे, लेकिन काफी संख्या पूर्वी यूरोप से भी थी। अंग्रेजी तट पर डोवर के माध्यम से विशाल कंटेनर-ट्रेलरों पर प्रवासियों की तस्करी की जाती थी। ट्रेलरों पर ब्रिटिश ड्राइवर और ब्रिटिश नम्बर का होना ज़रूरी थी। हर रोज़, एक के बाद एक, हज़ारों ट्रकों के आवागमन के कारण, उन्हें रोकने की संभावना बहुत कम थी।

कार्यक्रम के अनुसंधान करने वालों को बर्मिंघम में ऐसे ही एक नेटवर्क की उड़ती खबर मिली जिसमे एक एंग्लो-कैरिबियन और एक भारतीय संलग्न थे। ITN ने दो लोगों को तैयार किया, जो ड्राइवर बन कर सीमा पार से एक ट्रक लाने के लिए राजी हो गए।

कुर्द शरणार्थी से संबधित, छोटे एलन कुर्दी का मृत शरीर मध्य सागर, तुर्की के समुद्र तट पर।

योजना थी कि पूरे ऑपरेशन को फिल्माने और ब्रिटिश अधिकारियों को दिखाने के लिए गुप्त कैमरों के साथ एक ट्रक का प्रयोग किया जाये जिसमें निर्बाध चल रहे मानव व्यापार का पर्दाफाश करें। प्रत्येक ड्राइवर को करीब 6,000 पाउंड की पेशकश की गई थी, जबकि प्रवासियों को पार करने के लिए 1,800-2,000 पाउंड तक देने पड़ते थे। सैकड़ों की तस्करी की वजह से, ठगी का यह धंधा बढ़िया था। ये और बात है कि वहां पहुँचने तक गरीब प्रवासीयों का सब कुछ छीन जाता था जिसे वो स्वर्ग समझते थे।

ब्रुसेल्स में साहसिक कारनामा

द कुक रिपोर्ट चीजों की तह तक पहुँचने में पाउंड की कोई कमी नहीं छोड़ रही थी। इसने एक विशाल ट्रेलर को किराये पर लिया जिसे उसके द्वारा प्रलोभन दिए गए ड्राइवर गिरोह के लिए चलाते थे। ट्रक में गुप्त कैमरे और माइक्रोफोन लगे हुए थे और अंदर निगरानी रखने के लिए ड्राइवरों के सामने मॉनीटर्स रखे थे । चूंकि ज्यादातर अप्रवासी पाकिस्तानी या भारतीय थे, इसी लिए हरिंदर और मैं वहां पहुँच गए। हमें अप्रवासी की तरह दिखना था, उपकरणों से लैस इस ट्रक पर सवार हो कर दूसरों का साक्षात्कार करना था, तब इस पर फिल्म बनाई जाती। इस का उद्ध्येश्य गिरोह की अंदरूनी जानकारी लेना था, जिसके तार दूर तक पाकिस्तान और भारत में फैले हुए थे। सुनने में काफी आसान लग रहा था। हमें नहीं पता था कि हम किस चीज से टकराने वाले थे।

हम ब्रुसेल्स, बेल्जियम के लिए निकल पड़े, जहाँ अधिकांश प्रवासियों को उस पार जाने से पहले इकट्ठे होते थे। यूरोपीय संघ की राजधानी भ्रामक रूप से शांत नज़र आ रही थी। शहर में बीसियों पाकिस्तानी और भारतीय थे (ज्यादातर पंजाब और कश्मीर से) जिन्हें राजनीतिक शरण मिली हुई थी। इनमें से कई रात में दुकानें चलाते थे जो देर तक खुली रहती थीं, इसकी सराहना बेल्जियन लोग भी करते थे। इसलिए, एक सुरक्षित ठिकाना ढूंढने में ज़्यादा दिक्कत नहीं हुई, कई शरणार्थी कुछ हज़ार क्विड ले कर अपने अभागे भाइयों को ब्रिटेन भेजने का धंधा कर रहे थे।

ITN ने हमें जिस नेटवर्क गिरोह से जोड़ना चाह रहे थे, उसका सरगना एक बेल्जियन व्यक्ति था जो जम कर मोटा पैसा कमा रहा था।

उस सप्ताह ब्रुसेल्स में हमने दोहरी ज़िंदगी जी । एक असल में अपनी तरह, आरामदायक होटल में और बाहर निकलने के बाद उस फटीचर प्रवासी की जो यूके जाने को बेताब है, जहां हमारे रिश्तेदार रहते थे और नौकरी दिलवाने में हमारी मदद करेंगे। असली दिखने के लिए हरिंदर भारतीय परिधान में रहती थी।, रात में हम दुकानों के चक्कर काटते थे, ज़्यादातर दुकाने पाकिस्तानियों की थीं और अपनी दुःख भरी कहानी जो हर बार सुनाने के बाद और सजीव होती जा रही थी।

दुःख भरी विश्वसनीय कहानी

मैं एक दक्षिण भारतीय था जो मद्रास से दिल्ली आ कर, राजेंद्र प्लेस में एक दलाल के दफ्तर में काम करता था, जहाँ हरिंदर, एक पंजाबी, टाइपिस्ट की नौकरी करती थी। माँ-बाप के खिलाफ जा कर हमने शादी कर ली और तकलीफों से बचने के लिए घर से भाग निकले। हमारे मित्र ने हमें यूके बुलाया था और नौकरी दिलाने का वादा किया था। पर हमारे वीजा आवेदन निरस्त कर दिए गए, इसलिए हमने तस्करी के ज़रिये यूके पहुँचने का फैसला किया।

हमने एक काल्पनिक एजेंट चड्ढा गढ़ा, पोलैंड का एक निर्मम पंजाबी, रोमानिया जहां हम उतरे थे, वहां से इस महाद्वीप तक वो हमें तस्करी के ज़रिये लाया था। और ब्रसेल्स में, उसने ज़्यादातर पैसे और हमारे पासपोर्ट छीन लिए थे, हमें एक होटल में छोड़ने के बाद उसने कहा कि वो हमें इंग्लैंड भेजने की व्यवस्था करने जा रहा था फिर लौटा ही नहीं, गायब हो गया।

जाहिर है कि हमारी दुःख भरी दास्ताँ आराम से उनके गले उतर गई। सिर्फ भारतीय होने के नाते, ब्रसेल्स में, ऐसे कई तथाकथित एजेंटों से मिलना आसान था जो हमारी तस्करी करने के लिए तैयार थे। उसका तरीका या तो ट्रेलर में तस्करी करके था या फिर नकली पासपोर्ट के साथ। इस अभियान का पटाक्षेप करने के लिए, मेरी कमीज की जेब में एक पेपरमेट का पेन पड़ा था, जो वास्तव में एक माइक्रोफोन था और बातचीत रिकॉर्ड करने के लिए जैकेट में एक छोटा टेप अटका रखा था।

हमें नहीं लगता था कि ये सब इतनी जल्दी संभव हो जाएगा। इससे पहले कि हम इस के बारे में पूरी जानकारी जुटाते, संदर्भों और फोन नंबरों के माध्यम से, हम उन एजेंटों से बात कर रहे थे जो हमें 1,800 पाउंड की भारी भरकम राशि लेकर हमें भेजने के उत्सुक थे, जब तक उन्हें हमारे पास पैसे नज़र आएं। इसका तरीका बिलकुल सीधा था - एक बार जब एजेंट को यूके में किसी व्यक्ति से पुष्टि मिलती जो मोटी राशि देने के लिए तैयार था, तो एजेंट अप्रवासियों को एक सुरक्षित घर में भेज देता था ताकि वे भाग नहीं सकें। और एक बार जब उस पार चले गए, तो यूके के दोस्त को ऐसे ही एक सुरक्षित घर में आना पड़ता, जो पैसे दे कर प्रवासी को अपने संरक्षण में ले लेता। यदि पैसे नहीं मिलते तो वो बेचारे आप्रवासियों पर भड़कता था जिन्हें अंततः निर्वासित किया जाएगा।

स्टिंग ऑपरेशन

हमारा सबसे अच्छा दांव था एंटवर्प का एक एजेंट तुसावर शाह, जिसने बड़े निर्लिप्त भाव से हमें बताया कि वह हमें आसानी से यूके भेज सकता है। जल्द ही हम ब्रसेल्स से एक कार में एंटवर्प भागे जो *द कुक रिपोर्ट* की शोधकर्ता सिल्विया जोन्स ने किराए पर ली थी। दिन में, इससे पहले, बर्मिंघम से (जहां सेंट्रल टीवी स्थित है) एक तकनीशियन, डेविड रात में ड्राइव करके आया था। डेविड ने मेरी छाती पर एक माइक्रोफ़ोन टेप से बांधा, और धीरे से फुसफुसाया, ये बाल भरी छाती पर कैसे चिपकेगा। तार मेरी कमीज के अंदर से निकाला और बैटरी मैंने अपनी जींस की जेब में छिपा दी।

डेविड के पास चमड़े का बैग था जिसमें और भी उपकरण थे, इतना फटा पुराना जिस पर कोई दुबारा नजर भी नहीं डाले। बैग की एक जेब में एक टूथपेस्ट ट्यूब जितना छोटा सा कैमरा छुपा रखा था, छेद वाली जगह लेंस लगा था, इतना छोटा कि आपको लेंस की झलक भी नहीं मिल सके भले ही आप बैग से छह इंच दूर खड़े हों। मुख्य भाग में एक छोटा सोनी मॉनिटर और रिकॉर्डर था, एक घंटे की टेप के साथ (यह डिजिटल युग से पहले का ज़माना था) और तीसरे भाग में रिकॉर्डर के लिए बैटरी रखी थी। रिकॉर्डर में एक छोटा ट्रांसमीटर रखा था जिससे कार में बैठकर डेविड हमारी बातचीत सुन सकता था।

इस उपकरण से लैस हो कर, एंटवर्प पहुँचने के बाद हरिंदर ने कार फोन से शाह को फोन

किया और कहा कि हम ट्रेन से ब्रसेल्स पहुंच गए थे। एक कैब लेकर हम उसके अपार्टमेंट पहुंचे। प्रवेश करने से ठीक पहले, मैंने रिकॉर्डर चालू कर दिया और अंदर से घबराये हुए, हम ऊपर गए। भोले भाले तमाशाई बन कर बाहर खड़े सिल्विया और डेविड ने कहा कि अगर लगे की फंस गए हैं तो सिर्फ माइक्रोफ़ोन में चिल्लाना होगा। एक बार अंदर पहुँचने के बाद, शाह के साथ हमारी सबसे विस्फोटक बातचीत हुई।

मेरी हिंदी पर शक हो सकता था इसलिए अधिकतर बातचीत हरिंदर ने की, शाह जमीन पर एक गद्दे पे बैठा था और मेरे लिए अपने बैग को अपने घुटने पर रख कर कैमरे का मुंह उसकी तरफ रखना सरल था। शाह ने कहा कि वह पीओके (पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर) से आया था और कुछ साल पहले ही ब्रसेल्स में शरण ली थी। अगर यूके में हमारे दोस्त पैसे देने को तैयार हों तो वह हमें उस पार ले जाने के लिए तैयार था। हमारी दुःख भरी कहानी से प्रभावित होकर उसने 1,800 पाउंड की फीस पर छूट भी दी।

बाल बाल बचे

शाह ने बार बार आश्वस्त किया कि चिंता की कोई बात नहीं, ट्रक में हमें कोई नहीं पकड़ेगा। हमारे अंदर बढ़िया शिकार की बू सूंघते हुए, उसने हमें अपने साथ रहने का प्रस्ताव भी दिया। लेकिन शाह खतरनाक लग रहा था। कहीं उसे पता चल गया कि मेरे पास एक गुप्त कैमरा है, बहुत संभावना थी कि हम दोनों के गले वहीं पर काट देगा। उसने हमें बढ़िया खाना खिलाया साथ में सूखे मेवे भी। कुछ तनावपूर्ण क्षण भी गुजरे जब उसने यह जानने पर जोर दिया कि हम ब्रसेल्स में कहाँ ठहरे थे। हमने होटल के टैरिफ की जानकारी नहीं ली थी और वह हैरान था कि हमें ब्रसेल्स में इतना सस्ता होटल कहाँ मिल गया। खैर, हम सही सलामत निकल आये।

बाहर निकलने के बाद, बहुत राहत महसूस की, हम जल्दी से टैक्सी पकड़ कर स्टेशन पहुंचे, जहाँ सिल्विया और डेविड से उनकी कार में मुलाक़ात होनी थी। उन तनावपूर्ण क्षणों के बाद, मुझे बस एक पब में लू के लिए जाना था। जब मैं बाहर आया, तो डेविड के चेहरे पर बड़ी सी मुस्कुराहट थी। मैंने आपको सुना, उन्होंने कहा।

सैकड़ों की तस्करी की वजह से, ठगी का यह धंधा बढ़िया था। ये और बात है कि वहां पहुँचने तक गरीब प्रवासीयों का सब कुछ छीन जाता था जिसे वो स्वर्ग समझते थे।

मैं माइक्रोफोन और ट्रांसमीटर को बंद करना तो भूल ही गया था!

फोन पर कई बार टेप की गई बातचीत और बैठकों के बाद, हम एक काफी सुरक्षित गिरोह का पर्दाफ़ाश करने में कामयाब हो गए। पंजाब से अवतार सिंह राणा, जिसने हमें विश्वास दिलाया कि हिन्दुस्तानी भाई होने के नाते वह हमारे लिए नकली पासपोर्ट की व्यवस्था करेगा ताकि हम उस पार चले जाएं (याद है, 'चड्ढा' हमारे पासपोर्ट ले कर भाग गया था!)। सिल्विया की ख्वाहिश थी कि शाह हमें उस कंटेनर पर भेजे जो सीधे यूके जा रहा हो और ITN शाह के एजेंट को हमारी सम्भावित रिहाई के पैसे दे कर हमें छुड़वा ले। लेकिन, हम ऐसा नहीं कर सकते थे क्योंकि हम ब्रिटिश सरकार की FCO छात्रवृत्ति पर थे और हमारे बेल्जियम का वीजा लगभग समाप्ति पर था और तब हम वास्तव में अवैध अप्रवासी बन जाते!

बाद में, हमारे बताये तरीके से, ITN में एक पाकिस्तानी इंजीनियर था, जो ब्रिटिश नागरिक था, उसने भी एंटवर्प में शाह से संपर्क किया। अपनी दुख भरी कहानी सुना कर, उसे एक दोस्त के साथ एक ट्रक पर तस्करी से लाया गया, वैसे ही जैसे ITN ने कैमरे और अन्य उपकरण फिट किये थे और जहां उसकी जगह हमें होना चाहिए था (वो ऑपरेशन जो असफल रहा था)। पाकिस्तानी तारिक, अपने साथ एक गुप्त कैमरा ले गया था, लेकिन दुर्भाग्य से बैटरियां ख़त्म हो गईं, इसलिए उन्हें ट्रक की वास्तविक क्रॉसिंग का कोई फुटेज नहीं मिल सका। लेकिन 22 घंटे तक दर्जनों अन्य प्रवासियों के साथ उसे ट्रक में बिना किसी भोजन या पानी के हिरासत में रखा गया। सेंट्रल टीवी ने यूके में एजेंटों से संपर्क स्थापित किया और उसकी रिहाई पर 2,000 पाउंड खर्च किये।

लाखों दर्शकों ने टेलीकास्ट देखा

यूके में आईटीएन नेटवर्क पर अप्रवासियों पर कुक का कार्यक्रम 23 मई, 1995 को प्रसारित किया गया था। ब्रिटेन में करीब साढ़े आठ लाख दर्शकों ने इसे देखा। इसके बारे में मेरी आशंकाओं के बावजूद कि यह एक प्रवासी विरोधी कार्यक्रम है जो कहता है कि मये लोग आ रहे हैं और हमारी नौकरियां खा रहे हैंफ़ यह ब्रिटेन में आए उन प्रवासियों के लिए काफी सहानुभूतिपूर्ण था। इसने यूके में उनके शोषण और मजदू री की जगह के बारे में चर्चा की थी। उनके मन में हमेशा निर्वासित किये जाने का डर समाया रहता था। फिल्म पर बर्मिंघम में अपने अंदाज़ में कुक, एंग्लो-कैरेबियन और भारतीय से भिड़ गए। पहले व्यक्ति ने बड़ी शान्ति से प्रतिक्रिया दी और कहा कि सबूतों के बारे में वह कुक से वापस संपर्क करेगा (जब वे दोनों ड्राइवरों के साथ बातचीत कर रहे थे उन्होंने दोनों को गुप्त रूप से फिल्माया था जिसे ITN ने गढ़ा था)। भारतीय ने तो बड़ी हिंसक प्रतिक्रिया की और धमकी दी कि वह कुक को देख लेगा।

मेरे द्वारा लिए गए तुसावर शाह के कुछ गुप्त फुटेज कार्यक्रम में दिखाए गए थे। लेकिन अजीब बात है कि अंग्रेजी कानून के विपरीत, बेल्जियम के कानून, पुलिस को मीडिया के साथ सहयोग करने या मीडिया रिपोर्टों का संज्ञान लेने की अनुमति नहीं देता। मुझे नहीं पता कि उन्होंने तुसावर शाह के खिलाफ जांच शुरू की या नहीं। मेरे लिए, खतरों से जूझने और ब्रसेल्स में दोहरी ज़िंदगी गुजारने के बाद, लंदन में मघर पहुंचनाफ और अपनी छात्रवृत्ति जारी रखना बड़ी राहत की बात थी। तुसावर शाह ने दावा किया था कि उसके हाथ लम्बे थे। उसने पोलैंड में हमारे काल्पनिक चड्ढा से पैसे वापस दिलवाने की पेशकश भी की थी। अगर वह अभी भी अप्रवासी-तस्करी के धंधे में है, तो मुझे पूरा यकीन है कि उसके लम्बे हाथ भारत तक नहीं पहुंचेंगे!

© द हिंदू बिजनेसलाइन; लेखक अखबार के वरिष्ठ सह-संपादक है।

पटना में कैंसर डायग्नोस्टिक सुविधा

टीम रोटरी न्यूज़

पटना मिडटाउन के रोटरी क्लब, रो ई मंडल 3250 ने पटना के सवेरा कैंसर एंड मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पीटल में आर.एस. कैंसर डायग्नोस्टिक सेंटर स्थापित किया। रो ई मंडल कमल संघवी जिन्होंने हाल ही में सुविधा का उद्घाटन किया, रोटेरियन की इस पहल के लिए उनकी प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि – ''आपने कैंसर के सफल इलाज के लिए उसकी शुरूआती पहचान के महत्व को समझा है। यह नई सुविधा निःसंदेह कई लोगों की जान बचाएगी और यह सुविधा विशेष रूप उन आर्थिक रूप से कमजोर समुदायों के लिए वरदान है जिनके लिए कैंसर का निदान और उसका उपचार करना एक दूर का सपना है।''

पीडीजी विवेक कुमार ने कहा कि इस ग्लोबल ग्रान्ट प्रोजेक्ट को सन् 2017-18 में उनके कार्यकाल के दौरान आरंभ और अनुमोदित किया गया था और यह प्रोजेक्ट उनका एक ड्रीम प्रोजेक्ट था।

RID कमल संघवी (केंद्र) के साथ (बायें से): सुनीत चंद्रा, PDG विवेक कुमार, DG गोपाल खेमका, अविता खेमका, क्लब के अध्यक्ष मनोज गुप्ता और डॉ आर एन सिंह।

डीजी गोपाल खेमका ने विवेक और क्लब के पिछले अध्यक्ष सुनीत चंद्रा को इस सुविधा को वास्तविकता में परिणत करने के लिए उनको धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में डीजीई राजन गंडोत्रा, डीजीएन प्रतिम बनर्जी, क्लब के अध्यक्ष मनोज गुप्ता, और सचिव गौरव प्रशांत उनके बीच उपस्थित थे।■

सम्मेलन

मिठाई वाला द्वीप

हैंक सार्टिन

जब आप 5-10 जून को रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन के लिए होनोलूलू में हैं तो मिठाई के लिए कमरा सुनिश्चित करे लें क्योंकि हवाई द्वीप में आपके के लिए कुछ मीठे पकवान (मिठाई) स्टोर करने के लिए हैं।

शेव आइस (इसे शेवड आइस या स्नो कोन कहना, इसे प्रकट करने का एक क्विक वे है कि आप यहां से नहीं हैं) को जापानी प्रवासियों के द्वारा हवाई के लोगों से परिचित करवाया गया था। जमे हुए जापानी पकवान से प्रेरित होकर जिसे *काकीगोरी* कहा जाता है, यह हाथ से काटे गए बर्फ के टुकड़े हैं, नाजुक क्रिस्टल के माउंडस बनाने के लिए और फिर उसमें ट्रॉपिकल फ्रूट्स के रसों से फ्लेवर्ड किया जाता है।

इन दिनों, आमतौर पर आइस (बर्फ) का शेप मशीनों द्वारा दिया जाता है और अक्सर इसे आइसक्रीम के साथ अतिरिक्त फ्लेवर की परत के साथ इसे परोसा जाता है। फ्लेवरस में स्थानीय पसंदीदा फल जैसे पपीता, लीची और अनानास से लेकर और अधिक विदेशी फल (हवाई के लिए) ब्लैक चेरी, सेब और चॉकलेट शामिल होते हैं।

यदि आपको फ्राइड डोनट में अधिक स्वाद आता है तो आप *मालासादा* का स्वाद ले सकते हैं, जो पुर्तगाल के प्रवासियों के द्वारा द्वीपों में लाई गई थी। हवाई द्वीप में, इन स्वादिष्ट यीस्ट डोनट में (बहुत से अंडे, मक्खन और कभी-कभी जमा हुआ या फ्रेश मिल्क के साथ) कस्टर्ड, कोकोनट पुडिंग, चॉकलेट पुडिंग और अमरूद पुडिंग भरी जाती है।

जो भी मिठाई या पकवान आपको पसंद है, आप विभिन्न दुकानों से कई वेरायटी का नमूना लेने की कोशिश करें। कई मिठाइयों में अपना विशेष जायका और भराव होता है।

HONOLULU HAWAII 2020

2020 होनोलुलु कन्वेंशन में भाग लेने के लिए 15 दिसम्बर से पहल
riconvention.org
पर पंजीकरण करें।

एशिया पैसिफिक रोटरी पत्रिका के संपादकों ने रणनीतिक मुद्दों पर की

वी मुत्तुकुमारन

रोटेरियनों एवं अन्य लोगों के मध्य अपनी पहुँच का विस्तार करने हेतु क्षेत्रीय रोटरी पत्रिकाओं की विषय वस्तु, डिज़ाइन और दृश्य आकर्षण पर एक ऑडिट रिपोर्ट कार्ड के सामने आने की संभावना है। रो ई की ग्लोबल कम्युनिकेशन टीम के अध्यक्ष डेविड एलेग्जेंडर ने कहा कि वार्षिक रिपोर्ट में 2020-21 में कराये जाने वाले एक पाठक सर्वेक्षण से प्राप्त प्रतिपुष्टियों पर भी विचार किया जायेगा ताकि अभिदाताओं के मनोभाव एवं विचारों को समझा जा सके।

रोटरी न्यूज़ पत्रिका, भारत, द्वारा चेन्नई में आयोजित किये गए दो दिवसीय एशिया-पैसिफिक रीजनल एडिटर्स सेमीनार में एक प्रस्तुतीकरण के दौरान उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय पत्रिकाओं की आगामी लाइसेंसिंग समीक्षा दो साल के कार्यकाल वाले एक सलाहकार बोर्ड को सुझाव देगी जो पत्रिकाओं के माध्यम से रोटरी की सार्वजनिक छवि को मजबूत करने के लिए नीतिगत दिशानिर्देशों एवं पहलों को लाएगी।

रोटरी की नई सामरिक कार्य नीति पर प्रकाश डालने वाली एक संचार अपडेट को प्रस्तुत करते हुये, उन्होंने कहा कि पत्रिकाओं को विस्तृत एवं स्थायी प्रभाव वाली परियोजनाओं पर प्रकाश डालने वाली सामग्रियों के साथ ''बाहरी दर्शकों को आकर्षित करके भी उनके प्रभाव एवं पहुँच को बढ़ाने की आवश्यकता है।''

''रोटरी पत्रिकाओं को आगे ले जाने के लिए हमें प्राथमिकताओं की एक सामान्य सूची के साथ एक सही संचार पहुँच एवं सामग्री की रणनीति की आवश्यकता है। तकनीक, जनसांख्यिकी, सामाजिक एवं प्रतिस्पर्धी कारक जैसे बाहरी कारकों के साथ-साथ स्थिर सदस्यता, जटिल पदानुक्रम, कार्यकाल आधारित सेवा बनाम कौशल आधारित दक्षता की द्विविधता, निरंतरता की कमी और एक पोलियो मुक्त विश्व जो हमें बैठकर आगे की चुनौतियों के लिए तैयार होने देता है, जैसे आतंरिक चालक भी है,'' एलेग्जेंडर ने विस्तारपूर्वक कहा।

संपादकों से ज़ोरदार तरीके से रोटेरियनों की 'पीपल ऑफ़ एक्शन' की छवि को अपनाने एवं

रोटरी पत्रिकाओं को आगे ले जाने के लिए हमें प्राथमिकताओं की एक सामान्य सूची के साथ एक सही संचार पहुँच एवं सामग्री की रणनीति की आवश्यकता है।

डोना कोटर
रो ई क्षेत्रीय पत्रिकाओं की समन्वयक

प्रसारित करने का आग्रह करते हुए, उन्होनें कहा: ''एक साथ मिलकर हम एक ऐसी दुनिया देखते है जहाँ लोग मिलकर दुनिया भर में, हमारे समुदायों में और स्वयं में एक स्थायी परिवर्तन लाने हेतु काम करते है।''

सामरिक प्राथमिकताएं

आगे की चुनौतियों पर ध्यान देते हुए, एलेग्जेंडर ने कहा कि इनमें सदस्यता को बढ़ाना, पोलियो विरासत का लाभ उठाना, प्रभावपूर्ण परियोजनाओं की रिपोर्टिंग करना; विविधता, सदस्य भागीदारी और रोटरी में नए चैनलों के निर्माण पर ज़ोर देते हुए पहुँच को विस्तृत करना; और शोध, नवप्रवर्तन को अपनाना एवं जोखिम लेना शामिल है। रणनीतिक समिति की विवेचनाओं ने आग्रह किया कि ''हमें क्लब स्तर से ही हमारे बुनियादी ढांचे को बदलना होगा। हमारे प्रथम वर्ष की पहलें रोटरेक्ट (और रोटरेक्टरों) को ऊपर उठाने और इस रोटरी वर्ष के अंत तक प्रशिक्षण के लिए ऑनलाइन उपकरणों को विकसित करने पर होगी। रोटरेक्टरों पर एक

रो ई की ग्लोबल कम्युनिकेशन टीम के अध्यक्ष डेविड अलेग्ज़ेंडर, और क्षेत्रीय पत्रिकाओं की समन्वयक डोना कोटर।

प्रभावी डेटाबेस होने के अलावा, हमें उनमें से लगभग 250,000 को क्लब स्तर पर रोटरी में व्यस्त रखने की आवश्यकता है,'' उन्होंने कहा।

क्षेत्रीय पत्रिकाओं को एक सार्वजनिक छवि दल को नियुक्त करने, उनकी कहानियों में पीपल ऑफ़ एक्शन के सन्देश को एक महत्वपूर्ण मिशन के रूप में अपनाने और ब्रांड सेंटर पर ऑनलाइन उपकरणों का बेहतर उपयोग करने की आवश्यकता है, उन्होंने

> पत्रिकाओं को सामग्रियों के प्रतिपादन एवं डिज़ाइन प्रक्रियाओं के गुणवत्ता मानकों का अनुपालन करना होगा।
>
> **डेविड अलेग्ज़ेंडर**
> रो ई ग्लोबल कम्युनिकेशन टीम अध्यक्ष

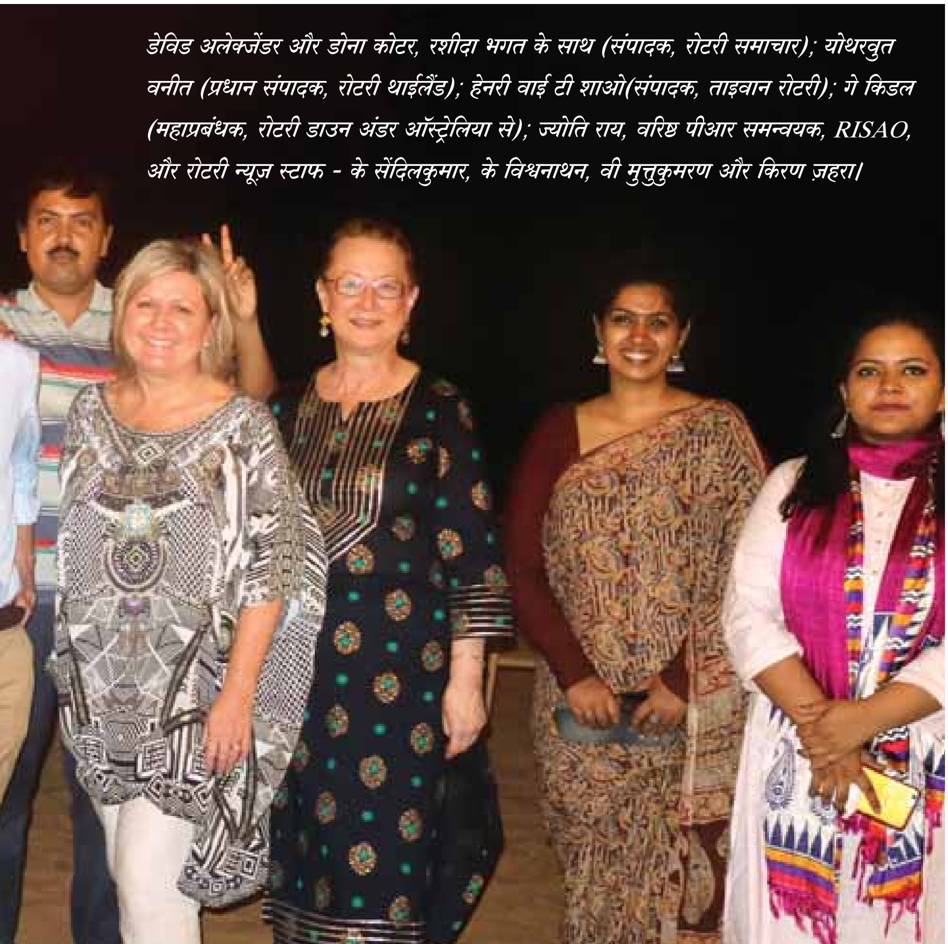

डेविड अलेक्जेंडर और डोना कोटर, रशीदा भगत के साथ (संपादक, रोटरी समाचार); योथरवुत वनीत (प्रधान संपादक, रोटरी थाईलैंड); हेनरी वाई टी शाओ(संपादक, ताइवान रोटरी); गे किडल (महाप्रबंधक, रोटरी डाउन अंडर ऑस्ट्रेलिया से); ज्योति राय, वरिष्ठ पीआर समन्वयक, RISAO, और रोटरी न्यूज़ स्टाफ - के सेंदिलकुमार, के विश्वनाथन, वी मुत्तुकुमरण और किरण ज़हरा।

कहा। ''रोटरी के साथ उसके संबंध का विस्तार करने के लिए गेट्स फाउंडेशन के साथ बातचीत चल रही है और अगली अंतर्राष्ट्रीय सभा में एक घोषणा की जाएगी। और 2020 के मध्य तक विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अफ्रीका को पोलियो मुक्त प्रमाणित करने की पूरी तैयारी कर ली है। रोटरी क्लबों को उनके समुदायों के साथ पोलियो की सफलता की कहानियों को साझा करना चाहिए।''

नई लाइसेंस समीक्षा

नई लाइसेंस समीक्षा की एक प्रमुख विशेषता यह है कि रोई बोर्ड से अनुमति मिलने के बाद प्रकाशकों को पत्रिकाओं को खुदरा दुकानों पर बेचने की अनुमति मिलेगी। ''पत्रिका की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए सलाहकार बोर्ड दिशानिर्देश एवं सूचनाएं ज़ारी करेगा। डोमैन और यूआरएल मानकीकृत किये जाएँगे।'' जब ब्लॉग और समाचार वेबसाइटों जैसे बाहरी स्त्रोतों से सामग्री ली जाएगी, तो उनका अस्वीकरण करना होगा, क्षेत्रीय पत्रिकाओं की समन्वयक डोना कोटर कहती है।

नए ब्रांडिंग मानकों के लागू होने के बाद, पत्रिकाओं को सामग्रियों के प्रतिपादन एवं डिज़ाइन प्रक्रियाओं के गुणवत्ता मानकों का अनुपालन करना होगा। पत्रिकाओं की पहुँच एवं गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए सभी पत्रिकाओं के लिए लगभग 6-7 सवालों वाला एक पाठक सर्वेक्षण किया जायेगा। संपूर्ण डिज़ाइन को रोटरी के रणनीतिक दृष्टिकोण का समर्थन करना चाहिए और उसके तालमेल में होना चाहिए, उन्होनें कहा।

कम्युनिकेशन्स टीम द्वारा चर्चा किया जा रहा एवं तैयार किया जा रहा सर्वेक्षण अभिदाताओं से राय एवं प्रतिक्रिया प्राप्त करने का एक गैर-डरावना तरीका होगा, जिनके पास पत्रिकाओं को बेहतर बनाने के तरीकों पर अपनी राय व्यक्त करने का एक अवसर होगा। ''हमारा अनुसंधान दल सर्वेक्षणों को प्रभावी बनाने के लिए संभावित प्रश्न तैयार कर रहा है और परिणामों को क्षेत्रीय संपादकों के साथ साझा किया जाएगा,'' डोना ने कहा।

प्रिंट बनाम डिजिटल

74 प्रतिशत की साक्षरता दर एवं भारत के कई ग्रामीण बाज़ारों में प्रिंट मीडिया के अभी तक नहीं पहुँचने के कारण, अखबार और पत्रिकाएँ भारत में कम से कम 20-30 वर्षों तक अस्तित्व में रहेंगी। प्रिंट से जुड़े भविष्यवक्ता गलत साबित हुए है क्योंकि कई ''दैनिक समाचार पत्रों ने हाल ही में प्रसारण में उछाल की सूचना दी है,'' *रोटरी न्यूज़* संपादक रशीदा भगत ने कहा। ''हमारे प्रिंट संस्करण की पूर्ती एक संवादात्मक वेबसाइट द्वारा की जाती है जिसमें व्यक्तिगत लेख एवं तस्वीरें पोस्ट की जाती है और एक पीडीएफ़ प्रारूप में *Rotary.org* एवं अन्य स्त्रोतों से प्राप्त नियमित ऑनलाइन अपडेट वाला ई-संस्करण मौजूद होता है।''

सभी संपादकों के सामने एक बड़ी चुनौती यह है कि पत्रिकाओं को समय पर नए या निलंबित सदस्यों के बारे में अपडेट नहीं किया जाता है।

बाएं से (बैठे हुए): किरण ज़हरा, डोना कॉटर, ज्योति राय, हेनरी शाओ और के सेंथिलकुमार। खड़े हुए: शेरोन हर्ले, वी मुत्तुकुमरण, गे किडल, रशीदा भगत, जयश्री और के विश्वनाथन महाबलीपुरम में।

प्रिंट की 1.28 लाख प्रतियों के मुकाबले, केवल 4,000 रोटेरियनों, जो कि बमुश्किल तीन प्रतिशत है, ने डिजिटल संस्करण को चुना है। ''जिससे हमें यह पता चलता है कि प्रिंट की बादशाहत अभी भी कायम है,'' उन्होंने कहा।

साथ ही, जो परियोजनाएं पत्रिका में नहीं छपती उन्हें *रोटरी न्यूज़ प्लस* नामक एक विशिष्ट ई-संस्करण में छापा जाता है, जो हर महीने की 15 तारीख को प्रकाशित होता है। ''हर तिमाही में हम *रोटरेक्ट न्यूज़* भी प्रकाशित करते है, कुछ सैकड़ों प्रतियों को प्रकाशित करके उन्हें DRR, DG एवं भारत और इवेंस्टन के वरिष्ठ रोटरी नेतृत्वकर्ताओं को भेजा जाता है। यह ऑनलाइन उपलब्ध है।''

एक मीडिया सर्वेक्षण में सामने आया है कि मार्च से लेकर अगस्त 2019 के बीच भारतीय अख़बारों एवं पत्रिकाओं में जल एवं स्वच्छता मुद्दों पर 13,500 कहानियाँ एवं लेख प्रकाशित हुए है, नई दिल्ली स्थित RISAO में सीनियर झठ कोऑर्डिनेटर ज्योति राय ने कहा। ''इससे केवल यह बात सामने आती है कि लोग मानव विकास एवं पीड़ाओं की कहानियों से सीधे तौर पर सम्बद्ध हो सकते है, यदि उन्हें अच्छी तरह लिखा गया हो तो।''

RISAO में ज्योति का दल ज्ञान साझा करने, नए विचारों, पहलों पर सहयोग करने और प्रमुख मुद्दों पर वरिष्ठ रोटरी नेतृत्वकर्ताओं के साथ एक संयुक्त मोर्चा बनाने के लिए काम कर रहा है। भारत में रोटरी के शताब्दी वर्ष का उत्सव मनाने एवं सफलता की कहानियों को साझा करने के लिए रोटरी संस्थान (भारत) एक विशेष वेबसाइट बना रहा है, ज्योति ने कहा। ''जनता एवं मीडिया के साथ एक अच्छा इंटरफ़ेस विकसित करने के लिए हम एक झठ एजेंसी की मदद ले रहे है।''

सभी संपादकों के सामने एक बड़ी चुनौती यह है कि पत्रिकाओं को समय पर नए या निलंबित सदस्यों के बारे में अपडेट नहीं किया जाता है।

उनके वीडियो संदेशों में रोई निदेशक भरत पंड्या और कमल संघवी ने रोटरी पत्रिकाओं की महत्ता पर प्रकाश डाला क्योंकि वे एक महत्वपूर्ण संचार साधन है, और उन्होंने संपादकों से निरंतर उनकी गुणवत्ता को बेहतर बनाने का आग्रह किया।

ऑस्ट्रेलिया से *रोटरी डाउन अंडर* के जनरल मेनेजर गे किडल; ताइवान रोटरी के संपादक हेनरी वाय टी शाओ; और रोटरी थाईलैंड के प्रधान-संपादक योथार्वुट वेनिट ने उनके विचारों के साथ-साथ रोटेरियनों द्वारा उनके शुल्कों का भुगतान ना करने एवं सदस्यता आंकड़ों की समय पर रिपोर्टिंग ना करने के कारण पत्रिका चलाने में आने वाली मुश्किलों को साझा किया।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय से संदेश

प्रमुख दानकर्ता मान्यता/वैश्विक अनुदान लाभार्थियों पर दिशा-निर्देश

क्षेत्र में प्रमुख दानकर्ता एवं प्रमुख योगदान मान्यता के दिशा-निर्देशों का पालन ना करने के कई मामलों को देखते हुये, इस नीति को यहाँ दोबारा बताया जा रहा है:

- जैसे-जैस योगदान संचित होते जाते है, दानकर्ताओं द्वारा प्रत्येक क्रमिक स्तर पर पहुँचने पर उनकी पहचान की जा सकती है।
- केवल प्रत्यक्ष रूप से किए गए *व्यक्तिगत* योगदान, जिनमें रोटरी संस्थान को दी गई वार्षिक राशी, अक्षय निधि, एवं अन्य प्रतिबंधित योगदान शामिल है, ही प्रमुख दानकर्ता मान्यता के लिए पात्र है।
- प्रमुख दानकर्ता मान्यता व्यक्तियों, जोड़ों, गैर-रोटरी सम्बद्ध संस्थानों एवं निगमों के लिए आरक्षित है। दानकर्ताओं के साथियों द्वारा किए गए योगदानों को आमतौर पर प्रमुख दानकर्ता मान्यता के लिए संयुक्त किया जाता है, यदि वे लिखित में अनुरोध करते है तो। कोई क्लब या मंडल इस मान्यता के लिए पात्र नहीं है।

AKS योगदान सहित प्रमुख दानकर्ताओं द्वारा दिये गए योगदान उनके व्यक्तिगत योगदान होते है और मंडल कोष या किसी भी अन्य अनुदान संचयन गतिविधियों, लाभार्थियों/सहयोगी संगठनों से प्राप्त योगदानों का इस्तेमाल प्रमुख दानकर्ता मान्यताओं के लिए योगदानों के मिलान हेतु या वैश्विक अनुदान परियोजनाओं को देने/कार्यान्वयन के लिए नहीं किया जाना चाहिए।

इसके अलावा, क्लबों एवं मंडल को एक वैश्विक अनुदान के लिए आवेदन करते समय लाभार्थी पात्रता, गतिविधियों, योग्यता के स्तर इत्यादि से संबन्धित जानकारी को ध्यान में रखना चाहिए:

- TRF वैश्विक अनुदानों के लिए रोटरी क्लबों एवं मंडलों द्वारा जमा किए गए उन्हीं योगदानों को स्वीकार करेगा जो रोटेरियनों, क्लबों एवं मंडलों, और गैर-रोटेरियनों एवं गैर-रोटरी संस्थानों से प्राप्त होंगे वो भी तब तक जब तक कि रोटरी फ़ाउंडेशन कोड ऑफ पॉलिसीस की धारा 10,030 में परिभाषित हितों में टकराव ना हो, यह कि परियोजना के लिए धन परियोजना में सम्मिलित किसी लाभार्थी या सहयोगी संगठन से प्राप्त ना हुआ हो, और बशर्ते कि इस निधीयन का उपयोग रोटरी क्लबों एवं मंडलों द्वारा तैयार एवं कार्यान्वित की जाने वाली परियोजनाओं के लिए किया जाता हो, जो संस्थान प्रबंधन एवं रिपोर्टिंग आवश्यकताओं के अधीन होगा।
- गैर-सदस्य नकद योगदान - अन्य संगठनों या व्यक्तियों (जिनमें सहयोगी संगठन या परियोजना के लाभार्थी सम्मिलित नहीं है) द्वारा परियोजना खाते या टीआरएफ़ में दिये गए दान उन परियोजनाओं के लिए विश्व कोष से 50 प्रतिशत तक मिलान करने के पात्र होंगे जिन्हें रोटरी क्लबों एवं मंडलों द्वारा तैयार एवं कार्यान्वित किया गया है, और जो संस्थान प्रबंधन एवं रिपोर्टिंग आवश्यकताओं के अधीन होंगे।
- रोटरी कोड ऑफ पॉलिसीस की धारा 26.080 में दर्शाये गए रोटरीस प्राइवसी स्टेटमेंट फॉर पर्सनल डेटा का अनुसरण कीजिये। अनुदान लाभार्थियों की व्यक्तिगत जानकरियों (नाम, उम्र या जन्मतिथि, या कोई भी अन्य पहचान की जानकारी) और उनकी तस्वीर को अनुदान आवेदनों एवं रिपोर्टों में तब तक शामिल ना करें जब तक कि संस्थान इन जानकारी का अनुरोध ना करता हो और आपके पास लाभार्थी (या उसके अभिभावक या विधिक संरक्षक) की लिखित सहमति ना हो। अनुपयुक्त तरीके से शामिल की गई इन व्यक्तिगत जानकारी की वजह से अनुदान प्रक्रिया में देरी हो सकती है क्योंकि हम रोटरी की प्राइवसी पॉलिसी का अनुपालन सुनिश्चित करते है।
- किसी एक लाभार्थी, इकाई, या समुदाय से मिलने वाले लगातार या अत्यधिक सहयोग (जिसे तीन साल की अवधि में विश्व कोष में 2 मिलियन डॉलर या उससे अधिक प्राप्त करने वाले किसी भी सहयोगी संगठन के रूप में परिभाषित किया गया है) से बचना चाहिए।
- अनुदान राशि को ग्रांट सेंटर में सूचीबद्ध खातों में भेजा जाएगा और उसे उस खाते में तब तक रहना चाहिए जब तक कि उनका इस्तेमाल परियोजना व्ययों के प्रत्यक्ष भुगतान के लिए ना किया जाए। इसका अर्थ है कि एक भुगतान सीधे एक परियोजना विक्रेता या सहयोगी या लाभार्थी संगठन को किया जाना चाहिए। वास्तविक खर्च किए जाने या सेवाएं देने से पहले परियोजना राशि का भुगतान किसी को भी नहीं किया जाना चाहिए। परियोजना के लिए जिन संगठनों के खर्चों की प्रतिपूर्ति जी जा रही है उन संगठनों को भुगतान होने से पूर्व रोटेरियन को मूल चालान या रसीद की परियोजना प्रयोजकों की प्रतियाँ देनी चाहिए। बैंक खाते में हस्ताक्षर करने का अधिकार रखने वाले लोगों को प्रायोजक क्लब या मंडल का सदस्य होना अनिवार्य है।

लाभार्थी की जानकारी के साथ फोटो, समाचार पत्र की कतरनों, या लाभार्थी एवं लाभार्थी संगठनों से प्राप्त पत्रों या प्रशंसाओं को अंतिम रिपोर्ट के साथ प्रदान करें।

कम लागत वाले आश्रय या साधारण स्कूलों की प्रायोगिक परियोजना का समापन

संस्थान ने 1 जनवरी, 2017 से वैश्विक अनुदानों की मदद से कम लागत वाले आश्रयों या साधारण स्कूलों के निर्माण की प्रायोगिक परियोजना शुरू की थी। वह प्रायोगिक परियोजना 31 दिसंबर, 2019 को समाप्त हो रही है। 31 दिसंबर, 2019 के बाद कोई भी कम-लागत वाले आश्रय या साधारण स्कूल के आवेदन जमा नहीं किए जा सकते। इस प्रकार की परियोजनाओं को वैश्विक अनुदान के अंतर्गत रहने देना है या नहीं इस बात का फैसला न्यासी अप्रैल 2020 में करेंगे। ■

डायलिसिस सेवा का विस्तार करने के लिए फेयरफ़ैक्स फ़ाउंडेशन के साथ रोटरी ने समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया

Rotary
PEOPLE OF ACTION

रशीदा भगत

देश भर के सरकारी अस्पतालों में सुविधाओं से वंचित लोगों की सेवा करने के लिए भारत में रोटरी ने फेयरफ़ैक्स इंडिया चैरिटेबल फ़ाउंडेशन के साथ, 75:25 की साझेदारी में, एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया है।

हाल ही में मुंबई में इस फ़ाउंडेशन के सीईओ अब्राहम अलपट्ट के साथ महाराष्ट्र राज्य का प्रतिनिधित्व करने वाले सभी मंडल गवर्नरों के बीच समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया गया है। रोई निदेशक भरत पंड्या, जिन्होनें गैर-संचारी रोगों की रोकथाम के लिए

> प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ हाल ही में हुई एक बैठक में प्रधानमंत्री ने उनसे डायलिसिस परियोजना करने के लिए कहा क्योंकि भारत में डायलिसिस की मांग एवं उपलब्ध सुविधाओं में बहुत बड़ा अंतर है।
>
> **अब्राहम अलपट्ट**
>
> **CEO, फेयरफ़ैक्स इंडिया चैरिटेबल फाउंडेशन**

रोटेरियनों द्वारा एक डायलिसिस मशीन की राशि एकत्रित किए जाने के बाद, उसके ऊपर रोटरी का चिन्ह होगा और यदि एक केंद्र में अधिकांश या सभी मशीनें रोटरी, या किसी एकल द्वारा प्रदान की जाएगी।

भरत पांड्या

रो ई निदेशक

बाएं सेः (खड़े हुए) TRF ट्रस्टी गुलाम वाहनवती, DG मोहन चन्द्रावरकर, RIPN शेखर मेहता, RID भरत पांड्या, फ़ेयरफ़ैक्स फ़ाउंडेशन CDO अब्राहम अलपट्ट, DG गण सुहास वैद्या, गिरीश मसूरकर और RID कमल संघवी।

बैठे हुएः DG गण हरजीत सिंह तलावर, राजेन्द्र बाम्ब्रे और PDG प्रशान्त देशमुख।

देशभर में एक व्यापक अभियान चलाया है, ने कहा कि संस्थान ने विक्रेताओं के साथ प्रभावी लागत पर बातचीत की जिसके तहत पाँच साल की विस्तारित वारंटी के साथ एक डायलिसिस मशीन ₹4.3 लाख की आएगी। शुरुआत में, राज्य में डायलिसिस मशीनों की स्थापना करने के लिए महाराष्ट्र के मंडल फेयरफ़ैक्स के साथ काम करेंगे; रोटरी 75 प्रतिशत राशि एकत्रित करेगी और बाकी की राशि फेयरफ़ैक्स द्वारा जोड़ी जाएगी।

अलपट्ट ने समझाया कि फ़ाउंडेशन ने देश भर में 1,000 डायलिसिस मशीन स्थापित करने की शुरुआत तब की जब फेयरफ़ैक्स इंडिया के सीईओ की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ हाल ही में हुई एक बैठक में प्रधानमंत्री ने उनसे डायलिसिस परियोजना करने के लिए कहा क्योंकि भारत में डायलिसिस की मांग एवं उपलब्ध सुविधाओं में बहुत बड़ा अंतर है। ''हम देश भर में अब तक 500 मशीनें लगा चुके है; हम केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के साथ काम करते है, और ज़िला अस्पतालों में मशीनें स्थापित करते है। यह मॉडल सार्वजनिक-निजी भागीदारी पर काम करता है; सरकार इमारत प्रदान करती है और हम मशीनें प्रदान करते है।''

प्रधानमंत्री की बीमा योजना के तहत, डायलिसिस, जिसकी कीमत एक निजी अस्पतालों में कम से कम ₹2,000 या उससे अधिक है, बीपीएल मरीजों के लिए पूर्णतः निःशुल्क है। आम तौर पर, इसे साध्य बनाने के लिए, एक इकाई में 5 मशीनों की आवश्यकता होती है; 90 केंद्र पहले से ही इस योजना के तहत संचालित हो रहे है, उन्होंने कहा।

डॉक्टर पांड्या ने कहा कि वर्तमान में महाराष्ट्र में 3,600 मशीनें है और अधिकांश मशीनें बड़े शहरों एवं कस्बों में है। यह परियोजना इस सेवा से वंचित इलाकों में गरीब मरीजों तक डायलिसिस पहुँचाने में मदद करेगी। हम इस परियोजना को समस्त भारत में लागू करना चाहते है, ''लेकिन चूंकि आज महाराष्ट्र के डीजी मौजूद है, इसलिए हम इस राज्य से शुरुआत करेंगे।'' एक बार रोटेरियनों द्वारा एक डायलिसिस मशीन की राशि एकत्रित किए जाने के बाद, उसके ऊपर रोटरी का चिन्ह होगा और यदि एक केंद्र में अधिकांश या सभी मशीनें रोटरी, या किसी एकल क्लब, जैसे कि रोटरी क्लब बॉम्बे, द्वारा प्रदान की जाएगी, तो उसका नाम केंद्र के प्रवेश द्वार पर प्रदर्शित किया जाएगा।

इस समझौता ज्ञापन हेतु मूल कार्य करने के लिए उन्होंने रो ई मंडल 3131 के रोटेरियन राकेश भार्गव को धन्यवाद दिया। आरआईपीएन शेखर मेहता, रो ई निदेशक कमल संघवी और टीआरएफ़ न्यासी गुलाम वाहनवटी भी समझौता ज्ञापन के हस्ताक्षरण के दौरान मौजूद थे। ■

भारत में RIPN शिकार मेहता के लिए

RIPN शेखर मेहता अपनी मां वल्लभ कुमारी, पत्नी राशी और बहू गीता के साथ। PRIP कल्याण बेनर्जी, RID कमल संघवी, TRF ट्रस्टी गुलाम वाहनवती और PRID मनोज देसाई चित्र में शामिल हैं।

कोलकाता में RID भारत पांड्या और माधवी RIPN मेहता और राशी को सम्मानित करते हुए।

जशन

PRID व्हाई पी दास, RIPN मेहता के साथ। चित्र में मंजू दास, सोनल संघवी और राशी मेहता शामिल हैं।

RIPN मेहता, रो ई मंडल 3240 के सत्कार समाहरो में बोलते हुए। DGE सुभाषिश चटर्जी उनके पीछे खड़े हैं।

बायें से: नयनतारा महाजन, PRIP कल्याण बेनर्जी, TRF ट्रस्टी-निर्वाचित आज़िज़ मेमन, PRID अशोक महाजन और PDG राहुल तिंबाडिया, मुंबई में।

ऊपर: मुंबई में RIPN शेखर मेहता और राशी।

दायें: RIPN मेहता और राशी TRF ट्रस्टी गुलाम वाहनवती के साथ कोलकाता में।

ऊपर: मुंबई में PDG विजय जालान के साथ RIPN मेहता और राशी।
बाएं: जयपुर में PDG गणं (बाएं से) अजय काला, अशोक गुप्ता, PRID मनोज देसाई, DGN अशोक मंगल,DG बीना देसाई और DGE राजेश अग्रवाल की उपस्थिति में RIPN मेहता और राशी दीप प्रज्ज्वलित करते हुए।

पुणे में RIPN मेहता और राशी का धूम-धाम से स्वागत।

RIPN मेहता और राशी के साथ रो ई मंडल 3232 के PDG जे बी कामदार, रो ई मंडल 3131 के PDG माधव बोराटे और अमिता, PDG राहुल तिंबाडिया की पत्नी।

पुणे में RIPN मेहता और राशी RID कमल संघवी और सोनल, PDG महेश कोटबागी और अमिता के साथ।

दिल्ली में RIPN मेहता और राशी के साथ रो ई मंडल 3012 के DG दीपक गुप्ता और उनकी पत्नी रीना।

चित्र: रशीद भगत, जयश्री और विशेष व्यवस्था।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

महिला रोटेरियनों ने BSF जवानों के साथ मनाया रक्षाबंधन

किरण ज़ेहरा

रोटरी क्लब डोंबिवली मिडटाउन, रो ई डिस्ट्रिक्ट 3141 के रोटेरियनों ने गुजरात के कच्छ के धोलावीरा में बीएसएफ चौकी पर जवानों के साथ रक्षाबंधन मनाया। महिला रोटेरियन ने 125 से अधिक जवानों को राखी बांधी। इस परियोजना के चेयरमैन रुतुजा पाटिल ने कहा, ''यह एक भावनात्मक क्षण था जब सैनिकों में से एक ने अपनी बहन से डाक के माध्यम से प्राप्त राखी को मुझे बांधने का अनुरोध किया।'' महिलाओं को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि राष्ट्र की सुरक्षा के अपने कर्तव्य को निभाते हुए ज्यादातर सैनिक किसी भी त्योहार को मनाने के लिए घर नहीं जा पाते हैं।

क्लब के अध्यक्ष अनिल कुलकर्णी ने कहा कि, ''सैनिकों से मिलना और उनके साथ त्योहार मनाना हमारे लिए बहुत सौभाग्य की बात थी। उनके चेहरे पर आई मुस्कान ने मुंबई से कच्छ तक की 850 मील की हमारी यात्रा को पूरी तरह से सार्थक बना दिया।'' और उन्होंने क्लब में महिलाओं को जवानों के लिए घर पर राखी और मिठाई बनाने तथा जवानों को स्कूली छात्रों द्वारा पत्र लिखने के लिए धन्यवाद दिया। इन पत्रों को बीएसएफ जवानों को दिया गया था और वो रोटेरियन के इस व्यवहार से अभिभूत हो गए थे। क्लब के सदस्य किशोर अधालकर ने त्योहार मनाने के लिए बीएसएफ चौकी से अनुमति मांगी थी। रोटेरियन ने जवानों के साथ भोजन किया और पास के एक गांव की लड़कियों द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम का आनंद लिया। ■

Cancer Institute (W.I.A.)
(Regional Cancer Centre)
Adyar, Chennai - 600 020.

Help us in our campaign against cancer

We seek your generous contribution to support our Dharmasala that provides food and shelter for patients and attenders.

- **It sees 160-180 inmates a day.**
- **Our monthly expenses Rs 6 lakh**
- **Exemption for donations under 35 (I) (ii) (Research); 80 G**

Dr V Shanta, Chairman
Dr G Selvaluxmy, Director
Cancer Institute (WIA) Adyar, Chennai – 600 020.
Phone: +914424910754. Email: *caninst@md2.vsnl.net.in*

किसानों के लिए एक रोटरी बाज़ार

रशीदा भगत

ऊपर: रोटरी ऑर्गेनिक बाज़ार में डीजी राजेंद्र भामरे (केंद्र),(बायें से) क्लब सचिव श्रेया कुलकर्णी, स्मिता उपशंकर, मधुली अजय, AG संजय कलंत्री, क्लब के अध्यक्ष मनीष चिंचड़े और राष्ट्रपति-चुनाव मुग्धा लेले।

रोटरी के दो मुख्य क्षेत्रों - आजीविका बढ़ाना और पर्यावरण संरक्षण - को मिलाकर एक परियोजना बनाकर, और उसमें व्यथित भारतीय किसानों के लिए एक तीसरे महत्वपूर्ण आयाम को जोड़कर, रोटरी क्लब नासिक, रो ई मंडल 3030, ने सफलतापूर्वक एक परियोजना की शुरुआत की है जिससे क्षेत्र के किसानों के लिए जैविक खेती लाभदायक एवं संवहनीय बनेगी।

क्लब उसके 75वें वर्ष का उत्सव मना रहा है। पिछले वर्ष, कृषि विशेषज्ञ हेमराज राजपूत के नेतृत्व में, जो क्लब के एक सदस्य है और स्थानीय कृषि विश्वविद्यालय में एक प्रोफेसर भी है, क्लब ने शहर के उनके अपने रोटरी हाल में एक रोटरी जैविक बाज़ार की शुरुआत की है।

क्लब सचिव और अध्यक्ष पद की उम्मीदवार श्रेया कुलकर्णी कहती है कि यह विचार एक ऐसी सेवा परियोजना को करने का है जो ''हमारे किसानों को लाभान्वित करें क्योंकि कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। हम सभी जानते है कि किसानों की उपज का अधिकांश मुनाफा बिचौलिये ले जाते है। साथ ही, चूंकि भारतीय कृषि ज़्यादातर मौसमी वर्षा पर निर्भर है, इसलिए इससे होने वाली आय अनिश्चित और अप्रत्याशित दोनों है।''

राजपूत, विशेषज्ञ ने सुझाव दिया कि किसानों को सब्जियों एवं फलों जैसी नकदी फसलों के लिए कीटनाशकों का उपयोग ना करने की सलाह दी जानी चाहिए और इसलिए जैविक किसानों को चुनकर उन्हें एक ऐसा विपणन तंत्र देने का निर्णय लिया गया जिसमें वे बिचौलियों द्वारा अपनी आय कटवाए बिना उपज को बेच सकें।

रोटरी जैविक बाज़ार का विज्ञापन सोशल मीडिया, फ्लायर्स और पैम्फलेट के माध्यम से किया गया और शुरुआत में बाज़ार हर मंगलवार को लगता था। इसे अधिक जीवंत बनाने और अधिक किसानों को लाभ पहुंचाने और ''इस पहल को संवहनीय बनाने के लिए, तुषार उगले की अध्यक्षता में इस परियोजना के लिए एक समिति गठित की गई।''

समिति ने फैसला किया कि इस पहल को और भी अधिक सफल बनाने के लिए इसे शहर में अधिक ग्राहक-अनुकूल एवं प्रमुख स्थान पर ले जाया जाना चाहिए और इसे महीने के प्रत्येक दूसरे एवं चौथे रविवार को आयोजित किया जाना चाहिए। रोटेरियनों ने शहर के बीचों-बीच स्थित एक प्रसिद्ध हॉल का चुनाव किया और ''₹5,000 में कार पार्किंग को किराए पर लेकर उस जगह को किसानों द्वारा उनकी उपज प्रदर्शित करने वाले एक स्थान में तब्दील कर दिया।'' एक रोचक बात जो वह साझा करती है वह यह है कि जब महाराष्ट्र और समस्त भारत में प्याज की कीमतें बढ़ रही है, ''पिछले हफ्ते किसान जैविक प्याज लेकर आए जिसकी कीमत उन्होनें 30 प्रति किलो रखी। उनकी गुणवत्ता बहुत अच्छी थी और पूरा माल 30 मिनटों में ही बिक गया!''

परियोजना को संवहनीय बनाने के लिए, समिति ने बाज़ार के अर्थशास्त्रों पर काम किया और विस्तृत दिशा-निर्देशों को तैयार किया और अब वार्षिक सदस्यता आधार पर लगभग 80 प्रतिशत स्थान पहले से ही बुक्ड है। अब बाज़ार ऑटो मोड पर चल रहा है, सामुदायिक सेवा निदेशक ओमप्रकाश रावत कहते है।

किसान हर प्रकार की सब्जियाँ एवं फल लाते है। क्लब सीमांत एवं आदिवासी कृषकों को भी सम्मिलित होने के लिए प्रोत्साहित करते है। श्रेया एक दिलचस्प किस्सा साझा करती है: सितंबर-अक्टूबर के दौरान, आदिवासी किसान एक सब्जी उगाते है जो *रण भाज्य* (मराठी में जंगली सब्जी) कहलाती है। ''यह बहुत ही पौष्टिक एवं आयरन और कैल्शियम से भरपूर होती है लेकिन यह आसानी से उपलब्ध नहीं होती और बहुत से लोगों को इसे पकाना नहीं आता।''

इसलिए बाज़ार के दिनों में, इस सब्जी को उगाने एवं खाने वाले आदिवासी किसानों ने इसे पकाने का तरीका दिखाया। इस प्रकार, मूल्यवर्धन किया जाता है; कृषि में संलग्न स्व-सहायता समूहों की महिलाओं को उनके जैविक उत्पादों के साथ-साथ पापड़, आचार, इत्यादि जैसी सूखी चीजों को भी लाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। ''और दिवाली के सीज़न के दौरान, हमने उनसे घर में बनी पारंपरिक मिठाइयों को प्रदर्शित करने के लिए कहा, और उन्होंने भी विभिन्न प्रकार के सलादों को बनाने का एक प्रदर्शन रखा,'' श्रेया कहती है।

क्लब अध्यक्ष मनीष चिंधाड़े आगे कहते है कि जैविक बाज़ार की सफलता को देखते हुये क्लब सदस्य अब इसे एक साप्ताहिक कार्यक्रम बनाने की योजना बना रहे है और किसानों के लिए एक कार्यशाला का भी आयोजन कर रहे है जहाँ उन्हें बेहतर विपणन तकनीकों एवं खेती से अधिक लाभ प्राप्त करने से जुड़ी अन्य विशेषताओं पर प्रशिक्षण दिया जाएगा।

दरवाड़ी गांव में बालिकाओं के लिए साइकिलें।

छात्राओं के लिए साइकिलें

ईगतपुरी क्षेत्र, जहाँ के किसानों को डैम बनाने के लिए विस्थापित किया गया था, के एक सुदूर इलाके में स्थित दारेवाड़ी गाँव में की जा रही एक अन्य सेवा परियोजना में, क्लब छात्राओं को स्कूल पहुँचने के लिए साइकिलें दे रहा है। चिंधाड़े कहते है, ''आधा गाँव पहाड़ी की चोटी पर है और आधा गाँव अभी भी तले में अस्थायी टीन के शेड में रह रहा है। इसलिए बहुत से प्राथमिक स्कूली विद्यार्थियों को उनके स्कूल पहुँचने के लिए मीलों का सफर तय करना पड़ता है और आवागमन की सुविधाओं की कमी से बहुत सी लड़कियां स्कूल छोड़ देती है।''

और भारी बारिश की वजह से बार-बार होने वाले भूस्खलन विद्यार्थियों की मुश्किलें बढ़ाते है। चूंकि गाँव एक बहुत ही सुंदर क्षेत्र में स्थित है, रविवार की सुबह पैदल यात्रा के दौरान, रोटेरियनों ने ग्रामीणों, विशेषकर विद्यार्थियों की कठिनाइयों को संयोगवश जाना। क्लब के सदस्यों ने लड़कियों के लिए साइकिल, बरसाती, जूते, कम्प्यूटर जैसी आवश्यकताओं की पहचान की। 75 साइकिलें और 75 कम्प्यूटर वितरित करने का निर्णय लिया गया, और सुधारी एवं नवीनीकृत की गई 25 पुरानी साइकिलों को लड़कियों को दिया गया। दो कम्प्यूटर सिस्टम और जूते, बरसातियाँ, वृद्धजनों के लिए कंबल और दिवाली के दौरान मिठाइयाँ भी प्रदान की गई। ■

कोलकाता में कल्याणकारी कार्यों को करते

जयश्री

कलकत्ता के रोटरी क्लब के रूप में रो ई मंडल 3291, जनवरी 2020 में अपने 100वां चार्टर दिवस को मनाने जा रहा है, इसके सदस्य पिछली सदी में विभिन्न परियोजनाओं से जुड़ी पुरानी यादों को पुनः स्मरण कर रहे हैं। इस क्लब को सितम्बर 1919 में स्थापित किया गया था और जनवरी 1920 में इसे चार्टर्ड किया गया था। 21 की शुरुआती संख्या से आज इसके सदस्यों की संख्या 240 तक हो गई है, और इसने भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश में लगभग 28 रोटरी क्लबों को प्रायोजित किया है। इसे नीतीश लहरी में भारत के पहले रो ई अध्यक्ष होने और महात्मा गांधी एवं दलाई लामा जैसे नेताओं को क्लब को संबोधित करने का गौरव प्राप्त है।

यहां क्लब की कुछ जीवन-परिवर्तनकारी गतिविधियों की कुछ झलक दी गई है।

एनुअल चिल्ड्रन ट्रीट काफी लंबे समय से चलने वाली परियोजनाओं में से एक है, जिसे 1925 में कोलकाता के सीमांत परिवारों के बच्चों को मखुशहाली भरा दिन (अ डे ऑफ सनशाइन)फ देने के उद्देश्य से शुरू किया गया था। यह पांच अनाथालयों के 200 बच्चों के साथ शुरू हुआ और धीरे-धीरे विभिन्न अनाथालयों, गैर-सरकारी संगठनों व अन्य संस्थानों के 1,750 बच्चों तक पहुंच गया। क्लब के सदस्य अमित घोष कहते हैं, ''पिकनिक उनके मनोबल तथा आत्मविश्वास को बढ़ाने में मदद करती है।'' वे हर साल निकको पार्क में सुबह से शाम तक पूरे दिन आनंद लेते हैं और उन्हें दोपहर के भोजन तथा नाश्ता दिया जाता है। वे अच्छी यादों और रोटेरियन से प्राप्त उपहार लेकर अपने घर वापस जाते हैं। क्लब के सदस्य राजीव कौल 40 एकड़ के पार्क में 35 मौजूद आकर्षणों के मालिक हैं, और उनका सहयोग क्लब को इतने सालों से बच्चों के लिए कार्यक्रम आयोजित करने में मदद कर रहा है। पार्क को इस अवसर पर बाहरी लोगों के लिए बंद कर दिया जाता है और यह इन बच्चों के अनन्य उपयोग हेतु आरक्षित रहता है।

रोटरी सदन, कोलकाता में, अन्य मंडल प्रतिनिधि नीतीश लाहरी लाइब्रेरी का दौरा करते हुए।

हुए 100 वर्ष

2009 में हावड़ा के सेंट थॉमस होम में शुरू हुई बच्चों की टीकाकरण परियोजना के तहत 300,000 डॉलर मूल्य के वैश्विक अनुदान की श्रृंखला के माध्यम से 20 बीमारियों के खिलाफ 75,000 बच्चों का टीकाकरण किया गया है। घोष कहते हैं, ''हमारा लक्ष्य इस वर्ष 25,000 बच्चों का टीकाकरण करने का है।'' टीकाकरण ऐसे घरों में हर दो महीने में किया जाता है, जिनमें टीबी रोगियों को उनके परिवारों द्वारा छोड़ दिया जाता है। ''हम इन रोगियों के बच्चों के टीकाकरण पर ध्यान केंद्रित करते हैं और 8-14 वर्ष तक की लड़कियों के लिए गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर का टीकाकरण इसमें शामिल होगा।''

सेंट थॉमस होम में ज़ोया अली TB से लाडती हुई।

क्लब 100,000 डॉलर के वैश्विक अनुदान के माध्यम से घर पर महिलाओं को व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की सुविधा प्रदान कर रहा है। हमें अपने घर पर बिस्तर पर लेटे हुए बधाई देते हुए जोया अली कहती हैं ''मैंने पेशेवर की तरह सिलाई करना सीख लिया है और एक फैशन डिजाइनर बनना चाहती हूं।'' छह महीने पहले टीबी के कारण उनके परिवार ने उन्हें छोड़ दिया था। इसके लिए क्लब को धन्यवाद, जिसकी वजह से वो कई अन्य रोगियों के साथ, सिलाई करना सीख रही हैं।

जब हमने हावड़ा साउथ प्वाइंट होम के विशाल परिसर में प्रवेश किया, तो यहां हमारा स्वागत छोटे बच्चों द्वारा गाए गए बंगाली कविताओं के साथ किया गया। क्लब यहां रहने वाले नि:शक्तजन बच्चों को चिकित्सा देखभाल मुहैया करता है। शताब्दी परियोजना के हिस्से के रूप में, क्लब ने एक जर्मन क्लब के साथ वैश्विक अनुदान के माध्यम से, यहां के वंचित बच्चों के लिए एक ब्रिज स्कूल का निर्माण शुरू किया है।

घोष बताते हैं कि क्लब ने 1927 में हावड़ा ब्रिज के निर्माण के लिए सरकार को राजी करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह पहले एक जीर्ण-शीर्ण पीपे का पुल था।

1987 में बेगमपुर में एकीकृत ग्राम विकास कार्यक्रम शुरू करने के बाद क्लब ने शहर में ब्रोकोली शुरू करने

हावड़ा साउथ पॉइंट होम में बच्चों के साथ रोटेरियन।

हावड़ा साउथ पाइट होम में एक बच्ची को चलने का प्रयास करते देख रोटेरियन अमित घोष।

में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, और इसी तरह का कार्यक्रम बिश्नुपुर में आरसीसी की मदद से शुरु किया गया था जो वहां के समग्र विकास की दिशा में कार्य करता है।

रोटरी सदन एक प्रतिष्ठित स्मारक है, जिसका शिलान्यास 1992 में पी.आर.आई.पी. राजेंद्र साबू ने किया था। इसमें नीतीश लहरी चिल्ड्रन लाइब्रेरी भी है और अभिलेखागार में रोटरी के स्मृति से जुड़ी वर्षों से इकट्ठी की गई वस्तुएं भी हैं। इसमें एक व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र भी है, जो अधिकारहीन परिवारों की महिलाओं को पाठ्यक्रम प्रदान करता है।

रवींद्रनाथ टैगोर इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ कार्डियक साइंसेज के गठजोड़ और वैश्विक अनुदान के साथ क्लब को 700 हृदय रोगियों को बचाने में मदद की है। सेंटेनरी कमेटी के चेयरमैन सौमेन रे कहते हैं, ''हमारा लक्ष्य साल भर में 1,000 व्यक्तियों की मदद करना है,'' और वो इसे मील का पत्थर मानते हुए अन्य परियोजनाओं के बारे में बताते हैं। इनमें एक आदिवासी स्कूल के लिए छात्रावास का निर्माण, अंधेपन से बचने के लिए 10,000 बच्चों की स्क्रीनिंग और 1,000 बच्चों का ऑपरेशन, और 1,000 वयस्कों को साक्षर बनाना शामिल है। वर्षों से क्लब ने 1,000 शौचालयों, 10 सार्वजनिक शौचालयों और 300 बोरवेल के शताब्दी लक्ष्य के अनुसार स्कूलों में 600 शौचालयों, शहर भर में तीन पे और उपयोग शौचालय और 200 बोरवेल का निर्माण किया है। बारह गांवों को खुले में शौच से मुक्त बनाया गया है तथा इस वर्ष 12 और गांवों को लक्षित किया जाएगा।

''वास्तविकता यह है कि क्लब 100 वर्षों का होने जा रहा है और इसने हम सभी को नई ऊर्जा दी है तथा हमें हर दिन विभिन्न सदस्यों से नए विचार प्राप्त होते रहते हैं, जिनमें से कुछ बहुत ही अच्छे हैं। यह वर्ष बेहद अच्छा रहा है और हम इसे वर्ष भी बहुत सारे कार्यक्रम करने के लिए तैयार हैं। ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे क्लब के अध्यक्ष पूर्णेंदु के उत्साह में कमी आ सके।'' रे ने मुस्कुराते हुए कहा।

चित्र: जयश्री

Rotary India Centennial Summit 2020

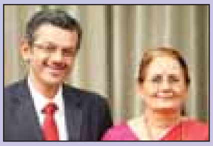

Dear Friends,

Rotary India Centennial Summit 2020 is the celebration of completion of 100 years of Rotary in India.

Rotary started in India, in the city of Kolkata on 1st January, 1920.

This summit will be the celebration of Rotary's motto 'Service above Self' and we shall do this by showcasing the work of Rotary in India in the six area of focus. Even as we do that we shall also figure out the plans for the future.

Rotary India Centennial Summit is expected to have 5,000 delegates from more than 25 countries. The program will have celebrity speakers and top leadership of the Rotary world. It will be an excellent opportunity to meet friends from across the globe, make new friends, share success stories and take back great ideas from the event.

The lavish food court and the outstanding entertainment will add up to make this a NOT TO BE MISSED event.

You have to be there.

Sincerely,

RID Kamal Sanghvi
Convenor, RICS 2020

RID Dr. Bharat Pandya
Co-convenor, RICS 2020

Our Esteemed Guests

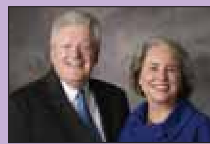
Mark Maloney
President
Rotary International

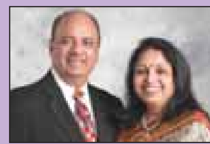
Shekhar Mehta
President Nominee
Rotary International

Raja Saboo
Past RI President

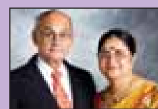
Kalyan Banerjee
Past RI President

PRIP Gary Huang
TRF Trustee Chair

PRIP K R Ravindran
TRF Trustee Chair 20-21

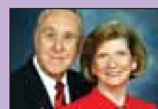
PRIP John Germ
TRF Trustee Chair 21-22

Rafael Garcia
RI Director

Jennifer Jones
TRF Trustee

PDG Gulam Vahanvati
TRF Trustee

Sangkoo Yun
TRF Trustee

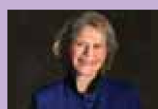
Anne Matthews
Past RI Director

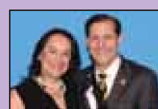
John Hewko
General Secretary, RI

The Venue

Termed as one of the largest convention centers in South Asia, Biswa Bangla Convention Center in Kolkata, West Bengal is all set to host RICS 2020. The magnificent property is a home to a convention center which can efficiently accommodate more than 4,000 guests and a cluster of lovely banquet halls.

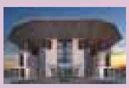
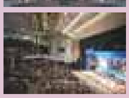

The House of Friendship

Enjoy a convention style HOF, where Rotary world comes together and ideas, services and success stories are proudly shared. Get a chance to network with top Rotary leaders while enjoying diverse cuisine & world class entertainment.

Welcome to Kolkata on 14th, 15th & 16th February 2020

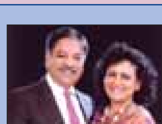
PDG Vinod Bansal
Chairman
RICS 2020

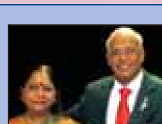
PDG Anirudha Roy Choudhury
Co-Chairman
RICS 2020

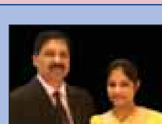
PDG Kishore Kumar Cherukumalli
Secretary
RICS 2020

Log on to **www.rics2020.org** for online registration

एक नाइजीरियाई बच्चे का रोटरी क्लब बेलूर को धन्यवाद

रशीदा भगत

अक्सर नेकी के काम भुलाये नहीं जाते, इसकी पुष्टि एक नाइजीरियाई लड़की, तीन-वर्षीय मिरैकल के माता-पिता द्वारा फेसबुक पर डाली गई पोस्ट से होती है, उस के दिल की सफल सर्जरी के एक वर्ष पूरा होने पर, जिसकी व्यवस्था पिछले नवंबर, कोलकाता में रो ई मंडल 3291 के रो क्लब बेलूर, विशेष रूप से इसके सदस्य आर के बुबना द्वारा की गई थी।

इस साल, 2 नवंबर को, मिरैकल के माता-पिता, जोसेफ चकवूमाज़े और उनकी पत्नी ने अपने बच्चे के अच्छे स्वास्थ्य के चलते फेसबुक पर एक बड़ी स्नेहमयी और प्यार भरी पोस्ट के ज़रिये अपनी खुशी का इज़हार किया। उन्होंने लिखा है कि पिछले साल इसी दिन ''मिरैकल की ओपन हार्ट सर्जरी, नारायण सुपर स्पेशलिस्ट हॉस्पिटल, हावड़ा, भारत में

हुई थी। मैं ईश्वर और आप सभी को धन्यवाद देता हूं जिन्होंने उसका जीवन बचाने में मदद की। मुझे हमारी नाइजीरिया से भारत पहुँचने की यात्रा अच्छी तरह याद है (अज्ञात भूमि और अनजान लोग), इस यात्रा के दौरान हमारा मुख्य सामान था, इन्हीं अनजान लोगों की भलाई में आशा और विश्वास।

जैसे ही हम कोलकाता हवाई टर्मिनल से बाहर आए, डैडी आर के बुबना ने आवाज़ लगाई 'बेबी मिरैकल।' उनकी चिन्ता ख़त्म हो गई।

रोटरी का विशाल परिवार अनजान लोगों को किस गर्मजोशी से सिर्फ इसलिए आगोश में ले लेता है क्योंकि उन्होंने रोटरी का लेबल लगा रखा है, इस पोस्ट में व्यक्त आभार से ये साफ़ नज़र आता है। उसमें वर्णित है कि एक नाइजीरियाई परिवार को किस प्रकार कोलकाता के रोटेरियनों ने ''शाही परिवार का दर्जा दिया था, हमें अस्पताल के निजी वार्ड में रखा गया, हमने जब भी अनुरोध किया विशेष भोजन परोसा गया और हमारे सभी चिकित्सकीय खर्चों का भुगतान उनके द्वारा किया गया। जिस प्यार के साथ आपने हमारा स्वागत किया, हम भूल नहीं सकते। डैडी आर के बुबना जब भी आते हमेशा वो हमारे लिए स्टोर से खाना लेकर आते थे क्योंकि वह हमारी विदेशी पृष्ठभूमि के प्रति संजीदा थे।''

रोटरी न्यूज (जनवरी 2019) में पिछले साल लिखे गए लेख को याद करें, कैसे फेसबुक पर एक पोस्ट देखने के बाद रो क्लब बेलूर, नाइजीरियाई बच्चे की मदद के लिए उछल कर आगे आये थे, जिसमें रोटरी ई क्लब वन (ह्यूस्टन, यूएस, मंडल 5450) के सदस्य हर्षद रावेशिया ने आपातकालीन चिकित्सा सहायता की गुहार लगाई थी क्योंकि नाइजीरिया गए अमेरिकी डॉक्टरों की एक टीम अस्पतालों में पर्याप्त उपकरण और अन्य सुविधाओं की कमी की वजह से मिरैकल का ऑपरेशन नहीं कर पाए थे।

इस पोस्ट को देखने के बाद, बुबना ने रावेशिया से संपर्क किया और उससे बच्चे की मेडिकल रिपोर्ट मंगवा कर, हावड़ा के नारायण सुपर स्पेशलिटी अस्पताल में डॉक्टरों को दिखाई। रो क्लब बेलूर ने गरीब बच्चों और वयस्कों के हृदय उपचार के लिए इस अस्पताल के साथ साझेदारी की हुई है। एक बार अस्पताल ने पुष्टि कर दी कि मिरैकल की शल्यचिकित्सा हो सकती है, जिसके हृदय में एक छेद के अलावा, बहुत छोटी बाईं धमनी से सम्बंधित कुछ और जटिलताऐं भी थीं।

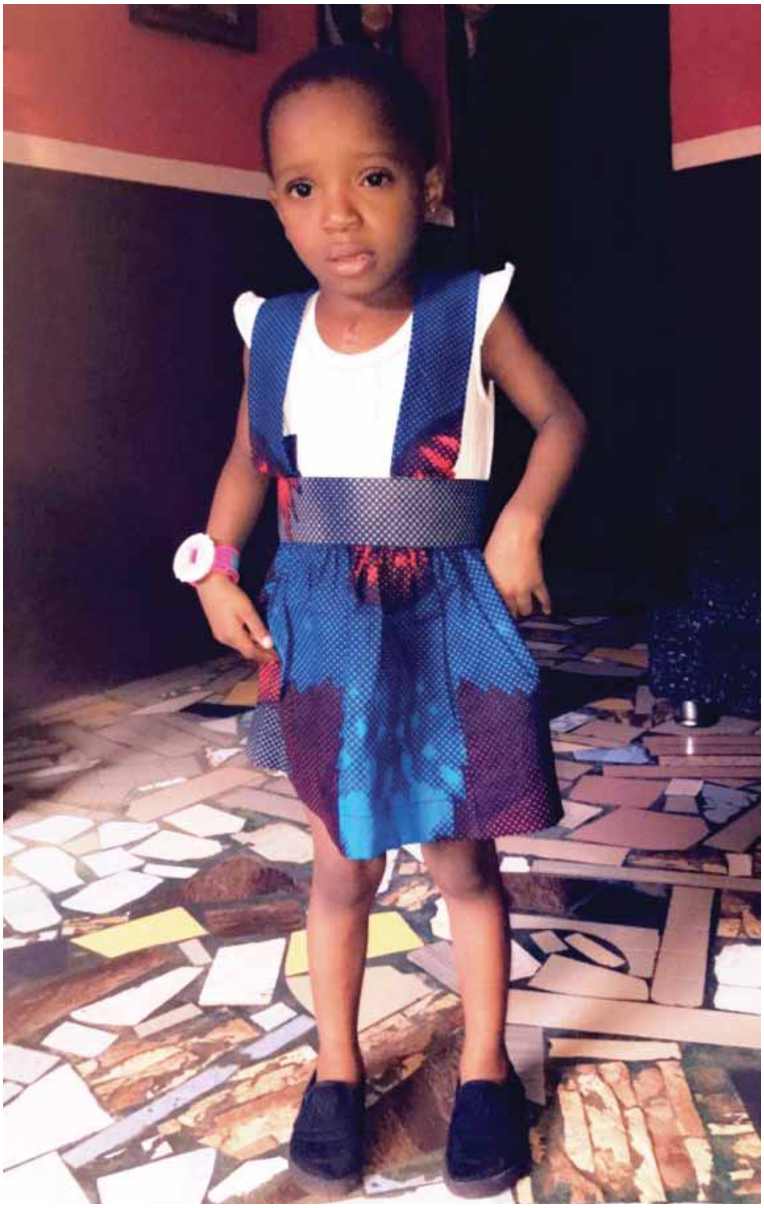

2 नवंबर, 2018 को सर्जरी की गई और बच्चे को 8 नवंबर को छुट्टी दे दी गई थी। कोलकाता में रमेश तिवारी और विष्णु ढांढनिया ने परिवार के रहने की व्यवस्था का ध्यान रखा। यह परियोजना टीआरएफ से वैश्विक अनुदान के तहत रोटरी ई क्लब वन और रो क्लब ग्रेटर नाइजीरिया, डी 9125 की साझेदारी में की गई थी। फेसबुक की ताज़ा पोस्ट में, मिरैकल के माता-पिता ने इन सभी रोटेरियन का व्यक्तिगत रूप से धन्यवाद किया है। खबर का सबसे बढ़िया हिस्सा तो पोस्ट के अंत में है।

मिरैकल अब ठीक ही नहीं है बल्कि स्कूल जाती है, लेकिन अब उसका एक छोटा भाई भी है। माता-पिता ने मिरैकल की हृदय की समस्या के कारण एक और बच्चे की आशा त्याग दी थी , लेकिन आप सभी का धन्यवाद, अब वह बिलकुल ठीक है और अपने साथियों के साथ स्कूल में है। भगवान आपको और आपके परिवार को भरपूर आशीर्वाद दे।

अभिभूत हुए बुब्ना कहते हैं, मैं ''तीन दशक से रोटरी में हूं और कई सेवा परियोजनाएँ की हैं, अंतरराष्ट्रीय भागीदारों सहित। लेकिन यह परियोजना मेरे जीवन की सबसे अच्छी परियोजना है, क्योंकि ईश्वर की कृपा से, मैं मिरैकल को दूसरा जीवन देने और उसके माता-पिता के चेहरे पर मुस्कान वापस लौटाने में मददगार रहा था।'' ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

रोटरी इंडिया ने विश्व पोलियो दिवस मनाया

टीम रोटरी न्यूज

देश भर में रोटरी क्लबों ने विश्व पोलियो दिवस (24 अक्टूबर) मनाया ताकि बच्चों को जानलेवा बीमारियों से बचाने के प्रति उन्हें जागरूक किया जाए एवं इसके अलावा टीकाकरण के प्रति गति बनाए रखने के लिए जो कि अब भारत के द्वारा पोलियो मुक्त घोषित किया गया है।

दिल्ली में, रो ई मंडल साउथ एशिया ऑफिस (RISAO) ने इंडिया नेशनल पोलियोप्लस कमेटी (INPPC) के अध्यक्ष दीपक कपूर के साथ, महानिदेशक सुरेश भसीन और अन्य रोटेरियन की उपस्थिति में, पूरे क्षेत्र में जागरूकता पैदा करने के लिए मिशन इन्द्रधनुष संदेश कार को हरी झंडी दिखा कर रवाना करने के लिए हाथ मिलाया।

गुड़गांव के रोटरी क्लब, रो ई मंडल 3011 ने डीएलएफ साइबर सिटी में एक रोटरी हेल्थ कार्निवल का आयोजन किया। इसमें मैमोग्राफी और कैंसर का पता लगाने, दंत चिकित्सा, मधुमेह और नेत्र जांच और रक्तदान शिविर के लिए एक मेगा स्वास्थ्य शिविर शामिल था। पीडीजी डॉ. सुशील खुराना, डीजीई संजीव राय मेहरा, टीआरएफ के हैड संजय परमार और RISAO से पोलियोप्लस प्रोग्राम के कॉर्डिनेटर संदीप कश्यप गुड़गांव में मेगा इवेंट में उपस्थिति थे।

रो ई मंडल 3190 जिसका नेतृत्व डीजी समीर हिरानी एवं राज्य के पोलियोप्लस कॅमेटी के चेयरमेन डी रूक्मंगदा कर रहे थे, उसने

विश्व पोलियो दिवस को चिह्नित करने के लिए बेंगलुरु में तीन प्रमुख कार्यक्रमों की मेजबानी की।

पोलियो कलर-ए-थॉन में 4,500 से अधिक बच्चों ने भाग लिया, एक ड्राइंग प्रतियोगिता जो 30 रोटरी क्लबों द्वारा जिले भर में आयोजित की गई थी।पोलियो वैक्सीन के आविष्कारक डॉक्टर जोनास साल्क और डॉक्टर

नीचे: *रोटरी क्लब दिल्ली रीजेंसी नेक्स्ट, रो ई मंडल 3011,के सदस्य, RISAO कर्मचारियों के साथ। INPPC के चेयरमैन दीपक कपूर (बीच में) अभियान को शुरूकरते हुवे, TRF (RISAO) संजय परमार (चरम दायें) चित्र में शामिल हैं।*

रो ई मंडल 3190 द्वारा आयोजित एक ड्राइंग प्रतियोगिता के प्रतिभागी।

गुड़गांव क्लब के रोटेरियन, गुड़गांव के उड्रक्र साइबर सिटी में आयोजित एक स्वास्थ्य शिविर में।
बाएं: *होशियारपुर में पोलियो रैली के प्रतिभागियों के साथ उड्रक्र सुनील नागपाल।*

अल्बर्ट साबिन के चित्र बेंगलुरु में वनविलास अस्पताल के बाल चिकित्सा विभाग में अनावरण किए गए। टार्चलाइट पीस असेंबली में सिटी पुलिस कमिश्नर भास्कर राव मुख्य अतिथि थे जिसमें बहुत से रोटरी लीडर्स, रोटरेक्टर एवं जनता ने हिस्सा लिया। पीस असेंबली में जनता के एक आकर्षक नृत्य, रोटरी संदेश वाहन और कैंडल लाइट प्रमुख आकर्षण रहे।

होशियारपुर, पंजाब में, डीजी सुनील नागपाल, रो ई मंडल 3070, ने स्कूली छात्राओं द्वारा रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया जिसका आयोजन स्थानीय क्लबों के द्वारा स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से किया गया था।

एल गुनाशेकरण द्वारा रुपांकन

नई साझेदारियां/मित्रता बनाने का एक अनोखा विचार

रशीदा भगत

जब रो ई मंडल 3201 के डीजीई के रूप में माधव चंद्रन एक रोटरी नेतृत्वकर्ता के जीवन की सबसे उत्तेजक यात्राओं में से एक, जनवरी 2019 में सैन डिएगो में सम्पन्न हुये अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, में जाने की तैयारी कर रहे थे, तो अधिकांश निर्वाचित-गवर्नरों की तरह ही, वह भी अपना सर इस बात को लेकर खुजा रहे थे कि कार्यक्रम में आ रहे 500-विलक्षण डीजीईयों के लिए क्या उपहार ले जाया जाए।

पहले उन्हें केरला से सम्बद्ध सभी प्रकार की विशिष्ट स्मारिकाओं का विचार आया, जिनमें हाथी एवं तैरने वाले घर शामिल थे। ''लेकिन फिर मैं कुछ भी ऐसा नहीं ले जाना चाहता जिससे मेरा सामान भारी हो, क्योंकि सुजाता और मैं सीमित वजन का सामान ही ले जा सकते थे। फिर, मैंने सोचा, सभी को स्मारिकाएँ देने के बजाय, क्यों ना संख्या को कम किया जाए, और केवल उन्हें दिया जाए जो हमारे मंडल से जुड़े हुये है।''

और रोटरी में सेवा परियोजनाओं से अच्छा क्या संबंध हो सकता है? इसलिए चंद्रन ने दिल्ली में RISAO से संपर्क किया ताकि उन सभी परियोजनाओं की जानकारी निकाली जा सके जो उनके मंडल (तत्कालीन रो ई मंडल 320) ने अंतर्राष्ट्रीय क्लबों एवं मंडलों के साथ किए थे। ''वे बहुत ही सहायक थे और उन्होंने एक एक्सेल शीट दी जिसमें वर्ष 1990 से शुरुआत करते हुये उन क्लबों एवं मंडलों के नाम थे जिन्होंने हमारे मंडल (320) के साथ संयुक्त परियोजनाएं की थी'' वह मुस्कुराए। जो जानकारी उनके हाथ लगी वह एक आभासी खजाना थी - 313 परियोजनाएं, जो 10.84 मिलियन डॉलर की बड़ी राशि खर्च करके दुनिया भर के 104 मंडलों के साथ साझेदारी में की गई थी!

अब उनके पास 104 मंडलों की सूची थी और उन्होंने तय किया कि उन्हें उनके नवनिर्वाचित गवर्नरों को व्यक्तिगत उपहार देने चाहिए। सबसे पहले, डीजीई को हालात से अवगत कराना था वरना वह इस पूरे अभ्यास को लेकर उलझन में रहते। फिर, मुझे व्यक्तिगत उपहारों को तैयार करना

था, ताकि होटल के कमरे में फेंकने के बजाय लोग उन्हें घर ले जा सकें। इसलिए मैंने तय किया कि यदि मंडल के नामों एवं की गई परियोजनाओं के साथ डीजीई का नाम और तस्वीर तोहफे पर होगी, तो उनके घर पहुँचने की संभावना बढ़ जाएगी।''

यह तय किया गया कि वह हर एक डीजीई को एक व्यक्तिगत ङ्क्षसम्मान सूचीपत्रफ प्रस्तुत करेंगे जिन्होंने चंद्रन के मंडल के साथ परियोजनाएं की थी। इसका मतलब था सूचीपत्र पर डीजीई और उनके साथी की तस्वीर लगाना। ऐसा कहना करने से आसान था; ''मेरे मंडल सचिव जोजो जैकब पूरे एक हफ्ते तक मेरे कार्यालय में बैठकर मेरे साथ गूगल पर नवनिर्वाचित गवर्नरों और उनके साथियों की तस्वीर ढूंढते रहे,'' वह हँसते है। यह जानकर वह आश्चर्यचकित रह गए कि कुछ मंडल, विशेषरूप से यूएस के, ने रो ई मंडल 320 के साथ 10-14 परियोजनाएं की थी।

अंततः सैन डिएगो में बहु-प्रतीक्षित गवर्नर प्रशिक्षण कार्यक्रम का समय आया। डीजीई माधव चंद्रन और उनकी पत्नी सुजाता 104 व्यक्तिगत आभार सूचीपत्रों के साथ फ्लाइट में चढ़े।

डीजी याद करते है: ''अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन वास्तव में एक ऐसा अनुभव था जिसे याद किया जाना चाहिए। ग्रांड बॉल रूम का वैभव, मंच की भव्यता, घड़ी की सुई के साथ होने वाले कार्यक्रम; वह संस्कृतियों, पोशाकों और वेशभूषाओं का संगम था। लेकिन 100-विलक्षण डीजीईयों से मिलकर यह हमारे लिए और भी अधिक खास बन गया।''

जो जानकारी उनके हाथ लगी वह एक आभासी खजाना थी – 313 परियोजनाएं, जो 10.84 मिलियन डॉलर की बड़ी राशि खर्च करके दुनिया भर के 104 मंडलों के साथ साझेदारी में की गई थी!

रो ई मंडल 3201 के DG माधव चंद्रन और उनकी पत्नी सुजाता, DG बेथ ई ट्रोलर और उनकी पत्नी रॉडनी को आभार स्कॉल देते हुए।

जब युगल उन मंडलों, जो अतीत के विश्वसनीय साझेदार थे, के डीजीईयों को ढूँढने निकले और उन्हें सूचीपत्र प्रस्तुतु किए, जिससे ना केवल पुराने संबंध मजबूत हुये बल्कि नए संबंध भी कायम हुये, तो सूचीपत्र चर्चा के विषय बन गये! ''इतनी सारी परियोजनाओं के बारे में जानकर अचंभा हुआ जिन्होंने बच्चों को ठीक किया, वृद्धजनों को सहारा दिया और बड़ी संख्या में लाभार्थियों को स्वास्थ्यलाभ, शिक्षा एवं स्वच्छता प्रदान की,'' चंद्रन ने कहा, इस बात को स्वीकार करते हुये कि ''अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 19 में लगभग 2000 प्रतिनिधियों में से 104 चेहरों को पहचानना एक भयावह स्वप्न जैसा था, लेकिन परिणाम जादुई थे।''

डीजी आगे कहते है कि यूएस से एक डीजी ने पहले ही उनसे 15,000 डॉलर की एक चलित नेत्र क्लीनिक परियोजना के लिए संपर्क किया है। और फिर दोस्ती का यह अमूल्य बंधन है। हाल ही में, ''ओणम के दौरान, जब मेरे पास कुछ खास काम नहीं था और मैंने परिवार के साथ मॉरीशस में छुट्टी बिताने का फैसला किया, तो मैंने एक डीजी को कॉल किया जिन्हें मैंने ऐसे ही एक सूचीपत्र से सम्मानित किया था। हवाईअड्डे पर उनके डीजीई और डीजीएन के साथ हमारा स्वागत करने के लिए उपस्थित होकर उन्होंने मुझे अभिभूत किया। मैंने भी उनके क्लब का दौरा करके उनके सदस्यों को संबोधित किया।'' ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

मासिक धर्म पर परिचर्चा की शुरूआत

जयश्री

चार जिलों के प्रतिनिधियों का मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन (मेनस्ट्रल हाइजीन मैनेजमेंट, एमएचएम) के सेमिनार के लिए इकट्ठा होना एक बहुत ही शानदार योजना थी जिसका आयोजन रोटरी क्लब सेवन हिल्स धारवाड, रो ई मंडल 3170 के द्वारा किया गया। सेमिनार में इस बात पर परिचर्चा हुई कि पुरूषों को मासिक धर्म को समझने की क्यों जरूरत है अर्थात उन्हें इसे क्यों समझना चाहिए और पुरूष इसे महिलाओं के लिए आसान बनाने के लिए किस प्रकार से मदद कर सकते हैं और कि क्या लड़कियों को अपने घर में सिर्फ इस वजह से ही अपने को बंद रखने की आवश्यकता है कि वह मासिक धर्म में हैं। जब एक पुरूष प्रतिनिधि ने पूछा कि इसे ''पीरियड'' क्यों कहा जाता है तब एक महिला प्रतिनिधि ने चुटकी ली - ''यह इस बात को दर्शाता है कि हम कम से कम रोटरी में कैसे मासिक धर्म पर बिना किसी रोकटोक के खुले रूप से इस पर चर्चा करने का एक लंबा रास्ता तय कर चुके हैं और यहां पर हम पुरूषों के साथ इस विषय पर चर्चा करने में पूरी तरह से सहज हैं। इस विषय पर मौन को हर जगह तोड़ दिए जाने की आवश्यकता है। धारवाड के आसपास के सरकारी स्कूलों के शिक्षक और छात्र उपस्थित थे।''

बैठक में शिक्षकों को शिक्षित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया ताकि वे मासिक धर्म को समझदारीपूर्वक और स्वस्थ तरीके से मैनेज करने के लिए छात्रों को प्रशिक्षित करें। बच्चों को ङ्गहैप्पी किटफ प्रदान किए गए, जिसमें प्रत्येक में दो कॉटन रीयूज़ेबल सेनिटरी पैड, हैंडवाश लोशन की एक बोतल, एक साबुन और कुछ चॉकलेट थे। पीडीजी गणेश भट ने कार्यक्रम का आयोजन किया और डीजी गिरीश मसुरकर की पत्नी संध्या मसुरकर ने इसका उद्घाटन किया। मेजबान क्लब की अध्यक्ष गौरी तवरगारी ने प्रतिनिधियों का स्वागत किया। डीजी मसुरकर, डीजीएनडी वेंकटेश देशपांडे और

स्कूली बच्चों को PDG गणेश भट और डॉ मीनाक्षी भारत से हैप्पी किट भेंट में मिले, चित्र में (बायें से) रोटरी क्लब सेवन हिल्स धारवाड़ के सचिव प्रशांति रेड्डी, क्लब अध्यक्ष गौरी तवरगारी, संध्या मसुरकर, रो ई मंडल 3160 के DG नयन पाटिल, शिखा पाटिल, DGND वेंकटेश देशपांडे, इवेंट सह अध्यक्ष वाणी इरकल और संयुक्त सचिव पल्लवी देशपांडे शामिल हैं।

डीजी नयन पाटिल (रो ई मंडल 3160) ने सेमिनार में भाग लिया। मासिक धर्म हमेशा से ही भ्रांतियों से घिरा हुआ विषय रहा है जो कि पीढ़ी दर पीढ़ी से ऐसा ही चला आ रहा है।

गौरी ने कहा कि मासिक धर्म पीरियड वर्जनाएं पूरी दुनिया में हैं। मलावी में मासिक धर्म वाली महिलाएं नमक वाला भोजन नहीं पका सकती हैं क्योंकि वहां पर यह विश्वास किया जाता है कि ऐसा करने से उनके दांत गिर सकते हैं! उन्होंने यह भी कहा कि हमारे देश में यह माना जाता कि महिलाओं को मासिक धर्म के दौरान स्नान नहीं करना या अचार को नहीं स्पर्श करना चाहिए।

मासिक धर्म से जुड़े हुए लांछन सभी जगह ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में निरंतर बरकरार है। यह केवल आइसबर्ग का एक अग्रभाग है। ''हमें मासिक धर्म के स्वच्छता प्रबंधन की दिशा में काम करना चाहिए ताकि कोई भी लड़की उसके मासिक धर्म के दौरान घर पर न रहे केवल इसलिए कि वह मासिक धर्म में है और जैसे कि हमने घरों में हैंडवाश और शौचालयों के उपयोग करने की पहल की है, उसी तरह से बालिकाओं को भी इस परिवर्तन के बारे में शिक्षित करना चाहिए ताकि वह वापस घर जाकर अपनी माताओं, रिश्तेदारों एवं पड़ोसियों को उनके मासिक धर्म पीरियड को सुरक्षित और स्वच्छतापूर्वक मैनेज करना सिखा सकें।'' - भट ने कहा, जो कि रोटरी इंडिया विन्स रिकॅागनिश्न कॅमेटी के सदस्य हैं। उनहोंने ने बताया कि एमएचएम एक हिस्सा विन्स का जो कि स्वास्थ्य और स्वच्छता के मुद्दों पर केंद्रित है।

किसी भी महिला के लिए अपने पीरियड को गरिमा एवं आत्मविश्वास के साथ स्वच्छतापूर्वक मैनेज करने के लिए एक सपोर्ट सिस्टम की जरूरत है, डॉक्टर मीनाक्षी भारत जो स्त्री रोग विशेषज्ञ हैं और रोटरी क्लब बैंगलोर वेस्ट, रो ई मंडल 3190 की सदस्य हैं उन्होंने कहा कि - ''कोई जानता है कि वह कैसा महसूस करती है।'' उन्होंने रीयुजेबल पैड्स और मैनेस्ट्रल कप के माध्यम से सहने योग्य मासिक धर्म की वकालत की। अब हम जो पैड इस्तेमाल करते हैं, वे उतने हानिरहित नहीं हैं जितने कि वे लगते हैं। वे टाक्सिक हैं, उन्होंने कहा और डिस्पोजेबल सेनेटरी नैपकिन वेंडिंग मशीनों और इंकैनेटर्स को बढ़ावा देने के प्रति क्लबों को हतोत्साहित किया। रीयूजेबल कॉटन पैड्स 2-3 वर्ष तक चलते हैं। ''इनमें कोई भी कैमिकल नहीं होता है और ये पर्यावरण के अनुकूल होते हैं एवं इनकी कीमत ₹200 है। केवल उस अच्छाई की कल्पना करें जो आप वातावरण के प्रति कर रहे होंगे व साथ ही साथ किसी गरीब लड़की की मदद भी करेंगे।''

यह इस बात को दर्शाता है कि हम कम से कम रोटरी में कैसे मासिक धर्म पर बिना किसी रोकटोक के खुले रूप से इस पर चर्चा करने का एक लंबा रास्ता तय कर चुके हैं और यहां पर हम पुरूषों के साथ इस विषय पर चर्चा करने में पूरी तरह से सहज हैं।

लोगों में सर्वोत्तम प्रथाओं पर इसके प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए इस पैनल चर्चा में रोचक विचार उत्पन्न हुए।

पीडीजी आनंद कुलकर्णी की पत्नी डॉक्टर राजेश्वरी कुलकर्णी ने याद किया कि कैसे 2017-18 में उन्होंने सदस्य के रूप में रोटेरियन के पति-पत्नी के साथ एन्स क्लब का गठन किया। ''हमने जिले के स्कूलों का दौरा किया और एमएचएम के बारे में शिक्षकों और किशोर लड़कियों से बात की, और डॉक्टरों की मदद के साथ अभिभावकों को सलाह देने के लिए विभिन्न स्कूलों में एक पीटीए बैठक बुलाई।'' वे गांवों का दौरा करते और महिलाओं को सैनिटरी नैपकिन और उनके निपटान के उचित उपयोग के बारे में उन्हें शिक्षित करते थे। स्कूलों में बड़े बच्चों को मासिक धर्म चक्र पर विषय और इसके प्रबंधन को युवावस्था की दहलीज पर लाने के लिए प्रशिक्षित किया गया। स्कूलों में मासिक धर्म चक्र एवं उसको मैनेज करने के प्रति, बड़े बच्चों को उनके जूनियर्स जो यौवन आरंभ की शुरूआत पर हैं, उनको शिक्षित करने के प्रति ट्रेनिंग दी गई।

एक शिक्षक ने एमएचएम के बारे में पीटीए सत्रों में अपने पिता के शामिल होने के अपने अनुभव को साझा किया, जिससे कि कैसे उन्हें जैविक प्रक्रिया

रोटरी क्लब सांगली के सदस्य किशोर लुल्ला (दायें से दूसरे), DG गिरीश मसुरकर को चेक प्रदान करते हुए, चित्र में (बाएं से) प्रशांति रेड्डी, गौरी तवरगारी, इवेंट चेयरमैन रेणुका सालुंके, संध्या मसुरकर और सुनीता लुल्ला शामिल है।

को बेहतर ढंग से समझने एवं परिवार में भावनात्मक संबंधों को बढ़ाने में मदद मिली थी। डॉ मीनाक्षी ने यह भी कहा कि – ''पीरियड के बारे में कानाफूसी करना बंद करें और इसके बारे में पुरूषों को सशक्त बनाएं ताकि वे महिलाओं के मनोविज्ञान को समझ सकें और वे उन्हें सम्मानित नजर से देख सकें।''

रो ई मंडल 3160, डीजी नयन पाटिल की पत्नी शिखा पाटिल ने यह स्वीकार किया कि एमएचएम एक नई अवधारणा (विचार) थी और सेमिनार ने उन्हें अपने जिले में विभिन्न तरीकों से इस मुद्दे का समाधान करने के प्रति नई रोशनी एवं ज्ञान दिया, मासिक धर्म कप के विचार सहित जो कि मासिक धर्म पीरियड को मैनेज करने का एक प्रभावी तरीका है।

ग्रामीण आबादी को शिक्षित करने के प्रति रोटरी क्लब की भूमिका पर प्रकाश डाला गया। मेजबान क्लब की सदस्य डॉ गीता ने यह भी कहा कि – ''RCC की बेहतर पहुँच है और एक अच्छा तालमेल बनाया है, खासकर ग्रामीणों के साथ इसलिए उनके संदेश और सुझाव लोगों तक आसानी से समझे एवं उपयोग में लाए जाते हैं।'' उन्होंने कहा कि रोटरेक्टरों के रूप में, महिलाओं के बीच एमएचएम कार्यक्रम के लिए वे अच्छे संदेशवाहक बने हैं।

स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ प्रिसिला थॉमस ने उन दवाईयों के बारे में बताया जो कि मासिक धर्म के दौरान ऐंठन व दर्द को कम करती हैं। ''इन दवाईओं को लेने के प्रति कई लोगों के बीच कुछ संदेह हैं लेकिन फिर भी मैं इन दवाईयों को लेने की सलाह देती हूँ। ऐसी कल्पित धारणाएं (मिथक) कि इनके लेने से बांझपन आ जाएगा। मासिक धर्म के दौरान के दर्द के कारण लड़कियों को स्कूल जाना बंद करने की आवश्यकता नहीं है।''

RCC की बेहतर पहुँच है और एक अच्छा तालमेल बनाया है, खासकर ग्रामीणों के साथ इसलिए उनके संदेश और सुझाव लोगों तक आसानी से समझे एवं उपयोग में लाए जाते हैं।

दर्शकों ने उस समय परस्पर बातचीत करते रहे जब एक टीचर ने धार्मिक आयोजनों के दौरान के समय में मासिक धर्म को स्थगित करने के लिए दवाओं के उपयोग करने की एक प्रचलित प्रथा का उल्लेख किया। उनहोंने पूछा कि – ''इस युग में ऐसी प्रथा को करने की क्या जरूरत है? क्या अब यह समय नहीं है कि हम इस तथ्य को स्वीकार करें कि यह एक जैविक प्रक्रिया है और इसे धार्मिक प्रथाओं में हस्तक्षेप करने की आवश्यकता नहीं है।''

उत्कर्ष पाटिल, डीजीई संग्राम पाटिल की पत्नी ने एमएचएम जागरूकता फैलाने के प्रति इनर व्हील चेयर के अपने अनुभव को साझा किया। उन्होंने कहा कि हर जगह महिलाओं के बीच प्रभावी पैठ बनाने के लिए रोटरी को इनर व्हील से हाथ मिलाना चाहिए। उन्होंने कहा कि रोटरी महिलाओं और लड़कियों के बीच रीयूजेबल सैनिटरी पैड को वितरित करने के लिए कॉर्पोरेट सहायता ले सकती है जो कि जो हाइजेनिक पीरियड मैनेजमेंट को सुनिश्चित करेगा।

इवेंट की चेयरमैन रेणुका सालुंके ने कहा कि कई लड़कियां मासिक धर्म के प्रति जागरूकता की कमी के कारण स्कूल से दूर रह रही हैं और इस तरह के कई सेमिनारों से संदेश फैलाने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा – ''हम कम से कम 10,000 लड़कियों तक पहुंचना चाहते हैं।''

वर्कशॉप किशोर लुल्ला द्वारा प्रायोजित की गई, जो कि रोटरी क्लब सांगली के सदस्य हैं और आयोजन के दौरान उन्होंने टीआरएफ के लिए ₹5 लाख का चेक DG मसूरकर को दिया। सहायक राज्यपाल संजय इंगले ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

चित्र: जयश्री

जब इंटरेक्टरों ने रोटेरियनों को प्रेरित किया

जयश्री

इंटरेक्ट अध्यक्ष धरणीधरन ने PDG चिन्नादुरई अब्दुल्ला को पोलियो फंड के लिए चेक सौपा। PDG के राजगोपालन चित्र में शामिल हैं।

जब आईपीडीजी चिन्नादुरई अब्दुल्लाह ने रामनाथन चेट्टियार म्यूनिसिपल हाइ स्कूल (RMHS) के विद्यार्थियों से पोलियो कोष में ₹1 दान करने के लिए कहा, तो उन्हें इस बात का ज़रा भी अंदाजा नहीं था कि इससे ₹96,000 (1,070 डॉलर) इकट्ठा हो जाएंगे। अब्दुल्लाह ने एक एआरआरएफ़सी के रूप में स्कूल के नए इंटरेक्ट क्लब के संस्थापन कार्यक्रम की अध्यक्षता की। उन्होनें घोषणा की कि यदि स्कूल, जिसमें 1,300 विद्यार्थी है, 1,500 दान कर सकें तो वह उसका मिलान उतनी ही राशि से करेंगे, और इंटरेक्ट क्लब के नाम से पोलियो कोष में योगदान देंगे। लेकिन रोटेरियनों को आश्चर्यचकित करते हुये, इंटरेक्टरों ने 35,000 इकट्ठा किए।

''एक नया क्लब होने के नाते, हम हमारे पहले कार्यभार को लेकर उत्साहित थे। चिन्नादुरई सर ने हमसे पोलियो एवं भारत को पोलियो मुक्त बनाने में रोटरी ने कैसे अहम भूमिका निभाई इस बारे में बात की। उनके सम्बोधन से प्रेरित होकर, हमने दो टीमें बनाई और सभी कक्षाओं में गए। हमने विद्यार्थियों से पोलियो के बारे में बात की और दुनिया भर से इस बीमारी को मिटाने हेतु मदद करने के लिए योगदान देने की अपील की। हमारे दोस्त जितना दे सकते थे उन्होनें उतना दिया और जब हमने हमारे द्वारा एकत्रित की गई राशि की गणना की, तो हम उस बड़ी राशि को देखकर चकित एवं प्रसन्न थे जिसे हमने हमारे पहले ही प्रयास में एकत्रित की थी,'' धरानीधरण कहते है जो कक्षा खद के एक छात्र है और RMHS के इंटरेक्ट क्लब के अध्यक्ष है जिसका प्रायोजन कराईकुडी पर्ल संगमम, रोई मंडल 3212, द्वारा किया गया था।

> हमारे दोस्त जितना दे सकते थे उन्होनें उतना दिया और जब हमने हमारे द्वारा एकत्रित की गई राशि की गणना की, तो हम उस बड़ी राशि को देखकर चकित एवं प्रसन्न थे जिसे हमने हमारे पहले ही प्रयास में एकत्रित की थी।
>
> **धरणीधरन**
> अध्यक्ष, RMHS के इंटरेक्टर क्लब

स्कूल के प्रधानाध्यापक पीटर राजा, जो मूल रोटरी क्लब के अध्यक्ष भी है, ने एक अन्य सदस्य PAG मत्तुकुमार के साथ मिलकर इंटरेक्टरों को उनके योगदानों द्वारा प्रेरित किया।

कहानी यहीं खत्म नहीं होती। जब इंटरेक्टरों ने उनके योगदान को ARRFC अब्दुल्लाह को सौंपा, तो रोटेरियनों ने खुद को साबित किया और अपना योगदान दिया, जिससे कुल राशि ₹48,000 पर आ गई। अब्दुल्लाह ने इसका मिलान किया, और इस संयुक्त प्रयास द्वारा टीआरएफ़ के पोलियो कोष में ₹96,000 का योगदान दिया गया।

उत्साहित इंटरेक्टर अब एक बड़े पैमाने पर हरियाली अभियान चलाने एवं स्कूल परिसर और उनके आस-पड़ोस में देशी पौधे रौंपने की योजना बना रहे है। ■

एक रोटरेक्ट क्लब 19वें वर्ष विशेष बच्चों के लिए एक वार्षिक कार्यक्रम को जारी रखता है

रशीदा भगत

यदि एक पुरस्कार प्राप्त करने के लिए संवहनीयता एक महत्वपूर्ण घटक है, तो आपको रोटरेकट क्लब आकाश के पास जाना चाहिए जिसका प्रायोजन रोटरी क्लब मद्रास फोर्ट, रोई मंडल 3231, करता है। भारत में मौजूद कुछ रोटरेकट क्लबों में से एक जिसके 45 सदस्यों में से अधिकांश सदस्य युवा पेशेवर है, इस क्लब की स्थापना 24 वर्ष पूर्व हुई थी, और 19वें वर्ष में भी इस क्लब ने हाल ही में चेन्नई में इसके द्वारा लगातार आयोजित किये जाने वाले इसके सबसे पसंदीदा वार्षिक कार्यक्रम का आयोजन किया।

12 अक्टूबर को इस वर्ष भी, चेन्नई के असान मेमोरियल सीनियर सेकेंडरी स्कूल गतिविधियों, मनोरंजन एवं उत्साह से भरपूर था, क्योंकि यहाँ शहर के विभिन्न विशेष बच्चों के स्कूलों से 600 युवा आगंतुक आए थे। वे यहाँ गाना गाने, नाचने, चित्रकारी करने, सभी प्रकार के करतब एवं कलाबाजियाँ दिखाने, और आमतौर पर मज़ा करने आए थे। जब मुझे रोटरेकट क्लब की अध्यक्ष पूर्णिमा सुदररमन से *पुन्नागई* (तमिल में मुस्कान) के बारे में संक्षिप्त किन्तु बहुत अच्छी जानकारी मिली, तो मैंने अधिक जानकारी के लिए क्लब का

फ़ेसबुक पेज देखा। यहाँ पर, दो तस्वीरों एवं एक वीडियो क्लिप ने मेरा ध्यान आकर्षित किया।

पहली तस्वीर लाल, पीले, हरे एवं नारंगी जैसे जीवंत रंगों से बनी *पुकोलम* (फूलों की डिज़ाइन) की है जिसका शीर्षक था मुझे बचाओ। यह भारत की आकृति थी जिसे बच्चा बचाना चाहता है; दूसरी तस्वीर का शीर्षक है 'प्रकृति बचाओ धरती बचाओ।' इन दो तस्वीरों से युवा पीढ़ी की पर्यावरण संबंधी चिंताओं को अच्छी तरह प्रदर्शित किया गया है। यह वीडियो एक किशोर का है जिसका एक पैर नहीं है और वह मंच पर अद्भुत नृत्य एवं कलाबाजी का प्रदर्शन कर रहा है; उसका आत्मविश्वास और स्टाइल आपको अचरज में डाल देता है!

पूर्णिमा, जो व्यक्तिगत कारणों से अभी यूएस में है, कहती है कि क्लब में 45 सदस्य है, लेकिन केवल 30 ही वास्तव में सक्रिय है। पुन्नागई एक वार्षिक कार्यक्रम है जिसमें क्लब के रोटरेकटर पूरी तरह सम्मिलित होते है। क्लब सचिव अर्जुन एस. कहते है कि इस कार्यक्रम के लिए, उन्हें शहर के विभिन्न स्कूलों से 500 से 600 बच्चे मिलते है। पूरे दिन चलने वाले इस कार्यक्रम के लिए, ''बच्चे हमारी ज़िम्मेदारी होते है। विभिन्न स्कूलों से बच्चों को लाने, उन्हें नाश्ता, भोजन देने, उसके बाद एक चाय देने से लेकर उन्हें सुरक्षित ढंग से वापस उनके स्कूल छोड़ने का काम हमारा होता है। यह सब करते हुये हमें इस बात को सुनिश्चित करना होता है कि बच्चों के चेहरे से मुस्कुराहट ना जाए!'' वह कहती है।

यह कॉलेज-आधारित क्लब होने से अधिक एक समुदाय-आधारित क्लब है, जिसके अधिकतर सदस्य कामकाजी है। जहाँ पूर्णिमा एक डेटा एनलिस्ट है, वहीं अर्जुन एक कंपनी में काम करते है। वह कहते है कि हर साल वह इस कार्यक्रम को बड़े रूप में आयोजित करते है और इस वर्ष इसकी लागत थी ₹4 लाख। ''कॉर्पोरेट प्रायोजन एवं रोटेरियनों से दान लेकर हमने धन एकत्रित किया था,'' अर्जुन कहते है।

पूर्णिमा आगे कहती है कि इस एक-दिवसीय सांस्कृतिक कार्यक्रम

में दोनों शारीरिक एवं मानसिक रूप से अपंग बच्चे शामिल होते है। ''इस दिन, हर वर्ष, हम इन बच्चों को मज़ा-मस्ती करने का एक मंच प्रदान करते है। वे संगीत, नृत्य, चित्रकारी, रंगोली/कोलम के साथ-साथ अन्य गतिविधियों में रचनात्मक एवं अभिनव शैली में विभिन्न प्रदर्शन करते है। यह उन्हें दुनिया को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का एक अंतर-विद्यालयी मंच प्रदान करता है, जो उनके मनोबल के साथ-साथ उनकी रचनात्मक भावनाओं को उत्तेजित करता है,'' वह कहती है।

19 वर्षों से एक रोटरेक्ट क्लब द्वारा एक एकल परियोजना को करने

एवं उसे बरकरार रखने से भी बढ़कर एक बात यह है कि वे कला एवं संस्कृति जगत के प्रख्यात व्यक्तियों को आमंत्रित करने का ध्यान रखते है, ताकि जब भी वे किसी प्रतिभा को देखें, तो वे उन बच्चों को एक बड़े मंच के साथ-साथ भविष्य में संभवतः एक आजीविका भी दे सकें।

पूर्णिमा आगे कहती है, ''हमें यह कार्यक्रम इतना उद्देश्यपूर्ण एवं मनोरंजक लगता है, हमें और बच्चों दोनों को ही, कि हम चाहते है कि हम अन्य शहरों में भी *पुन्नागई* को दोहरा सकें ताकि अधिक विशेष बच्चों को यह मंच मिल सके।''

सामुदायिक सेवा के प्रति वास्तव में उत्साही, यह रोटरेकट क्लब एक अन्य कार्यक्रम का आयोजन कर रहा है जिसका शीर्षक *संगमम* है, जो सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों में नेतृत्व के गुणों को विकसित करने, एवं ग्रामीण बच्चों के लिए एक खेल टूर्नामेंट कराने वाला RYLA जैसा ही एक कार्यक्रम है।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

Rotary PEOPLE OF ACTION

घर पर ही आंखों की देखभाल

जयश्री

गिंडी का रोटरी क्लब, रो ई मंडल 3232 अपना रजत जयंती वर्ष मना रहा है, इसके सदस्य अपने प्रोजेक्ट 'साइट नाऊ' के बारे में उत्साहित हैं जिसे दो साल पहले 87,500 डॉलर की वैश्विक अनुदान परियोजना के रूप में 900 मोतियाबिंद की सर्जरी के के लिए लॉन्च किया गया था। रोटरी क्लब नाइल्स फ्रेमोंट, रो ई मंडल 5170 यूएस और टीआरएफ अंतर्राष्ट्रीय पार्टनर हैं और शंकर नेत्रालय इसे क्रियान्वित करने वाला अस्पताल है। दो वाहन, जो विशेष रूप से आईआईटी-मद्रास द्वारा डिजाइन किए गए हैं, जिनका उपयोग ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों के लोगों के इलाज के लिए किया जा रहा है जहाँ चिकित्सा सुविधाओं की कमी है।

नागाम्मल (65) जो कांचीपुरम के पास एक फूल विक्रेता हैं। पिछले एक साल से वह अपने घर तक ही सीमित थीं क्योंकि उनकी दोनों आंखों में मोतियाबिंद था और वह सभी कुछ के लिए अपने बेटे के परिवार पर आश्रित थीं। ''जब मुझे इस बस में इलाज के लिए ले जाया गया, तो उस समय मैं बहुत घबरायी हुई थी, लेकिन अब, मैं इन रोटेरियन को धन्यवाद देती हूँ क्योंकि अब मैं वापस काम पर जाने में सक्षम हूँ और अब मैं अपनी देखभाल खुद करने में खुश हूँ '' - वह मुस्कुराती है।

कांचीपुरम में लगभग 120 सर्जरी की गईं और इसके बाद कुड्डलोर जिले के एक गांव में की गई। ''नागपट्टिनम में हमने स्थानीय रोटरी क्लब, रोटरी क्लब नागपट्टिनम, रो ई मंडल 2981 के साथ 10 दिवसीय नेत्र शिविर के लिए करार किया था।'' क्लब के अध्यक्ष शिवारामन ने बताया कि - ''उनकी व्यापक पीआर गतिविधियां 1000 मरीजों के लिए लाई गईं।''

उन्होनें कहा कि लगभग 150 सर्जरी की गई हैं और 457 से अधिक सर्जरी करने की योजना इस साल के अंत तक के लिए बनाई गई है।

क्लब के पीआर चेयरमैन कृतिकामाधु ने कहा कि दो बसें - एक स्क्रीनिंग रोगियों के लिए और दूसरी इन-बिल्ट ऑपरेशन थियेटर के साथ - डॉक्टरों के साथ कैंप साइट पर संचालित हैं। वाहन आरओ प्लांट, जेनसेट, एयर कंडीशनर और चिकित्सा उपकरणों द्वारा सुसज्जित हैं।

सिवनी-लेस-लेजर ट्रीटमेंट के जरिए मोतियाबिंद को हटाया जाता है। आमतौर पर एक सर्जरी के लिए लगभग ₹30,000-40,000 तक का खर्च आता है, लेकिन रोटरी के लिए यह ₹5,750 के अनुदानित शुल्क पर है। परियोजना में आंध्र प्रदेश और कर्नाटक के कुछ हिस्सों सहित 600-700 किलोमीटर के दायरे तक के लाभार्थी शामिल हैं। एक ऑप्थेल्मिक टीम फॉलोअप करने के लिए एक सप्ताह बाद क्षेत्र में जाती है।

शिवारामन ने बताया कि इस तरह की सुविधाएं केवल चेन्नई और छत्तीसगढ़ में उपलब्ध हैं और गांव वालों को यदि यात्रा करनी पड़े तो उनको अपनी दैनिक मजदूरी का नुकसान उठाना पड़ेगा। इसलिए वह अपनी आंखों की उपेक्षा करते हैं।

डीजी जी चंद्रमोहन (रो ई मंडल 3232) और मणिमारन (रो ई 2981), ने आयोजन के बाद क्लब के सदस्यों को बधाई दी।

क्लब ने क्रॉम्पटन ग्रीव्स के सहयोग से गैर-कार्यकारी स्कूल को रोटरी क्लब गिंडी हाई स्कूल में रूपांतरित किया। 2009 में स्थापित व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र, क्षेत्र में गरीब-वंचित महिलाओं के लिए सिलाई, गुड़िया बनाने, ब्यूटीशियन कोर्स चलाने और कंप्यूटर साक्षरता के लिए कक्षाएं प्रदान करता है।

क्लब ने एक सरकारी स्कूल के 30 बच्चों के लिए, जो कि शैक्षणिक रूप से कमजोर हैं, उनके लिए कंप्यूटर शिक्षा, स्पोकन इंग्लिश और गणित की सुविधा प्रदान की है। ''हम वहां जाते हैं और उन्हें हम कुछ लाइफ-स्किल्स सिखाते हैं। एक बैंकर उनहें बैंकिंग प्रक्रिया सिखाता है। हाल ही में हम उन्हें एक रेस्तरां में ले गए और वहां हमने उन्हें भोजन करने के शिष्टाचार सिखाए। वे हर सप्ताह हमारे साथ बिताए गए एक घंटे का आनंद उठाते हैं और सीखते भी हैं'' कृतिका ने मुस्कुराते हुए बताया।

कोट्टिवाक्कम सेंटर फॉर एक्यूट डेंटल केयर क्लब की का एक और हॉलमार्क प्रोजेक्ट है। यह सन् 1988 में रोटरी क्लब लोरेन्सकोग, नॉर्वे के सहयोग से स्थापित किया गया था। शिवारामन ने बताया - यहां 20,000 से अधिक मरीजों का इलाज किया गया है। एक डायलिसिस यूनिट और एक हेल्थ सेंटर क्लब के अन्य स्वास्थ्य संबंधी प्रयास हैं। ■

बाएँ से: मोतयाबिद सर्जरी के बाद मरिज़ शिविर में RID 3232 DG जी चन्द्रमोहन, RID 2981 DG एन मणिमारन नागपट्टिणम आई केम्प में रोटेरियन नीलकंटन लोगनाथन गिंडी के रोटरी क्लब में बातचीत करते हुए।

गोल्डन जुबली गवर्नर

अनीश शाह,

पॉलीमर्स डिस्ट्रीब्यूटर, रोटरी क्लब बुलसार, रो ई मंडल 3060

वह दूसरी पीढ़ी के रोटेरियन है। उनके पिता, प्रद्युमन शाह, 40 वर्षों से एक रोटेरियन थे और उनकी माँ हंसाबेन ने 1987-88 में मंडल इनरव्हील अध्यक्ष के रूप में सेवा दी। ''मुझे याद है कि जब 80 के दशक में मैं अपने पिता के साथ क्लब की बैठकों में जाया करता था, तो मैं वहाँ काफी युवा PRIP कल्याण बेनर्जी को देखता था, अनीश शाह कहते है,'' आगे कहते हुए कि सभी गवर्नरों को उनके पिता जानते थे। ''जब 2010 में उनका निधन हुआ, तो PRIP बैनर्जी (मैं उन्हें अंकल और बिनोटादी, को आंटी पुकारता हूँ) उनके अंतिम संस्कार में आए थे। वह तब RIPE थे। वह कहते थे कि मेरे पिता एक गवर्नर के रूप में उनके प्रतिद्वंदी थे। उसी तरह, PRID मनोज देसाई भी हमारे परिवार के करीब है।''

एक गवर्नर के रूप में सेवा देना उनके पिता का सपना था और शाह उनके सपने को पूरा करके खुश है।

वह उनके मंडल की स्वर्ण जयंती का उत्सव मनाने को लेकर उत्साहित है और इस वर्ष के लिए 100 करोड़ की 5,000 सेवा परियोजनाओं की योजना बना चुके है। ''हम अब तक 1,500 परियोजनाओं को निष्पादित कर चुके है, जिसने कम से कम 15 लाख लोगों को लाभान्वित किया है। हमारा ध्यान मातृ एवं शिशु देखभाल, WinS और साक्षरता पर है।''

वह उनके मंडल की सदस्यता, जो अभी 4,045 पर है, को वर्ष के अंत तक 5,000 तक ले जाने को लेकर आश्वस्त है। क्लब ने 600 नए सदस्यों को नियुक्त किया है लेकिन अभी तक माय रोटरी पर उनका पंजीकरण नहीं हुआ है।

टीआरएफ अनुदान के लिए उनका लक्ष्य 1.5 मिलियन डॉलर का है। ''योगदान के लिए मेरा लक्ष्य 100 प्रतिशत रोटेरियन-भागीदारी का है। पिछले वर्ष 39 प्रतिशत रोटेरियनों ने ही योगदान दिया था। यदि प्रत्येक सदस्य कम से कम 25 डॉलर भी योगदान करें, जो एक परिवार के रात्रि भोज की न्यूनतम लागत है, तो यह मंडल रिकार्ड्स तोड़ सकता है,'' वह कहते है।

स्वाति, उनकी पत्नी, रोटरी क्लब वलसाड की एक रोटेरियन है और जल्द ही क्लब का नेतृत्व करने की आशा रखती है।

आपके गवर्नरों से मिलें

जयश्री

TRF को दान और मोतियाबिदं सर्जरियाँ पर इनका फोकस

रंजीत सिंह सैनी,

विद्युत् उपकरण, रोटरी क्लब रायपुर रॉयल, रो ई मंडल 3261

वह 1996 में रोटरी से जुड़े। रंजीत सिंह सैनी याद करते है कि कैसे उन्होंने बिना अपने क्लब का नंबर या क्लब का नाम जाने एक ग्रीन रोटेरियन से एक गवर्नर का पदभार संभाला। यह तब हुआ जब वह उनके हनीमून के लिए दार्जीलिंग में थे। जब वह और उनकी पत्नी रज्जो एक हस्तशिल्प की दुकान पर थे, उन्होंने वहाँ दीवार पर चार मार्ग परीक्षण का इश्तिहार देखा, और दुकान के मालिक से पूछा कि क्या वह एक रोटेरियन है। उत्साहित मालिक ने सैनी से उनके क्लब का नाम और मंडल का नंबर पूछा। ''तब तक मैं क्लब और मंडल के नाम के सन्दर्भ में कुछ नहीं जानता था। मैं केवल इतना जानता था कि मैं एक रोटेरियन था,'' वह हँसते है। बाद में दुकान के मालिक ने उस जोड़े के लिए गंगटोक की यात्रा का प्रबंध किया।

सैनी को ज़मीनी स्तर का काम पसंद है ''जैसा कि रोटेरियन कर रहे है और पर्दे के पीछे ऐसे बहुत से रोटेरियन है जो कोई भी कार्य नाम और शोहरत के लिए नहीं करते। वे सेवा परियोजनाएं इसलिए करते है क्योंकि वह लोगों के साथ समानुभूति रखते है,'' वह कहते है।

लगभग 12 प्रतिशत नए सदस्य को जोड़कर, उन्हें गर्व है कि सदस्यता में उनके मंडल ने बहुत अच्छा कार्य किया है। लेकिन वह कुछ क्लबों द्वारा सदस्यों के बारे में रिपोर्ट ना किये जाने को लेकर चिंतित है। ''ऐसे बहुत से सदस्य है जो 10 वर्षों या उससे अधिक से रोटेरियन है, लेकिन उनका पंजीकरण क्रमांक नहीं है। इस मुद्दे को सम्बोधित करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि रोटेरियनों को रोइ द्वारा दिए जाने वाले पंजीकरण क्रमांक को प्राप्त करने पर ज़ोर देना चाहिए।''

टीआरएफ को देने पर, मंडल का लक्ष्य 120,000 डॉलर का था लेकिन ''हम पहले ही अबतक 300,000 डॉलर इकट्ठे कर चुके है। मेरे क्लब ने अकेले 110,000 डॉलर दिए है और 35,000 डॉलर मेरी नियुक्ति के दौरान इकट्ठे किये गए थे,'' वह मुस्कराते है।

वर्ष के लिए उनकी योजनाओं में ₹4 करोड़ की लागत वाली मोतियाबिंद सर्जरियाँ करना और रायपुर के सत्य साईं अस्पताल में ₹2.9 करोड़ की लागत वाले एक ऑपरेशन थिएटर को स्थापित करना शामिल है, दोनों ही वैश्विक अनुदानों की मदद से। RAHAT चिकित्सा शिविरों को आयोजित करना भी उनके एजेंडे में शामिल है। ''हमने मंडला में एक शिविर आयोजित किया था जिससे 100,000 लोग लाभान्वित हुए, इस वर्ष के अंत तक कोरबा और जबलपुर में दो और शिविरों को आयोजित करने की योजना है।''

वह राज्य-स्तर के बैडमिंटन विजेता है और उनकी पत्नी रज्जो रोटरी क्लब रायपुर क्वींस की एक सदस्य है।

रोटरेक्ट को बढ़ाना उनकी प्राथमिकता है

संजय अग्रवाल,

विद्युत सामान के वितरक, रोटरी क्लब काशी, रो ई मंडल 3120

युवाओं को यह अनुभव करने के लिए रोटरी से जुड़ना चाहिए कि यह उनकी ज़िंदगियों को कैसे समृद्ध बनाता है। मेरे इंटरैक्ट और रोटरेक्ट के दिनों से ही मेरी ज़िंदगी बहुत सुन्दर तरीके से प्रभावित हुई है, और मैं अभी भी एक रोटेरियन के रूप में सीख रहा हूँ,'' संजय अग्रवाल उत्साहपूर्वक कहते है। 1989 में उनके रोटरी क्लब से जुड़ने से पहले, वह 1970 के दशक में एक इंटरेक्टर और 1982-88 में रोटरेक्टर थे।

अग्रवाल वयस्क साक्षरता और बाल विकास को बढ़ावा देने को लेकर उत्सुक है। ''हम ई-शिक्षण कक्षाओं को स्थापित करने के लिए भी बहुत सारा कार्य कर रहे है,'' वह कहते है।

वह चाहते है कि प्रत्येक सदस्य रोटरी में कम से कम एक सदस्य को जोड़े और उन्हें ''यकीन है कि मौजूदा 3,478 सदस्यों के साथ, हम इस आंकड़े को दोगुना कर सकते है।''

टीआरएफ के लिए धन जुटाने की भी उनकी यही रणनीति है: ''मैंने प्रत्येक रोटेरियन से 100 डॉलर का योगदान करने के लिए कहा है।'' वह इस बात को साझा करते हुए खुश है कि हाल ही में वाराणसी में आयोजित किये गए टीआरएफ सेमिनार में 130,000 डॉलर इकठ्ठा हुए।

उनकी पत्नी पूनम रोटरी क्लब वाराणसी वृंदा की एक सदस्य है और एक पूर्व सहायक गवर्नर है। वह रोटरी से जुड़ने के लिए रोटेरियनों की पत्नियों को प्रोत्साहित कर रही है।

मानवीय परियोजनाएं रोटेरियनों को प्रेरित कर सकती है

धीरन दत्ता,

होज़री व्यापारी, रोटरी क्लब ईस्ट भोपाल, रो ई मंडल 3040

वह 16 रोइ सम्मेलनों में जा चुके है और, उनकी पत्नी सुनीता के साथ, उन्होंने इनमें से नौ सम्मेलनों में सहायक सार्जेंट-एट-आर्म्स के रूप में सेवा दी। धीरन दत्ता यह कहते हुए गर्व महसूस करते है कि उनका कोट 380 पिनों से सुशोभित है, जो इस बात का साक्ष्य है कि उन्हें दुनियाभर के रोटेरियनों से बातचीत करना पसंद है।

''रोटरी से जुड़ने की प्रेरणा मुझे घर से ही मिली, वह कहते है, 1991 में उनके क्लब से जुड़ने के पूर्व इंटरेक्ट और रोटरेक्ट से जुड़ने के लिए अपने रोटेरियन पिता द्वारा उत्साहित किये जाने पर। इस संस्थान की अंतर्राष्ट्रीयता और जरूरतमंदों की मदद करने के लिए इसके द्वारा प्रदान किये जाने वाले अवसर मुझे पसंद है।'' वह एक GSE और GFE नेता रह चुके है और श्रीलंका के लिए IYE दल का नेतृत्व कर चुके है।

दत्ता का विचार है कि जब रोटरी की सार्वजनिक छवि में वृद्धि होगी, तो रोटेरियन टीआरएफ में उदारतापूर्वक योगदान देने के लिए प्रेरित होंगे। ''हाल ही में भोपाल और लखनऊ में आयोजित किये गए LN-4 कृत्रिम अंग शिविरों से हमारे सदस्यों की मानसिकता उन्नत हुई है। पंजीकृत 358 लोगों में से लगभग 320 लोग इस शिविर से लाभान्वित हुए। हम सभी इस शानदार कार्य से खुश है और मुझे यकीन है कि यह अच्छा महसूस करने वाला जो मनोभाव है वह एक बड़े समाज को लाभान्वित करने में परिवर्तित होगा।''

टीआएफ को देने के लिए उनका लक्ष्य 80,000 डॉलर का है, वह कहते है, जो प्राप्त करने योग्य है, ''हालाँकि मध्यप्रदेश तुलनात्मक रूप से एक गरीब राज्य है।'' वह मंडल की सदस्यता को 20 प्रतिशत से बढ़ाने की योजना बना रहे है और वह पांच नए क्लबों और 10 रोटरेक्ट क्लबों को जोड़ने का प्रस्ताव भी रखते है। अभी तक तीन रोटरी क्लब प्राधिकृत किये जा चुके है। 40 नई महिला सदस्यों को शामिल करना भी उनके एजेंडे में है।

वह स्कूली बच्चों के लिए पांच वर्षों से मंडल में आयोजित की जा रही एक विशाल संगीत प्रतियोगिता का आयोजन करने को लेकर उत्साहित है, यह वर्ष अधिक खास है क्योंकि इस बार विदेश से भी प्रतिभागियों ने पंजीकरण करवाया है।

उनकी पत्नी सुनीता भी इसी क्लब की सदस्य है।

कचरा प्रबंधन पर उनका ध्यान

शिरीष केसवान,

प्रबंधन - सार्वजनिक क्षेत्र, रोटरी क्लब क्विलोन, रोइ मंडल 3211

शिरीष केसवान 2018 में आई बाढ़ से प्रभावित लोगों को पुनर्वासित करने को लेकर चिंतित है जिसने केरल के विभिन्न क्षेत्रों को तबाह कर दिया। ''हम अभी भी उन लोगों के लिए घरों का निर्माण कर रहे है जो बाढ़ में अपने घरों को खो चुके है,'' वह कहते है।

वह मंडल को कचरा मुक्त करना चाहते है और उन्होंने बड़ी संख्या में RCCयों को शामिल करके क्षेत्र के 200 नगरपालिका वार्डों को अपनाकर कचरे को प्रबंधित करने के लिए क्लबों को प्रोत्साहित किया। WinS कार्यक्रम के अंतर्गत शौचालयों का निर्माण करने पर भी उनका ध्यान है।

सदस्यता में 40 प्रतिशत की वृद्धि करने के साथ ही केसवान की रोटरेक्ट और इंटरेक्ट क्लबों की संख्या को बढ़ाने की योजना है। मंडल में केवल दो रोटरेक्ट क्लब है।

उनका लक्ष्य संस्थान के लिए 10 मिलियन डॉलर इकट्ठा करने का है।

वह 1996 से एक रोटेरियन है और संगठन के आभारी है कि उसने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उन्हें बहुत सारे दोस्त दिए है।

चित्रः के विश्वनाथन; एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

On the racks

Nail in the pillow: Collection of Twisted Tales
Author : **Mohan Menon**
Publisher : **Notion Press**
Pages : **200; ₹299**

Shock and surprise are the riveting guns of this short story collection. While the sun is shining and the birds are singing, you are abducted and plunged into a journey through the shadowy, quirky side of human nature. Complacency goes out of the window as you are swept along helplessly.

Mohan Menon's slim volume of short stories is a page-turner and comes with a caution 'Do not Read After Dark'. All the 25 stories are relatable in terms of the scene and context in which they are set and have an unexpected twist in the end. Covered succinctly in 198 pages, these tales will leave you in a state of heightened surprise and uneasiness. Written in a simple style, the book is eminently readable.

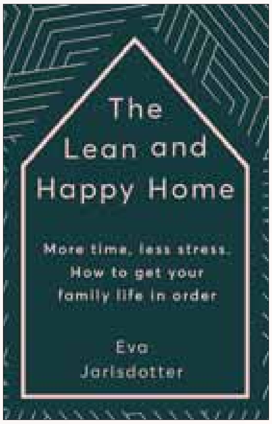

The Lean and Happy Home
Author : **Eva Jarlsdotter**
Publisher : **Yellow Kite**
Pages : **128; ₹399**

In seven simple steps this book will help you remove waste: wasted money, energy and resources give you the gift of time. The book lists a set of principles embraced by the most creative and dynamic organisations around the world, and for the first time, Swedish social entrepreneur Eva Jarlsdotter applies them to family life.

Embracing the Japanese 'stream' technique, the author shows you how to systematically create and maintain order. From *kaizen* (continuous improvement) to *kanban* (visual planning), these principles will bring harmony and a sense of flow to your home. No more time wasted searching for your keys, important paperwork or your internet banking password; no more throwing away food past its shelf life or arguing about the mess; no more feeling on the backfoot all the time. This transformative book will also empower children to take responsibility for their belongings and follow their schedules, thus lessening the burden on parents.

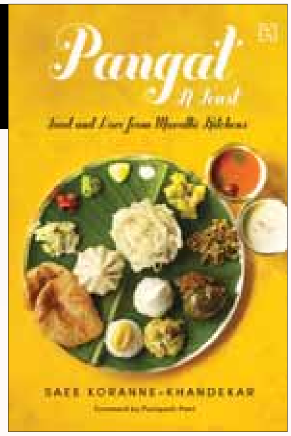

Pangat, a Feast: Food and Lore from Marathi Kitchen
Author : **Saee Koranne-Khandekar**
Publisher : **Hachette India**
Pages : **360; ₹599**

Bringing together over 200 traditional recipes, this enriching book introduces food enthusiasts to special masalas, cooking techniques and elaborate meal spreads using a range of produce. Its delightful stories and anecdotes vividly detail the characteristic food traits of the several communities that inhabit the region.

From the deeply-spiced Kolhapuri mutton *sukka* to the tamarind-based *thecha*, from a never-fail formula for frying fish to the wholesome *chakolya* 'pasta' and variants of *karanji*, the recipes in this book will at once enhance your culinary skills and palate.

In this delectable compendium of recipes and stories, culinary researcher Saee Koranne-Khandekar debunks the myths surrounding the foods of Maharashtra and reveals the versatility and sheer variety of its food traditions.

Endorsed by noted food writer Kunal Vijayakar and celebrated chef Ranveer Brar, the book is a treasure trove on the traditional recipes of the region.

Compiled by Kiran Zehra
Designed by Krishnapratheesh S

अच्छा महसूस करें, खुद को मजबूत महसूस करें

भरत और शैलन सावूर

कल, मैंने आपको सुनाई देना शुरु होने की सही उम्र के बारे में बताया। आप अपने सेलफोन से भी इसे सुन सकते हैं। इसपर टैप करें। एक लहराती हुई आवाज सुनाई देती आती है। आवाज सुनाई देना बंद होने के बाद आप फिर से इसपर टैप करें। और इससे आपकी सुनने की उम्र बढ़ जायेगी। मेरी कह सकते हैं: 52 वर्ष है। लेकिन, वास्तव में मैं 65 वर्ष का हूं, इससे मेरे चेहरे पर एक बड़ी सी मुस्कान आ गई है। मैं मूर्ख हो सकता हूं, लेकिन मैं बिक चुका हूं।

यह कहा जाता है कि पैसे से खुशी नहीं खरीदी जा सकती, लेकिन ऐप्स आपको अच्छा महसूस करने में मदद कर सकते हैं। इसलिए आप कई सारी कार्यशालाएं, माइंडफुलनेस आदि कर सकते हैं। लोग काफी तनाव में हैं, कहीं खो से गए हैं, दुखी हैं, इसलिए वो अपने पिछली लाइफ के बारे में सोचते हुए, अपने अवरुद्ध रास्तों को खोलने के लिए एक दिन के मेडिटेशन, मन बदलने के कामों के लिए अच्छे पैसे देने को तैयार हैं.....जो अक्सर, उनकी खुशी को बढ़ा या उस नाखुशी को कम कर देती है, जिसमें वो वापस आ गए हैं।

और मैं वाकई में काफी शुक्रगुजार हूं कि इतनी सारी तकनीकों के साथ-साथ पारंपरिक मनोविज्ञान तथा दवाओं का भी विकास हुआ है। इसके अलावा, मुझे हमेशा ऐसा लगता था कि मेरे मेंटर रेवरेंड नॉर्मल विंसेंट पिल सकारात्मक सोच के एकमात्र टीचर थे और अब मैं मनोवैज्ञानिक डॉ मार्टिन सेलिगमैन के बारे में सुनकर प्रसन्न हूं, जिन्होंने 19 साल पहले दुनिया को सकारात्मक मनोविज्ञान से परिचित कराया था। अच्छा डॉक्टर खुशी को मानता है और खुशी पर अध्ययन अपने आप में एक क्षेत्र है और इसे मनोविज्ञान से नहीं जोड़ा जाना चाहिए। खुशी, सेहत, संतोष से संबंधित है, यहां तक कि समृद्धि की भावना से भी। दिन प्रति दिन के आधार पर जीवन जीने की सहजता होनी चाहिए, हां! खुद में ऑल-इज-वेल।

जबकि मनोविज्ञान पिल्स तथा अनुभूति को फिर से स्थापित करने से संबंधित है और आगे सकारात्मक मनोविज्ञान का विजन व्यापक है। यह अतीत का अपनाने, भविष्य के बारे में आशावादी होने और वर्तमान को प्रोत्साहित करता है। डॉ सेलिगमैन इसे मंत्र देते हैं: ''यह शिक्षा, कार्य, विवाह के बारे में है - यह खेल भी है। मैं मनोवैज्ञानिकों को इन सभी क्षेत्रों में अपनी क्षमता बढ़ाने में मदद करने के काम करते देखना चाहता हूं।''

मजबूत महसूस करें। मज़बूत होने से ज़्यादा, मज़बूत होना वह है जो हमें मिलता है। खुद को मजबुत करना कोई बड़ी बात नहीं है, यह काफी छोटी बातें हैं - अपने अहंकार को कम करने की क्षमता, जब सब कुछ नहीं अच्छा जा रहा है और अहंकारी न बनना है, जब सब कुछ अच्छा जा रहा हो, खुलापन, धैर्य, ग्रहणशीलता बने रहना। अपने दृष्टिकोण को बचाने की आवश्यकता है, आपके अनुभव आपको समझदार बनाता है...हां, कभी-कभी, दुनिया आपके दोषों और कमजोरियों को उजागर करती है। यदि आपके आसपास ऐसे लोग हैं जो आपको उत्साहित करते हैं, उदाहरण के लिए, परिवार और ऐसे मित्र जो आपको प्रोत्साहित करते हैं और अक्सर आपकी ताकत, आपके सकारात्मक, गुणों को बताते हैं तो ये आपको कभी नीचे नहीं आने देती हैं। और यदि आपमें हर दिन खुद के साथ अच्छी होने वाली सभी चीजों की सराहना करने की आदत हैं, तो आप अपनी खुशी के भाव (एचक्यू) को और अधिक बढ़ा सकते हैं।

खुद के अंदर खुशी के भाव (एचक्यू) को बढ़ाना हैं, तो आपको अपने दिमाग से व्यर्थ की बातों को हटाना होगा। इसी से जुड़ी एक बहुत ही प्यारी सी कहानी है: ''एक मास्टर ने बच्चों को दो बक्से दिए, और कहा, अपनी सारी उम्मीदों को काले बॉक्स में रखो। और अपनी सारी खुशियों को सोने की बॉक्स में रखो।'' बच्चों ने मास्टर के निर्देश का पालन किया। दिलचस्प बात यह है कि उन्होंने सोने के बॉक्स भारी थे, जबकि काले बॉक्स हल्के। वह इसका कारण जानने के लिए उत्सुक हो गए और उन्होंने काले बॉक्स को खोला तो देखा की उसमें नीचे एक छेद है जिससे उनकी सारी उम्मीदें बाहर निकल गई थीं। बच्चों ने मास्टर से पूछा। तो मास्टर ने कहा, ''मेरे बच्चों, सोना यानि गोल्ड आपको आपके पास जो है उसके प्रति खुश होने में सक्षम बनाता है, जबकि काला बॉक्स आपको जो आपके पास नहीं है उसे जाने देने में सक्षम बनाता है।''

उम्मीदों के जाल में फंसना। यहाँ एक और अद्भुत कहानी है: हमारी अपेक्षाएं या उम्मीदें हमें असहायता और निराशा की ओर ले जाती हैं। हमारे विचार और रचनात्मकता उम्मीदों के जाल में फंस जाते हैं। कुछ करने में हमारी खुशी और संतुष्टि हमारी उम्मीदों के आगे फीकी पड़ जाती है। यही कारण है कि बुद्धिमान मास्टर ने बच्चों को अपने दुखों को काले बॉक्स में डालने के लिए नहीं कहा, उसने विशेष रुप में अपनी उम्मीदों को काले बॉक्स में रखने के लिए कहा। ''मेरे बुद्धिमान पिता ने मुझे सिखाया था, जब आप अपना कुछ ध्यान काम पर और कुछ ध्यान इससे मिलने वाले इनाम रखते हैं, जिसे पाने की आपको उम्मीद हैं, तो आपका काम खराब हो जाता है। और जब आप अपना पूरा ध्यान काम पर रखते हैं, तो आप उत्कृष्टता हासिल करते हैं। यह एक ऐसी सीख है जिसपर मैंने कभी ध्यान नहीं दिया।''

यह लेख दिन-प्रति-दिन अपने आप को खुशी रखने के बारे में है। 10 के पैमाने पर, कभी-कभी, यह 7 हो सकता है, कभी-कभी 2...भी हो सकता है। आपको हर बार 10 का स्कोर ही नहीं हासिल करना है। कई बार, आप इतने खुश नहीं हो सकते, लेकिन शांति से बिताया हुआ दिन अच्छा होता है। सीखने से आपकी परिपक्वता बढ़ती है। जब आप समझते हैं कि दुनिया कैसे काम करता है, तो आपको जिसके बाद एक तरह की खुशी और शांति मिलती है, जो आसानी से नहीं जाती है।

इसका तरीका यह है: चलते रहें, काम करते रहें, एक ऐसा जीवन बनाते रहें जो बाहरी रूप से अच्छा लगता हो, लेकिन ऐसा जीवन बनाने की कभी भी उपेक्षा न करें, जिसमें आंतरिक रुप से अच्छा महसूस होता हो। छोटी चीजें करें जो दिन-प्रतिदिन के जीवन को आसान बनाती हैं। इस तरह से बातें करें कि आपकी सांस आपको कभी आपका साथ नहीं छोड़ना चाहें, इतनी आसान स्ट्राइड के साथ चलें कि आपके शरीर के सभी अंग अपनी ताकत और लचीलेपन के साथ फिर से जीवित हो जाएं, इतने सरल और अनुकूल तरीके से रहें कि शांति और सकारात्मक आप पर हावी हो जाएं। इस भावना में, मैं आपको जीवन जीने के कुछ अद्भुत तरीके बता रहा हूं:

- दुख, शोक, असंतोष आदि को खत्म करना। एक खुबसूरत अहसास है - जैसे अंधेरे से उजाले में आना।
- अनावश्यक अनुष्ठान और दिनचर्या से दूर रहें जो आपको खुशी नहीं देती हैं। मन में स्पष्टता का होना आशीर्वाद के जैसे है।
- यदि आपके मन में किसी चीज़ को लेकर तीन दिनों तक संदेह है, तो आप उस काम को न करें। जब आप सही रास्ते पर होते हैं, तो कोई भी बाधा आपको पीछे नहीं ला सकती है।
- किसी दूसरे को दोष देने के बजाय, अपने दम पर निर्णय लें। जिसमें आप रुचि रखते हैं, उसमें महारत हासिल करें। सीखना जीवन जीने की शानदार व आकर्षक अवस्था है।
- जब कोई व्यक्ति चुप हो और रेडियो को बंद कर दे, तो अपने विचारों को अतिरंजित विचारों की ओर मोड़ें और चारों ओर की शांति का आनंद प्राप्त करें। ये ही एकमात्र रास्ता है।
- जीवन में हर चीज़ को चुनौती के रूप में न देखें, बल्कि इसे रचनात्मक होने के समय के रुप में देखे। रचनात्मकता मस्तिष्क के लिए दवा के जैसे है, आंतरिक प्रकाश जिसमें मन शांति से रह सकता है।
- ऐसे भोजन करें जो आपके शरीर के अनुकूल हों। भोजन को अपने स्वास्थ्य के लिए हानिकारक न होने दें। ऐसा भोजन जो आपके मस्तिष्क को थ्रोब या स्पिन बनाता है, आपकी त्वचा पर दाने निकालता हो, जो आपको भारी, अम्लीय, बेचैन करता हो, उसस बचें। मध्यम मात्रा में भोजन करके अपने अंदरूनी पोषण और प्रकाश को बनाए रखें।
- जब आपको बहुत कुछ करना हो, तो इसके प्रतिरोध के तनाव से बचने और क्रोध व आक्रोश की भावनाओं को दूर करने के लिए ऐसे दिन को अपनी खुद की आंतरिक आवाज को भूल जाते हैं। उन सभी कार्यों को देखें जो आपके द्वारा या आपके के लिए दूसरों के द्वारा चुने गए हैं।
- धीरज से निर्णय करो। इससे उत्सुकता समाप्त होती है।
- दूसरों को पहचानना अपने वाहन को दूसरे के स्लॉट में पार्क करने जैसा है। दूसरे के बारे में सभी निर्णय गलत हैं। अंततः जिसे दूर किया जाता है वह है मन और स्वास्थ्य की आपकी शांति।
- बहस न करें। तर्क एक युद्ध के जैसे है। युद्ध का मैदान मन है। अगर कोई आपको गोली मारता है, तो आप वापस गोली मारें। गोली न चलाएं। अपने घमंड, अहंकार, को खत्म करें और अपने उच्च, मधुर, भद्र प्रवृत्ति को बाहर आने दें। और इससे आपमें कल्याण के ताज़े अनुभव जीवित हो जाएंगे।

सकारात्मक मनोविज्ञान तैरने का एक अद्भुत, समृद्ध मानसिक पूल है। यह हमें वेलनेस से वेल-बिंग की ओर ले जाता है। और डॉ मार्टिन सेलिगमैन कहते हैं, ''मेरा मानना है कि यह हमारी क्षमता के भीतर है कि वर्ष 2051 तक, 51 प्रतिशत मानव आबादी फल-फूल रही होगी। मुझे विश्वास है कि यह इससे भी जल्द होगा।''

लेखक फिटनेस फॉर लाइफ, *और* बी सिम्पली स्पिरिचुअल - यू आर नैचुरली डिवाइन *के लेखक है और फिटनेस फॉर लाइफ कार्यक्रम के शिक्षक है।*

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

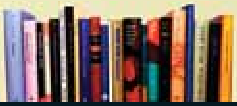

शब्दों की दुनिया

पढ़ने के बारे में क्या पसंद न करें?

संध्या राव

इस वृत्तान्त पर थोड़ी आक्रामकता बुरी चीज़ नहीं होगी

ओह, मैं नहीं पढ़ता।'' मानो, यह समय की बर्बादी हो। मानो, ऐसा करना चलन में हो। मानो, भाई, ऐसा कौन करता है! पिछले कुछ वर्षों में जिस आवृत्ति और रूखेपन के साथ मैंने यह बयान सुना उसके कारण मेरी इच्छा भी खत्म हो जानी चाहिए थी लेकिन डूबती हुई भावनाओं के ऊपर छा जाने वाले अधिभावी आशावाद ने मुझे बचा लिया। फिर भी, यह हास्यास्पद नहीं है जब एक के बाद एक युवा, किताबों यहाँ तक कि कॉलेज/स्कूली किताब-आधारित असाइन्मंट पर ऐसे शब्दों का इस्तेमाल करके चर्चा करते है जो पाठ्यपुस्तकों या, कभी-कभार, प्रेरक सामग्रियों के अलावा कुछ और पढ़ने का सुझाव नहीं देती है। मेरा यकीन मानिए, बाएँ या दायें हुक को ना मारने में बहुत इच्छाशक्ति लगती है! यदि मैं एक मुक्केबाज होती, तो मैं समझती। लेकिन जब मैं उन लोगों के बारे में सोचती हूँ जो इन अद्भुत किताबों को नहीं पढ़ रहे है जो बेसब्री से पढ़े जाने के लिए उन्हें पुकार रही है, तो मैं अत्यधिक परेशान हो जाती हूँ।

इसलिए, हाँ, मेरे जैसा एक कठोर आशावादी भी निराश हो जाता है। हालांकि, अच्छी चीज़ यह है कि यदि आपको पढ़ना पसंद है, तो आप ज्यादा देर तक निराश नहीं रह सकते क्योंकि आप जानते है कि हमेशा कोई न कोई अच्छी किताब प्रतीक्षा में होती है। सवाल केवल उसे ढूँढने का होता है।

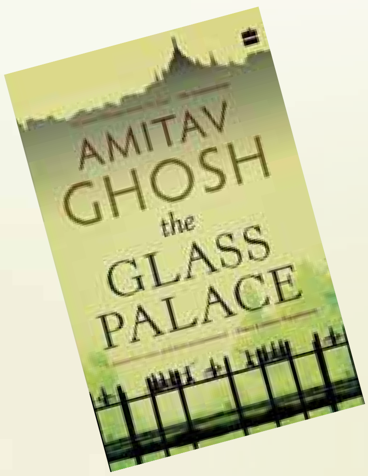

कुछ लोग पूछते है: आपको कैसे पता चलता है कि आप कोई विशेष किताब को पढ़ना चाहती है? जवाब आसान है: मुझे नहीं पता होता है। यह मेरे अंदर का जासूस है जो सुरागों को खोजता है। सबसे प्रत्यक्ष किताब की समीक्षाएं होती है। आपको उनसे बहुत कुछ पता चलता है, जिसमें समीक्षक की व्यक्तिगत प्राथमिकताएँ भी होती है क्योंकि आपके द्वारा किए जाने वाले चुनाव अत्यधिक व्यक्तिपरक होते है। बेशक, ऐसी भी किताबे होती है जो स्वयं की अनुशंसा करती है क्योंकि वे बस कमाल होती है और व्यक्तिपरकता उन पर छलावरण नहीं डाल पाती है। लेकिन निश्चित रूप से, किताब समीक्षाएं एक संकेत होती है।

फिर प्रकाशकों द्वारा प्रचार सामग्रियाँ लाई जाती है। हालांकि, सचेत रहिए। इसका मकसद किताबों की बिक्री करना होता है इसलिए बेवकूफ़ मत बनिए। इस प्रकार की सामग्रियाँ केवल विषयवस्तुओं का निष्कर्ष समझने या कभी-कभार एक छोटा निचोड़ जानने के लिए अच्छी होती है। पढ़कर खुद फैसला करें। कुछ ऐसे मामलें भी सामने आए है जहाँ उत्पाद से बेहतर प्रचार था, मतलब किताब के अंदर की सामाग्री से कई बेहतर किताब का विपणन था। अब, प्रतिशोध के डर से मैं कोई नाम नहीं लूँगी, लेकिन ऐसी किताबों की संख्या में, निश्चित रूप से भारत में, तेजी से वृद्धि हुई है, ऐसा हम कह सकते है? और ऐसा बिक्री के आंकड़ों में परिलक्षित होते देखा गया है। फिर भी, जो बात मायने रखती है वह यह है कि इससे किसी भी दर पर किताबों को पढ़वाया - या खरीदवाया जा सकता है!

कभी-कभी, स्वयं किताब से संकेत मिलते है। पहले कुछ पन्नों पर नज़र डालिए। क्या लेखन में आपकी रुचि हो रही है? कभी-कभी पहली पंक्ति में ही रुचि हो सकती है। लेकिन ऐसा करने के लिए, आपको किताब के अंदर देखना होगा। फिर, मैं जानती हूँ कि वे कहते है कि किसी भी किताब का निर्णय उसके आवरण से ना करें लेकिन किसी-किसी मामले में, इससे भी संकेत मिल सकते है। हालांकी, हमेशा नहीं क्योंकि आपने कहा था: किसी भी किताब का निर्णय हमेशा उसके आवरण से ना करें!

यदि आपको पढ़ना पसंद है, तो आप ज्यादा देर तक निराश नहीं रह सकते क्योंकि आप जानते है कि हमेशा कोई न कोई अच्छी किताब प्रतीक्षा में होती है। सवाल केवल उसे ढूँढने का होता है।

किताबों की दुकानों में हमेशा किताबें आगे की ओर प्रदर्शित की जाती है। ऐसा ङ्गअनुशंसाओंफ के माध्यम से होता है, हालांकि बहुत बार वे इस बात को प्रतिबिम्बित करते है कि प्रकाशक या वितरक कितनी अच्छी तरह उनकी किताबों की बिक्री बढ़ा पाये है। कुछ किताबों की दुकानों में मैंने अलमारियों में ङ्गस्टाफ की सिफ़ारिशेंफ नाम से किताबों को प्रदर्शित होते देखा, अर्थात, ये वे किताबें होती है जो दुकान में काम करने वालों के द्वारा पसंद की गई। पुस्तकालय भी ऐसा करते है, लेकिन अधिकतर वह निष्पक्ष रूप से ऐसा करते है और अक्सर विषयवस्तु पर आधारित होते है। उदाहरण के लिए, नवम्बर को बच्चों की किताबों को प्रदर्शित करने के लिए समर्पित किया जा सकता है क्योंकि 14 नवम्बर को बाल दिवस होता है; या अक्टूबर में महात्मा गांधी की या उन पर लिखी किताबों को स्पष्ट कारणों से प्रदर्शित किया जा सकता है; दिसम्बर क्रिसमस की भावनाओं के बारे में हो सकता है या, वर्तमान प्रसंग में, अयोध्या, बाबरी मस्जिद और राम लला पर। चाहे जो भी कारण या कार्यप्रणाली हो (हम जासूस का किरदार निभा रहे है, याद है?), अंतिम परिणाम समान होता है: पढ़ने के लिए अच्छी किताबें खोजना।

हालांकि, सबसे अच्छी कार्यप्रणाली कही हुई बातें होती है। कोई, अक्सर एक मित्र, आपको उसके द्वारा पढ़ी किताब के बारे में बताती है और आपको भी पढ़ने का सुझाव देती है। या, यदि वह आपकी सच्ची सहेली है, तो वह किताब को आपके ऊपर थोपती है। ऐसा एक बार हुआ। मैंने अमिताव घोष की *द ग्लास पैलेस* को एक प्यारी स्कूल की सहेली पर थोपा जो सामान्य रूप से पढ़ने का शौकीन नहीं था। शुरुआत में वह बहुत उत्साहित था लेकिन जैसे-जैसे दिन हफ्तों में बदल गए, दबाव भी बढ़ने लगा। पढ़ने में रुचि विकसित करने की चाह से, उसे ऐसा लगने लगा कि उसके पास पढ़ने के अलावा कोई और विकल्प नहीं है और फिर यह एक कठोर अपराध-बोध में परिवर्तित हो गया। आखिरकार, जब हफ्ते महीनों में बदल गए, तो हर बार जब हम मिलते वह किताब एक कठिन परिस्थिति खड़ी कर देती और जब, आखिरकार उसने उसे वापस किया, तो उसने एक भी पन्ना नहीं पलटा था! ''मुझे डर था कि कहीं मैं इसे खो ना दू!'' उसका बहाना था।

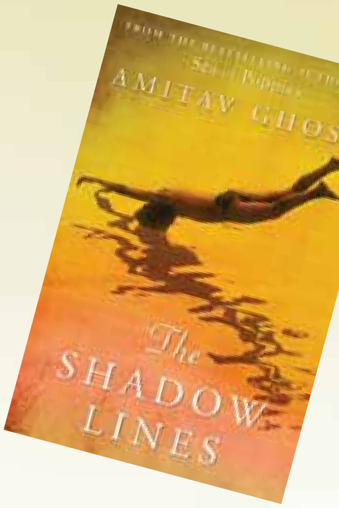

अमिताव घोष

संयोग से, घोष मेरे पसंदीदा लेखकों में से एक है और इसलिए मेरा मानना है कि यदि आपने अब तक उनकी किताबें नहीं पढ़ी है, तो आप उनकी किताबें लाएँगे और उसे पढ़ेंगे!

मैं पढ़ती हूँ क्योंकि मुझे पढ़ना पसंद है। यह एक व्यक्तिगत पसंद है। किस आधार पर मुझे दूसरों से इसकी अनुशंसा करना चाहिए? इस मामले में मदद के लिए मैंने इंटरनेट का सहारा लिया। बहुत सी साइट है जो पढ़ने की महत्ता के बारे में बात करती है। मैंने ऐसी ही एक साइट को खोला। उसमें पढ़ने के निम्न लाभों को सूचीबद्ध किया गया था: इससे दिमाग तेज़ होता है; इससे आपका शब्दकोश बढ़ता है; इससे आपका तनाव कम होता है; इससे आपका अवसाद कम होता है; इससे आपकी स्मरणशक्ति एवं ध्यान बेहतर होता है; इससे आपकी कल्पनाशक्ति बढ़ती है; इससे नींद अच्छी आती है; इससे मनोरंजन होता है और शांति आती है; इससे आपका दिन आनंदमय हो जाता है। सभी दमदार कारण है।

एक अन्य वेबसाइट पर यह सामने आया: यह आपको स्वयं को खोजने में मदद करता है; यह वर्षों के अनुभवों से मूल्यवान अनुभव प्रदान करता है; यह आपके भावनात्मक स्वास्थ्य में सुधार करता है; यह प्रेरणा का एक बड़ा स्रोत है; यह आपके ज्ञान को बढ़ाकर आपको होशियार बनाता है; यह आपकी रचनात्मकता को बढ़ाता है; यह आपको अधिक सहानुभूतिपूर्ण बनाता है; यह समीक्षात्मक एवं विश्लेषणात्मक सोच को बढ़ता है; यह खुशी और प्रसन्नता देता है; यह आपको विनम्र बनाता है; यह भाषा एवं संचार कौशलों में सुधार करता है; यह मस्तिष्क के कार्यों में सुधार करता है; आप कभी अकेले नहीं होंगे; यह आपको एक व्यक्ति के रूप में विकसित करता है।

जाने से पहले, मेरे दिल के करीब वाले एक अन्य विषय, तस्वीरों, पर लिखित *द शैडो लाइंस* से अमिताव घोष का अनुभव कीजिये: उस समय की तस्वीरों की गुणवत्ता असाधारण रूप से अलग है। इसका उम्र या रंग, या कागज की अनुभूति से कोई लेना-देना नहीं है। ...आधुनिक पारिवारिक तस्वीरों में कैमरा एक मित्र की तरह घूमने का अभिनय करते हुये उन पलों में शटर को क्लिक करता है जब उसके समक्ष मौजूद व्यक्ति स्वयं को अव्यवस्थित करके ऐसे हाव-भाव बनाते है जो उन्हें अनौपचारिक लगते है। लेकिन उस समय की तस्वीरों में, कैमरा अभी भी एक सार्वजनिक एवं अनजानी निगाह है, जिसका सामना करने पर लोग या तो विद्रोही उल्लास वाली विचित्र मुद्राओं द्वारा घुसपैठ को चुनौती देते थे, या शक्ल बनाने, और कंधे सीधे करने लगते थे, हमेशा औपचारिक तरीक़े से ही नहीं, बल्कि आम तौर पर कठोरता का संकेत देने वाली मुद्रा में जिससे एक सामान्य चेहरे का पता चलता था।

हम में से बहुत से लोगों के पास उस समय की तस्वीर है और हम में से बहुत से लोग निरंतर तस्वीरें लेते है: हम पूरी तरह समझते है कि उनका क्या मतलब है। मैं बस इतना ही कहना चाहती हूँ।

स्तंभकार बच्चों की लेखिका और वरिष्ठ पत्रकार हैं।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

मंडल गति

रोटरी क्लब सेलम मेट्रोपोलिस - रो ई मंडल 2982

पेरियापुडुर गाँव के एक सरकारी स्कूल में एक ईएनटी शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 120 से अधिक व्यक्तियों की बीमारियों के लिए जांच की गई। इसके पश्चात सलेम स्थित रोटरी हाल में 80 से अधिक लाभार्थियों को श्रवण सहायक वितरित किए गए। शिविर का आयोजन स्थानीय RCCयों की मदद से किया गया था।

रोटरी क्लब मदुरई नॉर्थ - रो ई मंडल 3000

एक तीन-दिवसीय रोटरेकट RYLA का नेतृत्व कार्यक्रम के अध्यक्ष टी. मलइयारासन द्वारा किया गया। लगभग 60 प्रतिभागियों ने पॉण्डिचेरी स्थित पेगासस इंस्टीट्यूट ऑफ एक्सलेन्स में संवादात्मक सत्रों में हिस्सा लिया। पीडीजी आर षण्मुगसुंदरम ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया, जबकि डीजी ज़मीर पाशा ने समापन भाषण दिया।

रोटरी क्लब नागपुर विज़न - रो ई मंडल 3030

एक माइक्रो क्रेडिट कार्यक्रम के अंतर्गत, डोंगरगाँव की 15 महिलाओं को प्रत्येक को ₹20,000 दिये गए। क्लब इस परियोजना को निरामय बहू-उद्देशीय सेवा संस्था के माध्यम से चला रहा है ताकि महिलाओं की उनका स्वयं का व्यापार शुरू करने में मदद की जा सकें।

रोटरी क्लब गुड़गाँव कोस्मोपोलिटन - रो ई मंडल 3011

क्लब ने नाथुपुर गाँव के एक प्राथमिक स्कूल में एक पुस्तकालय की स्थापना की। इस सुविधा से लगभग 135 बच्चे लाभान्वित होंगे।

विधियाँ

रोटरी क्लब इंदौर मेघदूत - रो ई मंडल 3040

नेपानिया के एक सरकारी स्कूल में एक दंत शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 350 बच्चों की मौखिक स्वच्छता के लिए जांच की गई। सरकारी डेंटल कॉलेज के डॉक्टरों की एक पैनल ने बच्चों को अपने दांतों को साफ एवं स्वस्थ रखने की सलाह दी।

रोटरी क्लब कर्नल मिडटाउन - रो ई मंडल 3080

किशोरियों के लिए प्रताप पब्लिक स्कूल, जुंदला, में स्व-स्वच्छता पर बातचीत आयोजित की गई। इस स्कूल में एक नए इंटरैक्ट क्लब की स्थापना की गई। एमडीडी बाल भवन अनाथ आश्रम में विद्यार्थियों को बैठने के लिए क्लब ने चटाइयाँ प्रदान की।

रोटरी क्लब इलाहाबाद रॉयल्स - रो ई मंडल 3120

अपनी सार्वजनिक छवि परियोजना के अंतर्गत डीजी संजय अग्रवाल ने रोटरी चक्र को प्रदर्शित करने वाले एक रोटरी चौक एवं शहर के हवाईअड्डे पर एक ग्रीन हब का उद्घाटन किया। रोटरी के निशान वाली इन स्थापनाओं से समुदाय में क्लब की छवि में बढ़ोत्तरी होगी।

रोटरी क्लब पनवेल एलीट - रो ई मंडल 3131

क्लब ने रॉबिन हुड आर्मी, एक स्थानीय एनजीओ, के सहयोग से भोजन दान पहल का आयोजन किया। पेन तालुक के 30 आदिवासी गांवों में लगभग 10,000 किलो राशन, मच्छर कॉइल एवं एलईडी बल्ब वितरित किए गए। इस परियोजना से 1,000 से अधिक आदिवासी परिवार लाभान्वित हुये।

रोटरी क्लब सुनाम - रो ई मंडल 3090

परियोजना प्रमुख वनीत गर्ग के नेतृत्व में एक बोन डैन्सिटि जांच शिविर का आयोजन प्राइम हॉस्पिटल में किया गया जिसमें रोटेरियन डॉक्टर रोमित गुप्ता और उनके दल ने 120 से अधिक मरीजों की जांच की।

रोटरी क्लब मुंबई ग्रीनसिटि - रो ई मंडल 3141

पालगढ़ ज़िले के सांबा गाँव में आदिवासी बच्चों के स्कूल को गोद लिया गया। रोटेरियनों ने विद्यार्थियों को परिसर में पौधे रौपने, पानी बचाने एवं प्लास्टिक उत्पादों के इस्तेमाल से बचने के लिए प्रेरित किया। कपड़े की थैलियाँ भी वितरित की गई।

रोटरी क्लब डोंबिवली इंडस्ट्रियल एरिया - रो ई मंडल 3142

एक सद्भावना संकेत के रूप में तिलक नगर पोस्ट ऑफिस के 25 डाकियों को छातें वितरित किए गए। परियोजना का प्रायोजन मंडल सचिव प्रकाश शाह ने किया था।

रोटरी क्लब गुंतकल - रो ई मंडल 3160

पौधारोपण करने हेतु रोटेरियन थिम्माराजू की जागीर पर बीज गेंद बनाने के शिविर को आयोजित करने के लिए क्लब ने रोटेरेक्टरों एवं इनर व्हील के सदस्यों के साथ हाथ मिलाया। इस कार्यक्रम में अनेक रोटेरियनों ने भाग लिया।

रोटरी क्लब इचलकरंजी - रो ई मंडल 3170

क्षेत्र में स्वच्छता बनाए रखने के लिए समर्पित प्रयास करने हेतु क्लब ने सफाईकर्मियों को सम्मानित किया। पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाले खतरनाक इलेक्ट्रानिक कचरे को एकत्रित करने के लिए ई-वेस्ट डिब्बे दान किए गए।

रोटरी क्लब कोवइपुदुर - रो ई मंडल 3201

क्लब ने स्कूल को एक बड़ी जल भंडारण टंकी एवं अलमारी दान की। विद्यार्थी प्रसन्न थे क्योंकि अब उन्हें स्कूल में पानी की कमी का सामना नहीं करना पड़ेगा।

विधियाँ

रोटरी क्लब तेलीचेरी - रो ई मंडल 3202

इलाके में, अधिकांश तौर पर स्कूलों में, एक पौधारोपण परियोजना चलाई गई। एक हरित पर्यावरण को प्रोत्साहित करने के लिए क्लब ने लोगों एवं स्कूल प्राधिकारियों को 500 पौधे भी प्रदान किए।

रोटरी क्लब महिंद्रा इंडस्ट्रियल सिटि - रो ई मंडल 3231

चेन्नई के निकट महाबलीपुरम में सिंगल-यूस प्लास्टिक के विरुद्ध एक जागरूकता मुहिम चलाई गई। प्लास्टिक प्रदूषण के खतरनाक प्रभावों को समझाने के लिए रोटेरियनों ने लोगों को पर्चे बांटे।

रोटरी क्लब मर्थांदम - रो ई मंडल 3212

भारत में रोटरी के शताब्दी वर्ष के उत्सव के रूप में, क्लब ने अनपकम, एक वृद्धाश्रम जो मानसिक रूप से पीड़ित लोगों को भी आश्रय देता है, में खाना, दवाइयाँ एवं बेडशीट जैसी आवश्यक सामग्रियाँ प्रदान की। वहाँ पर एक चिकित्सीय शिविर का आयोजन किया गया।

रोटरी क्लब मद्रास चेन्ना पटना - रो ई मंडल 3232

वाना वानी मैट्रिक हायर सेकंडरी स्कूल और हिन्दू सीनियर सेकंडरी स्कूल के इंटरैक्ट क्लबों ने *दो पोलियो बूंद परियोजना* के लिए ₹25,000 से अधिक की राशि एकत्रित की। एक संयुक्त बैठक में राशि को क्लब अध्यक्ष सूर्यभास्कर को सौंपा गया।

रोटरी क्लब गुवाहाटी वेस्ट - रो ई मंडल 3240

नॉर्थ लखीमपुर ज़िले के गांवों में बाढ़ पीड़ितों के लिए क्लब ने 200 आश्रय किटों को प्रायोजित किया। आश्रय किटों की कीमत ₹12 लाख है और हर एक किट में चार लोगों के परिवार के पुनर्वास हेतु लगभग 50 सामग्रियाँ है।

वी मुत्तुकुमारण द्वारा संकलित
एल गुणाशेकरण द्वारा रुपांकन

Rotary News Subscription Remittances

You can pay the
Rotary News / Rotary Samachar
subscription online

Our Bank details:

Bank	:	HDFC Bank SB Account
Branch	:	Montieth Road Egmore, Chennai
A/c Name	:	Rotary News Trust
A/c No.	:	50100213133460
IFSC Code	:	HDFC0003820

E mail us following details:

Name of Club

President/Secretary's name

Amount/Date of transfer/UTR Number

For physical payment by cheque or cash in bank, write **Club Name only** without prefixing "Rotary club of". Eg. Rotary Club of Delhi Central should be written: Delhi Central.

Rotary at a glance

Rotarians	:	1,221,067
Clubs	:	36,082
Districts	:	525
Rotaractors	:	165,900
Clubs	:	10,015
Interactors	:	245,755
Clubs	:	10,685
RCC	:	10,770

As on Nov 15, 2019

Please note Interact clubs that have not reported Interact Adviser in the past two Rotary years, are placed in "Suspended" status effective Oct 1, 2019. They will have until Dec 31, 2019 to report an Interact club adviser online or the Interact club will be automatically "Terminated".

Membership Summary

As on Nov 1, 2019

RI District	Rotary Clubs	No of Rotarians	Women Rotarians	Rotaract Clubs	Interact Clubs	RCC
2981	113	4,878	246	43	0	220
2982	68	3,204	168	76	41	55
3000	134	5,789	570	181	118	210
3011	87	3,695	897	47	53	25
3012	95	3,850	983	51	45	57
3020	72	4,250	239	53	14	350
3030	92	4,974	661	94	80	261
3040	94	2,132	239	32	40	143
3053	66	2,854	493	15	35	96
3054	127	5,952	1,018	76	88	475
3060	99	4,383	610	53	39	141
3070	106	3,187	445	42	16	58
3080	85	3,538	345	82	49	111
3090	81	2,026	57	36	0	122
3100	79	1,982	119	12	0	146
3110	132	4,175	437	27	0	105
3120	81	3,428	462	38	14	53
3131	137	5,535	1,217	100	102	97
3132	96	3,751	400	32	48	157
3141	104	5,766	1,365	108	78	88
3142	99	3,442	699	77	44	64
3150	97	3,773	390	55	70	116
3160	77	2,676	187	27	0	83
3170	129	5,764	700	66	120	165
3181	86	3,815	387	59	141	115
3182	84	3,230	240	36	36	97
3190	126	5,100	721	129	76	58
3201	145	5,580	429	98	0	50
3202	130	5,182	301	72	0	47
3211	141	4,596	336	8	0	131
3212	100	4,139	331	96	55	145
3231	91	4,091	507	49	56	355
3232	127	5,292	906	123	103	86
3240	89	3,135	418	48	355	190
3250	103	3,975	699	59	26	181
3261	73	2,694	414	14	14	43
3262	95	3,455	429	42	27	77
3291	150	3,799	782	84	41	614
India Total	**3,890**	**153,087**	**19,847**	**2,340**	**2,024**	**5,587**
3220	73	2,089	294	79	73	73
3271	92	1,483	256	60	5	18
3272	146	1,903	326	51	7	43
3281	212	5,896	911	220	27	193
3282	167	5,294	682	134	24	44
3292	122	4,843	741	126	48	115
S Asia Total	**4,702**	**174,595**	**23,057**	**3,010**	**2,208**	**6,073**

Source: RI South Asia Office

उफ्फ... वो देर रात की फ्लाइट्स!

टीसीए श्रीनिवास राघवन

सुपर पावर (महाशक्ति) के मायने क्या हैं? अनुभवी व्यक्तियों ने इसकी अलग अलग परिभाषाएँ बताई हैं - धन, भुजबल, संस्कृति आदि - लेकिन मेरा मापदण्ड सिर्फ एक है: आपका विमान भारत से किस समय पर अंतर्राष्ट्रीय उड़ान भरता है और इस के अनुसार भारत एक साधारण शक्ति भी नहीं है, सुपर पावर बनना तो बहुत दूर की बात है। और मैं मजाक नहीं कर रहा, इसकी वजह है कि भारतीय हवाई अड्डों से निकलने वाली 94 प्रतिशत अंतरराष्ट्रीय उड़ानें रात को 10 से 3 बजे के बीच उड़ान भरती हैं। इसका मतलब है कि ज्यादातर सफर आप रात में करते हैं, मद्धम रोशनी वाले केबिन में जहां हर व्यक्ति अपना खाना पचा रहा है - जब सुबह होती है तो आपको गंदे शौचालयों का उपयोग करना पड़ता है और भगवान न करे कि आपका पेट गड़बड़ हो या इससे भी बदतर, खतरनाक दस्त।

फ्लाइट में बैठने के तुरंत बाद, रात 2 बजे, वे आपको भोजन के साथ शराब और पेय परोसते हैं क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय नागरिक उड्डयन के नियम यही हैं। रात के लगभग 3 बजे है और आप देर तक चली सुरक्षा जांच और चेक-इन में हुई गहरी थकान के बाद जब आपकी झपकी लगती ही है, तभी केबिन क्रू के थके मांदे सदस्य बनावटी मुस्कुराहट के साथ और लगभग भर्राई आवाज़ में आपसे पूछते हैं: खाने पीने के लिए कुछ लेंगे, सर? नींद आने में आधा घंटा और लग जाता है और बड़ा कष्टदायी निकलता है ये समय। अंतिम तिरस्कार अभी बाकी है। मदिरा के साथ एक खराब रोल परोसने के सिर्फ तीन घंटे बाद, सुबह 6 बजे वे पूरा नाश्ता परोस देते हैं। आप खुद से कहते हैं, अगर धरती पर कहीं नरक है तो यही होना चाहिए। कोई फर्क नहीं पड़ता इससे कि आप प्लेन में कहाँ बैठे हैं - इकॉनमी प्रीमियम इकॉनमी या बिज़नेस क्लास, यहाँ तक कि प्रथम श्रेणी, सब एक जैसी हैं। अगर आपको आधी रात और सुबह 8 बजे के बीच उड़ान भरनी है, तो सिर्फ तकलीफ ही तकलीफ है।

> **अन्य अंतरराष्ट्रीय उड़ानें रात को 10 से 3 बजे के बीच उड़ान भरती हैं। इसका मतलब है कि ज्यादातर सफर आप रात में करते हैं, मद्धम रोशनी वाले केबिन में जहां हर व्यक्ति अपना खाना पचा रहा है - जब सुबह होती है तो आपको गंदे शौचालयों का उपयोग करना पड़ता है।**

मुझे दिन की फ्लाइट पसंद हैं क्योंकि उस वक़्त केबिन में अंधेरा नहीं होता, शौचालय साफ होते हैं, हवाई जहाज के उतरने से पहले आप अपने पेय, अपने भोजन और फिल्मो का आनंद उठा सकते हैं और एक झपकी भी ले सकते हैं। चाय, कॉफी के साथ स्नैक्स परोसते हैं वे और सभी बहुत ही शिष्ट है। जब आप उतरते हैं, सूरज आसमान पर होता है, उदय नहीं हो रहा होता और अपने होटल या घर में गर्म स्नान लेने के बाद एक पेय और स्वादिष्ट भोजन के बाद बढ़िया नींद लेने के लिए आप समय पर पहुँचते जाते हैं। पश्चिमी देशों में अंतरराष्ट्रीय उड़ान पर ये लुत्फ़, लगभग सभी यात्री उठाते हैं।

ऐसा नहीं है कि अन्य देशों में रात की उड़ानें नहीं होतीं। अमेरिका में इन्हें इन्हें रेड आई फ्लाइट कहते हैं उस वक़्त आप आंखों में जलन के साथ उतरते हैं जो नींद की कमी की वजह से लाल हो रही हैं। और जानते हैं, ये सभी उड़ानें भारत में आती प्रतीत होती हैं, दुनिया के करीब करीब हर कोने से। आप रात में लंदन जाते हैं और फिर वहां से रात में ही भारत लौटते हैं। जैसा मैंने कहा था, पृथ्वी पर नरक।

सच तो यह है कि अन्य देश इस बारे में बहुत सख्त हैं। वे उन उड़ानों की संख्या कम रखते हैं जिससे उनके नागरिकों को असुविधा होती हो। लेकिन जब हमारी बारी आती है तो हम कमजोर पड़ जाते हैं। हम इस बात पर जोर नहीं देते हैं कि हमारे हवाई अड्डे रात 11 बजे से सुबह 5 बजे के बीच बंद रहेंगे। कोई टेक-ऑफ, नहीं कोई लैंडिंग नहीं। मानें या ना मानें। हम नहीं कह पाते कि हमारी एयरलाइनें उस समय उड़ेंगी जो हमारे नागरिकों के लिए सुविधाजनक हैं, आपके नहीं। जब तक ऐसा नहीं होता, कम से कम मेरी नज़र में तो भारत एक साधारण शक्ति बना रहेगा।

कई साल पहले, मेरी मुलाकात हमारे नागरिक उड्डयन मंत्री से हुई थी, मैंने पूछा कि ऐसा क्यों है। क्या भारतीय लोग दुनिया में तीसरे दर्जे के नागरिक हैं? उनके जवाब ने मुझे चौंका दिया। उन्होंने कहा, इसे यूं देखो। रात में सफर कर के आप होटल की एक रात का खर्चा बचाते हैं और पहुँचने के बाद काम करने के लिए आपको लगभग पूरा दिन मिलता है। मैंने उनसे पूछा कि क्या भारत को लगता है कि बाकी दुनिया बेवकूफ है जिसने ये नहीं सोचा होगा। उनका जवाब था, हां, हम भारतीय लोग बहुत चालाक हैं।

और अगर आपने इससे भी बेहूदा बात सुनी हो तो कृपया मुझे ज़रूर बताएं।■

Rotary
RI Dist. 3202
Rotary International Dist 3202,
ROTARY TIRUPUR ELITE
Proudly Presents...
SUCCESSFUL 3rd YEAR
Rtn. MD. A.KARTHIKEYAN
District Governor, RI Dist 3202
மாபெரும் கார் கண்காட்சி
மற்றும் விற்பனை மேளா
Participation by World's Leading Car & Motorcycle Companies
6, 7 & 8 December 2019
TIRUPUR Rotary AUTO
EXPO 2019
Entrance Free
10.00 am to 7.00 pm
Your dream vechiles under one roof
Venue INDIA KNIT FAIR Convention Centre, (Near TEA Public School) TIRUPUR.
SKODA
Mercedes-Benz
KIA MOTORS
FORD
BMW
MINI COOPER
VOLKSWAGEN
AUDI
VOLVO
JEEP
TOYOTA
HYUNDAI
MG MOTORS
JAGUAR
NISSAN
DATSUN
MAHINDRA
RENAULT
TATA
BENELLI BIKE
HARLEY DAVIDSON
ROYAL ENFIELD
HONDA
Rtn. MD. P.R.KUMAR, Chairman
Tirupur Rotary Auto Expo - 2019
Advisor - Rotary Tirupur Elite
Cell : 98422 99744
Cars from Rs.2 Lakhs to 5 Crore
Motorcycles from Rs.50,000 to 50 Lakhs
Further Details Cell : 95436 73446, 92444 43388
Rtn. PHF. N.VASUDEVAN
President, Rotary Tirupur Elite

इंदौर का स्ट्रीट फुड़...

... जोन इन्स्टिटय़ूट शहर में यह व्यंजन अपक इंतज़ार कर रहा है।

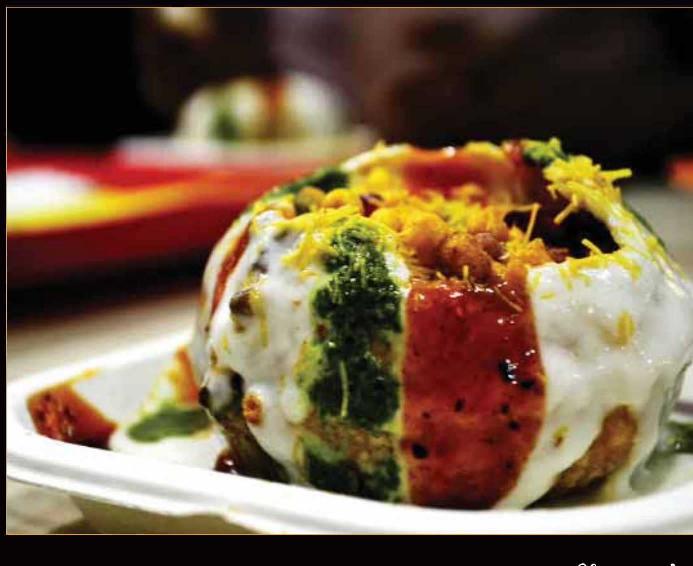

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

Regn. No. TN/CCN/359/2018-2020 | Total number of pages in this monthly issue, including cover, 84. Price: ₹35
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP-421/2018-2020
Registered with Registrar of News Papers for India TNHIN/2001/05271 Rotary Samachar Published on 1st of every month

Because **Caring** begins with a **Car**.

A Mercedes-Benz E-Class Saloon to be precise

Rtn. Ravishankar Dakoju with DG Rtn. Dr. Sameer Hariani (RID 3190) beside the car to be auctioned.

Dear Rotarians, last year, in front of a packed audience of Rotarians, I announced that I would be auctioning my 2017 Model Mercedes-Benz E-Class Saloon to help fund philanthropic projects. Today, it is time to fulfil that very promise and I need your help. I request you to be a part of this historic auction that will help us save our environment and also build good schools for rural students.

Buying a luxury car is always a life-changing decision, but this time it will also help change hundreds of lives forever.

"The auction is part of my ₹100-Crore pledge & the proceeds will go directly to TRF."

- Rtn. Ravishankar Dakoju

Please visit: **www.dakojufoundation.org** to be a part of this historic auction.

Mercedes-Benz E 220d | Mint condition | Driven less than 4000 Kms | Fully serviced

http://wismay.digital